"वे नाम" सुरति धारा

वे नाम सुरति धारा/सहज सत्त मार्ग के अनुयाई इन 10 वचनों के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

दस वचन

1. सदा सच बोलना।
2. सतगुरू से प्रामर्श।
3. एक नारी, सदा ब्रह्मचारी।
4. नेकी की कमाई से निर्वाह।
5. जुए व चोरी से कोसों दूर।
6. शराब व नशों से सख़्त परहेज़।
7. मांस से सख़्त परहेज़।
8. जगत में सभी से प्रेम व मैत्री भाव (वासुदेव कुटुम्बकम्)।
9. मन माया से परे निज (हंसा रुप) को जानें।
10. ईच्छा रहित भक्ति।

(आत्मन कोष)

प्रथम संस्करण मार्च 2020

आरक्षित सभी अधिकारों की प्रतियां

आश्रम :– 15–गार्डन एवेन्यू, तालाब तिल्लो,
जम्मू जे एण्ड के (भारत)–180002
मोबाईल : 9419284038, यू टयूब लिंक : vainaam surtidhara

गीता अमृत सार

गीता अमृत सार

वे नाम सुरती धारा

(आत्मन कोष)

श्री कृष्ण कहें :– समस्त त्रिलोकी रचियता मैं, सब जगत भौग पदार्थ मैं ।
अण्ड मंड संपूर्ण ब्रह्मण्ड मैं, ओईम निरंकार सुत्र मैं।
त्रिलोकी की सब भक्तियां मैं, सब का फल दाता मैं।
जो भी मुझे है भजता, चार मुक्तियों का प्रदाता मैं।।

'वे नाम' कहें :– "वे नाम" सब्द की दात को पा कर, पाओ मोक्ष पद निजधाम।
अमृत दात यही कहावे प्यारो, जिसमें सांचा निजघर निजधाम।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब हंसों का सच्चा घर निजधाम।।

आरती
साहिब सतगुरू जी की

जय सतगुरू देवा – दाता जय सतगुरू देवा
सब कुछ तुम पर अर्पण – 2, करूं हर पल सेवा –साहिबा –

1 जो ध्यावे सुख पावे , दुख मिटे तन का – साहिबा –
वचन सुनत तम नासे – 2, सब संशय मन का – साहिबा –
2 मात पिता तुम मेरे, शरण पड़ी तुमरे – साहिबा –
तुम बिन और ना दूजा – 2, आस करूं मैं जिसकी – साहिबा –
3 गुरू चरणामृत निर्मल, सब दोषक हारी – साहिबा –
शब्द सुनत भ्रम नासे – 2, सब बंधन टारे – साहिबा –
4 तन मन धन सब अर्पण, गुरू चरणन कीजे – साहिबा –
सतगुरू देव परम पद – 2, मौक्ष गति लीजे – साहिबा –
5 काम क्रौध मद्य लौभ, तृष्णा अति भारी – साहिबा –
सुरत सब्द को देकर, सार सब्द को देकर, संत सब संहारें – साहिबा –
6 ध्यानी योगी ज्ञानी, सब हरि गुण गावें – साहिबा –
सब का सार बता कर – 2, संत मार्ग लावें – साहिबा –
7 मन माया निज घेरा, जीव बहे सारे – साहिबा –
सुरत सब्द को देकर, सुरति जहाज चढ़ा कर, संत पल में तारें – साहिबा –
8 संत बिन दान ना होवे, साहिब ब्ख़ान करें – साहिबा –
संत बिन ज्ञान ना होवे, संत बिन मौक्ष ना होवे, यत्न बहुत कीने – साहिबा –
9 दीन बन्धु दुख हर्ता, तुम रक्षक मेरे – साहिबा –
विषय विकार मिटाओ – 2, तुम दर्शक मेरे – साहिबा –
10 सुरत कमल के दाता, तुम रक्षक मेरे – साहिबा –
मौक्ष पद दिलाओ – 2 , तुम कर्ता मेरे – साहिबा –

जय सतगुरू देवा – दाता जय सतगुरू देवा
सब कुछ तुम पर अर्पण – 2, करूं हर पल सेवा – साहिबा –

आरती
निरालम्भ राम जी की

जय राम जय राम जय राम जी – जय राम जय राम जय राम जी – २
निरालम्भ राम निरालम्भ राम निरालम्भ राम जी–जय राम जय राम जय राम जी

1 चौथे लोक के प्यारे राम, न्यारे राम जी – 2 जय राम
2 सांचा नाम सांचा नाम, तेरो नाम जी – 2 जय राम
3 तुझ में राम मुझ में राम, सब में राम जी – 2 जय राम
4 निरालम्भ राम निरालम्भ राम निरालम्भ राम जी – 2 जय राम
5 तेरो नाम तेरो नाम, प्यारा नाम जी – 2 जय राम
6 उपर राम नीचे राम, निरालम्भ राम जी – 2 जय राम
7 मेरे राम तेरे राम, सब के राम जी – 2 जय राम
8 निरालम्भ राम निरालम्भ राम निरालम्भ राम जी – 2 जय राम
9 गाओ राम सुनो राम, चौथे राम जी – 2 जय राम
10 मन कारण सुरति नहीं जगती, बिन सुरति नहीं राम – 2 जय राम
11 निजधाम के प्यारे राम, न्यारे राम जी – 2 जय राम
12 निरालम्भ राम निरालम्भ राम निरालम्भ राम जी – 2 जय राम
13 सुरति निरति स्वांस में डालो, संग में सार नाम – 2 जय राम
14 सतगुरू सूं भेद को जानो, स्वांस स्वांस में नाम – 2 जय राम
15 बिन सुरति आत्म नहीं जगती, बिन आत्म नहीं राम – 2 जय राम
16 आठों पहर सुरति में रहना, संग में प्यारा नाम – 2 जय राम

जय राम जय राम जय राम जी – जय राम जय राम जय राम जी – 2
निरालम्भ राम निरालम्भ राम निरालम्भ राम जी–जय राम जय राम जय राम जी

–0–

सतगुरू सतनाम सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी

सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी की सुरति से ओत प्रोत ग्रंथों की सूची

क्र:	ग्रंथों के नाम	प्रकाशन वर्ष
1	भजन संग्रह–1 (प्रथम पुस्तक)	2013
2	भजन संग्रह–2 अमर सुरति से भरे भजन	2015
3	भजन संग्रह–3 सतगुरू जी की अमर सुरति से भरे भजन	2017
4	भजन संग्रह–4 साधकों द्वारा श्रद्धा सुमन	2017
5	अमर साग़र	2017
6	परमहंस सुरति महिमां	2019
7	**Secret Of Permament Liberation (English)** मोक्ष का भेद ग्रंथ (अंग्रेज़ी में)	2020
8	आनंद साग़र – वे नाम सुरति धारा	2022
9	गीता अमृत सार – वे नाम सुरति धारा	2022
10	अल्प मुक्ति से पूर्ण मोक्ष	2022
11	वे नाम सुरति धारा	2022

अग़ामी प्रकाषित होने वाले ग्रंथ

1 अनुराग़ साग़र
2 साहिब सतगुरू जी के अनुभव और सफरनामें
3 साहिब सतगुरू जी के कर कमलों द्वारा लिखित ग्रंथ

काल भगवन के खेल से बचो, बचावनहार एको सतगुरू 'वे नाम'

विषय सूची

क्र:	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	अमृतवाणी	1
2	अध्याय 1	3
3	अध्याय 2	4
4	अध्याय 3	6
5	अध्याय 4	7
6	अध्याय 5	12
7	अध्याय 6	15
8	अध्याय 7	21
9	अध्याय 8	25
10	अध्याय 9	44
11	अध्याय 10	54
12	अध्याय 11	70
13	अध्याय 12	82
14	प्रेम संदेश	92
15	अध्याय 13	105
16	अध्याय 14	111
17	अध्याय 15	117
18	अध्याय 16	121
19	अध्याय 17	122
20	अध्याय 18	133
21	हंसां देस की महिमां	140
22	त्रिसवा	152

अमृत सार

हे जगत की प्यारी जीव आत्माओं,

आप तन और मन नहीं हो, आप सब तो मूलतः साहिब सत्तपुरूष जी के अंश हंसा ही हो । हे हंसो, हम एक ही मूल से आए हैं और उसी मूल में जा समाना ही (मौक्ष) मानव जीवन का मात्र एक लक्षय है । **यह महान ग्रंथ सब हंसों के लिए, सब हंसों के द्वारा सुरति सूं लिखा गया और सब हंसों को सुरति से ही समर्पित किया गया है।** मूलतः यह ग्रन्थ किसी एक संप्रदाए, मत्त व धर्म का ना हो के सभी जीव आत्माओं के कल्याण हेतु समर्पित है । आज के इस आधुनिक युग में मानव समाज ने अत्यधिक भौतिक उन्नति तो कर ली, कहने को वह उन्नतशील मानव समाज ही का हिस्सा हो गया । परन्तु आज के समाज में मानव ने अपना संपूर्ण पतन ही कर डाला। भौतिकता की चकाचौंध में, 'मैं' के अहम में स्वार्थी बना मानव सब को संशय भरी दृष्टि् से देखता है। मां बाप और बच्चों के नातों में संशय, भाई बन्धु व मित्र सम्बधियों के नातों में संशय, यहां तक कि अपने जीवन साथी के साथ दिखावे का प्रेम, पर भीतर संशय ही संशय। इस संशय से भरी ज़िन्दगी में प्रेम प्रीत की भावना ही लुप्त हो गई।

यही स्वार्थ व संशय से भरा मानव समाज पूर्ण सत्तगुरू की शरण में आकर भी संशय और अहम को नहीं छोड़ता। अक्सर स्वार्थ सिद्धी करने में ही लगा रहता है तभी तो वह बारम्बार जन्म लेता है पर मौक्ष को नहीं पाता । कोई बिरला ही स्वार्थ रहित होकर संपूर्ण सत्तगुरू की शरण में आकर अपने मूल (मोक्ष) को पाता है। मानव की इस दुख भरी जन्म मरन की अवस्था से ना उभरने के कारण संपूर्ण संत्त समाज चिंतित व व्यथित और उनके उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहता है। जगतमें संशय और स्वार्थ ना छोड़ना ही मानव के कष्टकारी आवागमण का कारण बनता है।

—0—

भूमिका

''वे नाम परमहंस जी'' कह रहे हैं, जो दात मैं जग जीवों को दे रहा हूं, इसे सार सब्द के नाम से जाना जाता है । संतों ने इस दात को 'सार सब्द', अक्का सब्द, विदेह नाम व मूल नाम से भी सम्बोधित किया है। सत्तपुरूष जी ने दास के तीन बार निजधाम जाने के बाद पहला 'सार सब्द' सुरति से उत्पन्न व प्रदान किया । उनके दिए हुए सब्द से सर्वथा भिन्न है । दास की पहली निजधाम यात्रा के समय स्वंय सतपुरूष जी व चार महां संतों, साहिब कबीर जी, बाबा नानक जी, साहिब रवि दास जी और संत मीरां बाई जी ने मुझ आत्मिक शरीर 'हंसा' को अत्यंत ऊर्जा प्रदान की ।

निजधाम पहुंचने पर पहला संदेश जो सतपुरूष जी ने दिया कि किसी को भी जग में बुरा मत कहना । इस बीच में लगातार साहिब सतपुरूष जी से सुरति सूं गोष्टि्ठयां होती रहीं जिनमें वो सतपुरूष सत्ता का ज्ञान और जीव आत्मांओं को जगाने हेतु दास को प्रेरित करते रहे । दूसरे दिन प्रातः लगभग तीन बजे से कुछ पहले का समय था, सतपुरूष जी दास की कुटिया में प्रकट हुए और सुरति में ही पूछा कि क्या आप बुल्ले का कथन, ''रब दा कि पाना, ऐदरूं पुटना ते इधर लाना'' को समझते हो । मैनें बड़े श्रद्धा भाव युक्त हो के सुरति में कहा, बाहर की दौड़ छोड़ के अंदर की ओर जाना ही अपने प्रीयतम को पाना है। वह आनंदित मुद्रा में मन्द मन्द मुस्कान लिए हुए सतज्ञान समझाने उपरान्त अदृष्य हो गये।

तीसरे दिन तीन बजने को कुछ समय बाकी था, अभी बस मैं उठने ही वाला था, तभी सतपुरूष जी कुटिया में प्रकट हुए, एक अदभुत प्रकाशमयी आभायुक्त रोशनी से सारी कुटिया ज्योतिमय हो गई । सतपुरूष जी आलोकिक प्रकाशमयी आभायुक्त सुरति सूं 'सार सब्द' उच्चारण करते हुए अदृष्य हो गये, यह सारी घटना दास के लेटे लेटे जाग्रत अवस्था में ही घटी। उनके दर्शन उपरांत उसी पल में उठ बैठा, सुरति से इस 'सार सब्द' को ग्रहण किया। यह अदभुत और अनोखी अवर्णित घटना इस से पहले कभी नहीं घटी । ज्यादातर संतों के पास उनके सतगुरू का दिया हुआ ही सब्द होता है, सतपुरूष जी से सर्व प्रथम 'सार सब्द' साहिब कबीर जी को ही मिला था। इस दास को ही केवल दो बार 'सार सब्द' सीधे सतपुरूष जी से मिला ।

यह ग्रंथ सतपुरूष जी की देन है, उसी को ही कलमबद्ध किया गया है। सतपुरूष जी के द्वारा बार बार प्रेरित करने पर तथा उन्हीं के आदेश से दास जग जीवों को जगाने और सतपुरूष सत्ता की महिमां का बखान कर रहा है। ये ग्ददी भी शुरू करने का आदेश और प्रेरणा सतपुरूष जी ने ही प्रदान की ।

—0—

'वे नाम परमहंस जी' कहत हैं :–

1 लिखावनहार कोई और है,
वे नाम है दास–दीन।
सतपुरूष सूं अमृत जब बरसे,
लेखनी बने हदीम ।।

2 करन करावनहार सतपुरूष हैं,
दास सतपुरूष आगे अधीन ।
वे नाम को सब कुछ सौंप कर,
परमहंस की महिमां दीन ।।

3 हम सब हंसा अमरपुर वृक्ष सूं आए,
निरंझन जिनके ढाल ।
सब हंसा पात फूल उस वृक्ष के,
खुशबू देना भूल निज काम ।।

4 वे नाम आया सतलोक सूं,
हर एक को दे पुकार ।
आओ चलें सतलोक को,
वे नाम देत पुकार ।।

–0–

अनमोल रतन

जा को सार सब्द दात मिल जाई।
कागा पलट हंसा बन जाई ।।

वे नाम ने सतपुरूष सूं दात है पाई,
जाके बल आत्म हंसा बन जाई।
ये मूल नाम सार सब्द कहाई,
लिखा ना जाई पड़ा ना जाई।
अक्का नाम वह दात कहलाई,
जाके बल हंसा निजघर जाई।
ता से पूर्ण मोक्ष हंसा पा जाई,
जन्म मरन की कैद मिट जाई।
बहुरि हंसा गर्भ वासा ना पाई,
सब हंसा संग रास रचाई।
अमर लोक बिन धरती पानी वासा पाई,
हर पल साहिब के दर्शन पाई।
यत्न सूं कोई ये दात ना पाई,
बिन परमहँस कोई नांहि पाई ।

जा को सार सब्द दात मिल जाई।
कागा पलट हंसा बन जाई ।।

—0—

प्रस्तावना

✍ आध्यात्म की दुनियां, जब से सृष्टि् बनी है तभी से जिज्ञासु–जन इस दुनियां को जानने को उत्सुक हैं, वह दुनियां जिसे हम आध्यात्म या रूहानियत, जो सृष्टि् रचियता को जानने की जिज्ञासा, उस रचियता को मानने या ना मानने वाले दोनों के कोतूहल का विषय रही। इतनी ढेर सारी मान्यताएं, धर्म रहनुमाओं, अवतारों, पैग़म्बरों जिनका वर्णन अलग–अलग धर्म–ग्रन्थों, शास्त्रों, उपनिषदों में असंख्य गिनती में विद्ग्मान है, यह सारे आराध्य एक सीमा तक (निराकार–भगवान) की त्रिलोकि तक सीमित हैं । मगर हमारे संत सतगुरू 'श्री वे नाम जी' व अनेक संतों ने जिनमें संत कबीर साहिब जी, संत रविदास जी, संत दादू दयाल जी, संत पल्टु साहिब जी, संत दरिया साहिब जी, संत तुलसीदास हाथरस जी, संत ब्रह्मानंद जी, संत मीरांबाई जी और बाबा नानक जी आदि संतों ने उस परमपिता परमेश्वर को जिसे साहिब नाम से सम्बोधित किया, को इस निराकार की सीमा से उपर बताया है, जैसे कि सभी धर्मों के ग्रन्थ व पुस्तकें एकमत हैं कि ईश्वर एक है (गाड इज़ वन) और संतों अनुसार वो मालिक, ईश्वर, निराकार की सत्ता से अलग, मोक्ष दाता, साहिब, परमपुरूष या सत्तपुरूष नाम से सम्बोधित किए गये । निराकार की भक्ति करने तक स्वर्ग (कुछ काल तक मुक्ति) और फिर जीवन, जबकि साहिब भक्ति से पूर्ण मुक़्ति अर्थात मोक्ष (गर्भ से सदा सदा के लिए छुटकारा) मिलता है। सहज सतमार्ग में सतगुरू परमहँसों की महिमां अपरम्पार है, साधक सतगुरू कृपा द्वारा ही मन माया को तज कर परमहँस की अवस्था को प्राप्त होता है। इसी कारण साहिब ''श्री वे नाम परमहँस जी'' ने निज अनुभव द्वारा कलमबद्ध किये गये सभी भजनों और ग्रंथों को अपने सतगुरू परमहँस जी के चरणों में समर्पित किया है।

✍

संत 'वे नाम परमहँस जी' उन्हीं साहिब सतपुरूष जी की महिमां का गुणगान व प्रचार करते हैं। सतगुरू परमहँस जी ने आध्यात्मिक व रूहानी सफ़रनामों के अनुभवों को भजनों के रूप में अपने 'साहिब सत्तपुरूष महिमां' के प्रथम एवम द्वित्य भजन संस्करणों में कलम बद्ध तो किया ही था, परन्तु इसके बाद के अनेकों अनुभवों और साहिब सत्तपुरूष सत्ता की महिमां और दात का वर्णन जिससे कि रूहानियत के प्रति जागरूक व इच्छुक जिज्ञासु जन इसका भरपूर लाभ उठा कर मोक्ष को प्राप्त हो सकें, इसका पूरा सारांश उन्होंने अपने इस ''साहिब सत्तपुरूष महिमां'' के तृत्य भजन संस्करण में भी 'साहिब सतपुरूष जी' की सुरति द्वारा बड़ा अदभुद वर्णन किया है, ताकि सम्पूर्ण मानव समाज इन भजनों को पढ़ के साहिब महिमां को समझे, जाने और जन्म मरण के बंधन से मुक्त होके पूर्ण मौक्ष को प्राप्त हो सके।

—0—

चोथे राम (सतपुरूष जी)

1 प्यारो सतपुरूष, चोथे राम दा की पाना ।
सार नाम मन सूं पुटना, सुरति में लाना।।

2 सार नाम सूं बड़, तारे लाखों जीव।
आत्म सूं हंसा करे, ले चले भव सागर तीर।
सतगुरू पास दात है आती, तारे तीन लोक सूं जीव।
आवागमन चक्र छूटे, पल में पावे पीव।।

3 सार नाम (सब्द) स्वाति बूंद सूं, जानों अति महान।
सीप स्वाति बूंद को, मोती करती।
सार नाम सूं सतपुरूष, करें आप समान।
छिन पल में संग ले चले, निजघर निजधाम।।

4 साहिब (चौथे राम) व्यापक, हर वस्तु समाना।
बिन प्रेम, ना मिले प्रमाणा।
जब ही प्रेम, सुरति में जागे।
हर स्थान हर जीव में, इक वह ही लागे।।

—0—

संदेश

हम सब एक परम पुरूष, साहिब के लोक से आये।
हंसा रूप हमारा, सत्तलोक के वासी ।।
काल जाल के वश में पड़ कर, भूल गये अविनाषी।
यह है काल जाल का फंदा, काटे कोई परमहंस प्यारा।
सार सब्द की सुरति देकर, सब को करे न्यारा।
सुरति से हो आत्म चेतन, तभी कटे ये बंधन सारा।
बंधन छूटे निजघर जाये, बन जाये हंस प्यारा।
परमहंस की शरणी आकर, पावे परमपुरूष प्यारा।
यही है परम मुक्ति पद, सार नाम रस सारा।
पर कोई कोई ये पावे, सतगुरू का प्यारा।
तूं तो निजधाम सतलोक, बेग़मपुर का वासी था।
मूल सुरति रूप तेरा, हंसा रूप निराला।
काल जाल में आकर फंस गया, और फिरे बेहाल ।
तीन पाँच पच्चिस का पिँझरा, जहां पर पड़ा वश काल।
चल हंसा सत्तलोक, छोड़ ये संसारा।
मिल परमहंस सूं पाओ, हंसा रूप न्यारा।
जहां जाये फिर ना आये, मुक्त देस हमारा।
वो ही निजघर मुक्ति देस, बेग़म पुर प्यारा।
ग्याहरवें द्वार अष्ट्म चक्र से, जब हों प्राण निकासा।
सतगुरू संग परमपुरूष के लोक, पल में जा समाता।
बहुरि ना भवसागर आता, सुरति में जा समाता।
फिर वह मोती भौग लगाता, गर्भ कबहु ना आता।
हंस बन हंसों के संग संग, परमानंद पा जाता।
हम सब एक परम पुरूष, साहिब के लोक से आये।
हंसा रूप हमारा, सत्तलोक के हम वासी सारे ।।

संदेश वाहक

सतगुरू ''वे हूँ परमहँस जी''

सहज सतमार्ग

1 सहज सहज सब कहत हैं, सहज ना जाने कोए।
सहज से आत्म आई है, सहज कहावे सोए।
सहज सतगुरू जिन सहज से, सहज बीज पाया होए।
मूल सब्द से सहज बनो, सहज से मिलना होए।
सहज स्वांस है, सहज में बहता सोए।
सहज को पकड़ो, सहज बन जाओ।
सहज में सहज कहावे, साहिबन सोए।।

2 सगुण में अटके ज्ञानी, निर्गुण में भटके ध्यानी।
मध्य में सुन ली अनहद वाणी।
यह सब सतगुरू देत हैं, अमृत सब्द सुरति वाणी।।

3 सहज का बीज साहिब कबीर महान, स्वांसा सुरति 'वे नाम'।
दोनों मिल महां बीज हैं, साहिबन नाम मूल नाम।।

4 सतगुरू मिला तो सब मिला, खुल गया कुल्फ़ कवाड़ा।
पूर्ण सतगुरू कृपा सूं, पायो साहिबन प्यारा।।

5 जात धर्म से उपर है, सर्वोपरि सतगुरू नाम।
साहिबन का कैसा नाम, वे नाम ही साहिबन जान।।

6 सतगुरू बड़े साहिब से, प्यारे मत सोच विचार।
साहिब सिमरे सो वार है, सतगुरू सिमरे सो पार।।

—0—

आत्म बंधन (कुल्फ़ कवाड़ा)

1 औंकार का कुल्फ़ कवाड़ा, जीवों को लगता बड़ा प्यारा।
यह भेद पूर्ण संत जानत हैं, होते जो साहिबन प्यारे।
सुरति आत्म बंध पड़ी हृदय में, लाखों जन्म से प्यारो।
आत्म परमात्म नहीं प्यारो, यह तो सतपुरूष का अंश प्यारा।
सार सब्द है कुँझी कुल्फ़ की, पूर्ण संत इसका रखवारा।
लाखों जन्म का बंधन टूटे, जब खुले कुल्फ़ कवाड़ा।
मन औंकार काल निरंझन एको, जिस दियो कुल्फ़ कवाड़ा।
सत्तपुरूष का अंश है आत्म, जाने पूर्ण सतगुरू प्यारा।
जब कोई पाता दात पारस सुरति की, खुलता कुल्फ़ कवाड़ा।
यह कार्य पूर्ण सतगुरू करता, होता जो साहिबन प्यारा।
साधक को झुकना जब आता, पल में खुल जाता कुल्फ़ कवाड़ा।
सुरति निरति मूल सब्द से, आत्म से बने हंसा प्यारी।
आत्म के सब बंधन टूटे, साधक गुरू संग पावे निजघर प्यारा।
अब टूटा औंकार का कुल्फ़ कवाड़ा, जब मिला सतगुरू प्यारा।
ये भेद 'वे नाम जी' देते हैं, जिन पायो साहिबन प्यारा।।

2 आत्म अंश साहिबन की, ताला औंकार का जाने संत प्यारा।
ताला औंकार रूपी मन का, घट में बंध आत्म सुरति प्यारो।
सार सब्द कुँझी ताले की, खोले कोई पूर्ण संत प्यारा।
सुरति छूटे सब्द ईक करे निरति से, ऐसा सब्द हमारा।
आत्म से सब्द करे हंसा, 'वे नाम सब्द' साहिबन प्यारा।

—0—

'सुरति प्रवाह'

हे जीवात्म साथियो,

हम सब सतलोक से आये सतपुरूष जी के निज अंश हंसा हैं अर्थात सतपुरूष जी (परमपुरूष, साहिब जी) 'सत्त', सतलोक 'सत्त' और हम सब हंसा भी उन्हीं के अंश होने से हम सभी भी 'सत्त' का ही रूप हैं। चाहे कुछ काल के लिए ही सही परन्तु हम सब मोहनी माया में लिप्त हो कर निज रूप (हंसा अर्थात सत्त रूप) को भूलाऐ बैठे हैं। अंततः हम सब 'सत्त' से ही उपझे 'सत्त' रूप हैं और 'सत्त' में ही जा समाऐंगे। जग में विरोध किसका और कैसे कर सकते हैं, हम सब तो 'एक' (साहिब सतपुरूष जी, परमपुरूष जी, साहिब जी, परमपिता, निरलम्भ राम जी) से ही आये अर्थात मूलतः 'सत्त' से बिछड़े हम सब 'सत्त' ही हैं। माया में फंसा 'सत्त' रूप को भूला जीवात्मां साथी अगर कमज़ोर अवस्था (अहम व क्रौध वशिभूत) में है अर्थात माया ही में उलझा है उसका भी विरोध कैसा ? वो तो हम सब के स्नेह व प्रेम का पात्र है, घृणा का पात्र कैसे हो सकता है। घृणा और कटाक्ष से किसी को उद्विग्न तो किया जा सकता है परन्तु उसका रूपांतरण कदापि नहीं हो सकता। स्नेह और प्रेम से तो किसी का भी रूपांतरण किया जा सकता है। जगत के सभी प्राणी 'सत्त' रूप होने से स्नेह के पात्र हैं फिर चाहे वे किसी भी अवस्था के क्युं ना हों।

मूलतः सभी जीवात्म 'सत्त' रूप ही हैं। 'सत्त' सुरति प्रवाह के इस संग्रह में वर्णित भाव श्रृंखला **''वे हूं परमहँस जी''** द्वारा सुरति से सभी जीवात्मांओं को उनके निज रूप अर्थात 'सत्त' रूप को जानने हेतु ही प्रस्तुत की गई है। यह संग्रह इस ब्रहांण्ड के सभी जीवात्मांओं के सहयोग से, सभी के उत्थान के लिए, सभी के सामूहिक प्रयासों द्वारा सभी जीवात्मांओ के लिए ही लिखा गया है। इसके रचने का श्रेय किसी एक को ना जा के सभी जीवात्मांओं को जाता है। अर्थात ये रचना 'सत्त' (साहिब सतपुरूष जी की महिमां) से ओत–प्रोत, केवल 'सत्त' (हंसात्माओं) के लिए, 'सत्त' (माया लिप्त जीवात्मां) रूप को जानने हेतु 'सत्त' (परमहंस सुरति प्रवाह) द्वारा ही रची गई।

यह सारी त्रिलोकि अंड–मंड–ब्रह्मण्ड, शरीर, मन, भौतिक व भीतरी संसार निरंकार की ही माया है। चाहे कितना भी जीव माया के इस क्रूर परन्तु मोहनी जाल में उलझा हुआ क्युं ना हो, फिर भी चन्द बड़भागी बिरले जन इस माया जाल से मुक़्त होने की चाह में **सहज सत्तमार्ग के पूर्ण सतगुरू परमहँस जी की**

शरण में आ ही जाते हैं। अब जीवात्म स्वयं मन–माया की लार ना तजे तो इस में भगवान निरंकार (आद्य्शक्ति, देवी–देव व सभी ईष्ट्) का क्या दोष ? जैसे जीव भांति–भांति के भौज ग्रहण करता है तथा उस भौज से उत्पन्न ऊर्जा–अंश सारे शरीर को बलिष्ठ और क्रियाशील बनाते हैं, तथा अधिकांश शेष बचे व्यर्थ पदार्थों और द्रव्यों को शरीर त्याग कर देता है। ठीक वैसे ही **माया के विशालकाय रूप** में जीवात्मां भ्रमित ना हो के सत्त रूपी ऊर्जा की ओर चलने लगे तो यह सभी प्रकार की मन–माया को तजने के लिए सहज सत्त मार्ग के पूर्ण सतगुरू परमहँस जी की शरण में जीव पहुंच ही जाता है।

बिन सतगुरू कोई कुछ नांहि, सब कुछ कर्ता आप।
साधक के समर्पण से, केवल बनती बात।।

सहज मार्ग के प्रथम पूर्ण सतगुरू संत शिरोमणि कबीर साहिब जी की महिमां को संपूर्ण जगत समझ ही ना पाया। कबीर साहिब जी के अनमोल दोहों के अमृत–कौष से जो दोहे माया से ओत प्रोत थे उनको तो जगत ने भरपूर गुणगुनाया परन्तु सतलोक ज्ञान–सागर से भरे अमृतमयी दोहों को जगत समझ और जान ही ना पाया, तभी तो वह निज रूप तथा साहिब कबीर जी की महिमां को भी जान नहीं पाया।

शब्द ही सर्गुण शब्द ही निर्गुण, शब्द ही वेद ब्ख़ाना।
जो जन ईस भेद को जाने, उसका सतगुरू ठिकाना।।

सतगुरू महिमां जो जाने प्यारो, सच्चा साधक सोये।
जो जाने सो खो जाये प्यारो, सतगुरू पार लगाये।।

साहिब सतगुरू **''वे नाम परमहँस जी''** अपने सतगुरू जी की महिमां का गुणगान करते हुए यूं लिखते हैं :–

सतगुरू की महिमां क्या लिखूं, सब कर्ता वह आप।
वह ही सतपुरूष रूप पधारो, सब कुछ उनके हाथ।।

सतगुरू मिला तो सब मिला, खुले मोक्ष द्वार।
उनकी पूर्ण कृपा सूं, पायो साहिबन दीदार।।

साहिब सतगुरू ''वे हूँ परमहँस जी'' अनुसार ''मैं' तो सब का दास हूं मेरा नित्त काम संगत के लिए झाडू–पौचे करना, पानी भरना, संगत की धरियां बिछाना, उनकी चदद्रें धौना व उनकी आवभगत करना तथा सारी संगत की सेवा सबूरी करना है, मैं तो सतगुरू हूं ही नहीं, ये मानता हूं और सब की सेवा करना ही मेरा परम धर्म है, मैं ऐशों आराम करने के लिए इस धरा पर नहीं आया हूं, यहां तक की छोटी से छोटी चीज़ जैसे कि मैं तो फटे हुए पौचे भी सुई से सिल कर बारम्बार प्रयोग में लाता हूं तथा मेरे द्वारा प्रयोग में लाये हुऐ वे पौचे भी स्वच्छ व निर्मल रूप में दिखेंगे। मैं तो सब का दास ही हूं क्युंकि जगत के हर प्राणी में ''साहिब सतपुरूष जी'' का अंश सुरति रूप में विद्यमान है।

''वे हूँ परमहँस जी'' की वाणी अनुसार :–

संगत की सेवा ही मेरे साहिब सतपुरूष जी की सेवा है। साहिब सतपुरूष जी की सेवा के लिए मैनें अपना तन, मन व धन सभी कुछ त्यागा है तभी तो सतपुरूष जी दीन दयाल हुऐ और मुझ दास पर उन्होंने अति कृपा की कि मुझे अपने दास रूप में स्वीकारा। मेरे परमगुरू जी ने भी मुझ पे अति कृपा की है जिन्होंने अपनी शरण में मुझे केवल स्थान ही नहीं दिया अपितु अति कृपा करके सार–सब्द की अनमोल दात भी प्रदान की। उन्हीं के स्नेह व कृपा से बहुत अल्प अवधि में ही पूर्ण साहिब सतपुरूष जी को उन्हीं के रूप में पाया।

बलिहारी जाऊँ गुरू अपने, जिन रंग दिया अमर सुरति रंग।
मन माया तरंग मिटि, चढयो साहिबन सतगुरू सुरति रंग।।

साहिब जी आगे कहते हैं :– मैं सुबह शाम नित्त अपने सतगुरू सुरति में ही रहता हूं तथा साहिब सतपुरूष जी के दर्स सतगुरू रूप में पाता हूं। ''वे हूँ परमहँस जी'' हर पल परमगुरू जी का कौटि–कौटि धन्यवाद करते हुऐ कहते हैं कि ''दास'' आज जिस अवस्था में है वह सब मेरे सतगुरू के स्नेह और प्रेम से ही संभव हो पाया है।

सतगुरू बड़े साहिब से, मन में मत सोच विचार।
साहिब सिमरे सो वार है, सतगुरू सिमरे सो पार।।

साहिब सतगुरू दोनों खड़े, का कौ निवाऊँ शीष।
सतगुरू कृपा सूं साहिबन प्रकटे, ताके चरण धरूं मैं शीष।।

हे जगत जीव आत्माओं, बिन सहज सतमार्ग के पूर्ण सतगुरू परमहँस जी की शरणी जाये कोई भी जीव मोक्ष पथ की ओर अग्रसित हो ही नहीं सकता। हे जगत जीवो – सहज सतमार्ग के पूर्ण सतगुरू परमहँस जी की शरण में आओ, 'सत्त' रूपी पूर्ण सतगुरू परमहँस जी की कृपा से निज 'सत्त' रूप को जानो और 'सत्त' (हँस) हो जाओ और पूर्ण 'सत्त' (सतपुरूष, परमपुरूष, सतलोक, निजधाम, बेग़मपुर) में जा समाओ। बिन पूर्ण 'सत्त' हुऐ मन–माया रूपी आवागमण नहीं मिटता।

नोट :–

हे जगत की जिज्ञासु जीवात्मांओ, सतगुरू ''वे नाम परमहंस जी'' की वाणी अनुसार ये उपरोक्त भाव आप सभी जीवात्मांओं के लिए और आप सभी जीवात्मांओं के द्वारा ही आपके सामूहिक प्रयासों से ही कलमबद्ध किये गये हैं अर्थात उपरोक्त कलमबद्ध भाव व विचार आप सभी जिज्ञासुओं के ही हैं और आप के लिए ही कलमबद्ध किये गये हैं और इसी श्रृंखला में आप का कोई निजी विचार अथ्वा कोई भी त्रुटि संज्ञान में आये तो आप अपने सुझावों से हम्हें अनुग्रहित करें।

—0—

'सत्तपुरूष निवास' (मंदिर)

जगत में मुख और मन से मन रूपी देवी देवताओं की पूजा भक्तियां और अराधनाऐं की जाती हैं, इसलिये जगत में पूजा स्थलों को मन–प्रतीक मंदिर कहा जाता है। सहज सत्त भक्ति मार्ग में मन रूपी ईष्ट व मन से परे का भक्ति मार्ग है। इस मार्ग में जीवात्मां शुद्ध होकर हंसा रूप धार कर अपने मूल परमपिता परमात्मां ''साहिब सत्तपुरूष जी'' में जा समाता है अर्थात मोक्ष को पा जाता है।

'वे नाम सुरति धारा'

वर्तमान युग में साहिब सतपुरूष भक्ति धारा को संत शिरोमणि 'वे नाम' परमहंस जी निरंतर अपनी अमृतमयी वाणी प्रवचनों से प्रज्जवलित किये हुए हैं। उन्हीं के अमृतमयी प्रवचन श्रृंख़्ला को **'वे नाम' सुरति धारा** से जाना जाता है।

साहिबन कुट्िया एवं साहिबन हाल

सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी की वाणी अनुसार 'वे नाम' परमहंस जी की तपोस्थली रिहाड़ी आश्रम को आज से **साहिबन कुट्िया** नाम से प्रसिद्धी पायेगा। साहिबन कुट्िया रिहाड़ी में साहिब सतगुरू जी ने दोनों ''सार नाम व सुरत सब्द'' साहिबन सत्तपुरूष जी से सुरति सूं ग्रहण किया तथा इसी साहिबन कुट्िया में साहिब जी ने निजधाम के संतों के दर्शन पाये।

इसी प्रकार से तालाब तिल्लो सत्संग आश्रम को 'साहिबन हाल' के नाम से जाना जायेगा। इन दोनों आश्रम में ''साहिब सत्तपुरूष'' जी का सदा वास रहेगा। साहिब सतगुरू जी की वाणी अनुसार 'साहिबन कुट्िया और साहिबन हाल' अपने नाम से जगत में प्रसिद्धी पायेंगे। इन दोनों आश्रमों को **निजधाम के मंदिरों** के नाम से भी युगों–युगों तक जाना जायेगा।

––––––

'वे नाम सुरति धारा'

1 सहज सहज सब कहत हैं, सहज ना जाने कोए।
सहज से आत्म आई है, सहज कहावे सोए।
सहज सतगुरू जिन सहज से, सहज बीज पाया होए।
मूल सब्द से सहज बनो, सहज से मिलना होए।
सहज स्वांस है, सहज में बहता सोए।
सहज को पकड़ो, सहज बन जाओ।
सहज में सहज कहावे, साहिबन सोए।।

2 सगुण में अटके ज्ञानी, निर्गुण में भटके ध्यानी।
मध्य में सुन ली अनहद वाणी।
यह सब सतगुरू देत हैं, अमृत सब्द सुरति वाणी।।

3 सहज का बीज साहिब कबीर महान, स्वांसा सुरति 'वे नाम'।
दोनों मिल महां बीज हैं, साहिबन नाम मूल नाम।।

4 सतगुरू मिला तो सब मिला, खुल गया कुल्फ़ कवाड़ा।
पूर्ण सतगुरू कृपा सूं, पायो साहिबन प्यारा।।

5 जात धर्म से उपर है, सर्वोपरि सतगुरू नाम।
साहिबन का कैसा नाम, वे नाम ही साहिबन जान।।

6 सतगुरू बड़े साहिब से, प्यारे और ना कोई ठौर।
साहिब सिमरे सो वार है, सतगुरू सिमरे सो पार।।

—0—

ग्रंथ सारणी

नोट :–

साहिब सतगुरू ''वे नाम परमहंस जी'' के अग़ामी आने वाले ग्रंथ 'साहिब जी के सफरनामें', 'अल्प मुक्ति से पूर्ण मोक्ष की ओर', 'आनंद सागर', गीता अमृत सार, 'वे नाम सुरति धारा' व अनुराग़ साग़र प्रमुख हैं जो शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहे हैं और इसके साथ–साथ पाठकों व जिज्ञासुओं के लिए 'पराभक्ति पर आधारित', सहज सत मार्ग की भक्ति महिमां से भरपूर ग्रंथ 'अमर साग़र', 'परमहंस सुरति महिमां' और सुरति अमृत से ओत प्रोत 'साहिब सतगुरू परमहंस जी' द्वारा रचित भजनों की तीन पुस्तकें तथा अंग्रेज़ी भाषा में भी एक अदभुत ग्रंथ ''मोक्ष का भेद **(Secret of Permanent Liberation)**'' पूर्वतः ही प्रकाशित कीये जा चुके हैं। इनके अतिरिक्त अन्य और भी ग्रंथों की रचना अग़ामी काल में शीघ्र ही की जानी हैं।

कलयुग के इस वर्तमान काल में बिना सतगुरू साहिब ''वे नाम परमहंस जी'' की शरणी आये तथा उनसे ''वे नाम'' सब्द दात पाये बिन पूर्ण मोक्ष संभव ही नहीं। इसलिये हे हंसाथियो साहिब सतपुरूष जी की सत सुरति से ओत प्रोत ''वे नाम परमहंस जी'' द्वारा रचित इन नवीन ग्रंथों को श्रद्धा पूर्वक पढ़ें व श्रवण करें।

—0—

सतगुरू सतनाम

सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी सत्त साहिब

साहिब ''वे नाम परमहँस जी'' की अमृतवाणी में

गीता अमृत सार

दोहाँजली

'वे नाम दात (सब्द), जाको मिलि जाई,
कागा पलट, हंसा हो जाई।

1 गीता को प्राचीन काल से, उपनिषद की पदवी है मिली।
गीता उपनिषद का भी उपनिषद है, महिमां अपार है मिली।। साहिब जी

2 भगवन ने समस्त उपनिषद देई कर, जग को दिया उपहार।
धर्म ज्ञान का सभी जग को, दिया यह कोष उपहार।। साहिब जी

3 भगवन के इस कोष उपहार से, अर्जुन जाना भेद निरंकार।
भगवन के ज्ञान उपहार से, बीज सूं वृक्ष विस्तार।। साहिब जी

4 भगवन के धर्म ज्ञान सूं, जग जाना भक्ति भेद।
भाग्यशाली अर्जुन हुआ, जिस जाना कर्मन भेद।। साहिब जी

5 श्री कृष्ण भगवान साकार खुद, निराकार का ही रुप।
हर जीव में वे तो समायो है, हंसा संग मन माया रुप।। साहिब जी

6 स्थित प्रज्ञ शब्द का उच्चारण किया, आदर्श मूर्ती जान।
यह शब्द तीनों लौक में, अमृत बूंद समान।। साहिब जी

7 जग जानो माया की सपनी, कभी ना देती चैन ।
मात पित सभी खा जाती, सब खा कर भी ना लेती चैन।। साहिब जी

8 इस माया सबै जग भरमाया, किसी की मिटी ना भूख ।
इस जाल सूं मुक्ति दिलाने को, सतगुरु ही मिटाते भूख।। साहिब जी

9 कलयुग अति कठिन है प्यारो, द्वापर का भी तो देख ले हाल ।
कामी–क्रोधी मस्करा, सुने देखे ना ओरों का हाल।। साहिब जी

10 हम सब काल के वश पड़े, जैसे चाहे ले नचाये।
अर्जुन का हाल तुम देख लो, ना बचा किये लाख उपाये।। साहिब जी

11 नर हंसा होते मन वश पड़ा, अज्ञानी अर्जुन जाना ना भेद।
काल का रुप देख डरा, पंख वहीन हुआ सच्चा भेद।। साहिब जी

12 बिन सतगुरु ज्ञान उपझे ना, बिन बीज होता ना पेड़।
बिन ज्ञान बुद्धी हीन नर, कैसे पावें सत्त का भेद।। साहिब जी

13 दुविधा में अर्जुन आन पड़ा, दयावन्त मिला ना कोये।
अब काल बिन कोई संग नांहि, कोन उभारन आये।। साहिब जी

14 देखो परखो तब पूछो, फिर से लीजिये मोल।
जब तक सतगुरु ना मिले, इन बातों का नांहि मोल।। साहिब जी

15 निर्गुण–सर्गुण का भेद दिया, काल का रुप लिया धार।
दर्श करो निराकार का, सुन्न को लिया जब धार।। साहिब जी

(अध्याय एक)

16 अंदर ही तेरे संसार है, यही दृष्टि सृष्टि मांई।
बाहर तो कुछ है नांहि, कल्पना सूं जगत प्रकटाई।। साहिब जी

17 धर्म क्षेत्र रणभूमि पे, भये युद्ध के साज ।
दोनों ओर सेना खड़ी, कौरव पांडव संग साथ ।। साहिब जी

8 अर्जुन ये सब देख कर, मन में किया विचार ।
युद्ध में सभी अपने खड़े, गुरू मित्र और परिवार ।। साहिब जी

19 सुरति सूं गिराना नांहि, अवगुण मेरे देख ।
सत्त सब्द उपझाए, झूठ जाये पल छिन एक ।। साहिब जी

20 जग जानत नहीं सब्द परवाना, सार नाम का भेद ।
मूल सब्द में सत का वासा, काल का जीव न जाने भेद ।। साहिब जी

21 पाखंडी जीवन सूं पार न, केता करो उपाय ।
पाखंड जाके हृदय बसा, पार होने का नांहि उपाए ।। साहिब जी

22 कबहु सुख कबहु दुख है, यह सब मन का जाल ।
पूर्ण सतगुरू ज्ञान सूं, छूटे मन माया जाल ।। साहिब जी

23 सत्तपुरूष का हर घट वास, जागें तो जाओ संग साथ ।
जो पाया सीखा संसार में, छूटे तो मिलता साहिबन साथ ।। साहिब जी

24 पारस सुरति संतन पासा, सर झुके तो बनती बात ।
मन माया जाल सब छूटता, हर पल पाओ संग साथ ।। साहिब जी

25 वे नाम ये नर अंध, मन माया सूं करता प्यार ।
जो पल बिन संतन संग के, वह नहीं जीवन सार ।। साहिब जी

26 मन सूं काम ना लेत जो, चित सूं करे न याद ।
हर पल सुरति सार नाम में, हर पल साहिबन साथ ।। साहिब जी

27 यह जीवन जीवन नांहि, जिस में मृत्यु के लगते फूल ।
सत्य, प्रेम, आनंद जाना नहीं, सच्चा जीवन गया तूं भूल ।। साहिब जी

28 हर मल जीवन है मिट रहा, हर पल देता संदेश ।
यह तन मर्गट समान है, जागे तो मिले संदेश ।। साहिब जी

29 एक कतार में सभी खड़े, मृत्यु बुलाती पल छिन आन ।
यह मरना कोई मरना है, बिन सतगुरू कैसे तजे प्राण ।। साहिब जी

30 जहां सत प्रेम आनंद बसे, तिस घट साहिबन वास ।
एक रूप सभी को जानता, सुरति में एक का वास ।। साहिब जी

(अध्याय दौ)

31 मन में जब विचार चलें, यही दुख का आधार ।
धर्म युद्ध में ईच्छा नांहि, गुरू आज्ञा ही है सार ।। साहिब जी

32 नां तूं कर्ता कल था प्यारे, नां ही कर्ता फिर कल ।
आज तूं कर्ता कैसे होगा, जो नां जिया इसी पल ।। साहिब जी

33 हर जीव को तो कर्म है करना, कर्ता जान भगवान ।
कमल फूल जल में रहता, भीगा ना इसे जान ।। साहिब जी

34 हर जीव मन माया वश पड़ा, कारणहार ना जाने को ।
खुद को ईच्छाओं से तोड़े, कर्त्ता जाने उसी को ।। साहिब जी

35 सब कार्य का कर्त्ता सतगुरू, जब छोड़ा उसी पे हो ।
पाप ना तुमको छू सकता, वही कर्त्ता निज हो ।। साहिब जी

36 निष्काम भाव सूं कर्म जो करता, सब कुछ पावे सो ।
उस का आपा कुछ कुछ मिटता, माया सूं छूटे मोह ।। साहिब जी

37 अब मै मै सब बह गई, अपनों का भी छूटे मोह ।
तूं तूं करता मैं भया, मै मेरी का छूटे मोह ।। साहिब जी

38 अर्जुन मन ईन्द्रि वश पड़ा, युद्ध सूं टूटा मोह ।
अपनों का मोह जाग उठा, कर्तव्य सूं भागा वोह ।। साहिब जी

39 इस जग में मरता कोई नहीं, ईक तन छोड़ दूजा तन पाता वोह ।
जब तक सत्त सब्द की दात ना, आवागमण में रहता वोह ।। साहिब जी

40 जब जीव मन माया से पार हो, तभी मुक्ति संग साथ ।
बिन पूर्ण संतन दात के, पूर्ण मुक्ति का नहीं आभास ।। साहिब जी

41 तीन लोक में चार मुक्ति योग, पित्र–स्वर्ग–शुद्ध ब्रहम–सुन्न लोक ।
इन में पूर्ण मुक्ति नांहि, भौग कर फिर इसी लौक ।। साहिब जी

42 कईं बार तूं ईन्द्र बनयो, फिर कीट पतंगे में वास ।
निज धाम का वासी तूं प्यारे, हंसा तेरा रूप ।। साहिब जी

43 मेरी मेरी करता तूं मरा, मरन ना जाना कोये ।
ऐसी मरनी को मरो, फिर ना मरना होये ।। साहिब जी

(अध्याय तीन)

44 मन मुवा ना माया मोई, संशय युक्त शरीर ।
अविनाषी होई जो मरे, फिर कैसा शरीर ।। साहिब जी

45 अर्जुन संशय युक्त था, मोह और माया संग साथ ।
तर्क पे तर्क में उलझ गया, श्री कृष्ण संग ना जोड़ी तार ।। साहिब जी

46 श्री कृष्ण गुरू अमृत की खान हैं, बिन मान तजे बने ना काम ।
मान तजे समर्पण उपझे, सत्तगुरू चरणन में ध्यान ।। साहिब जी

47 हर्ष विषाद अनुभव तन का, आत्म इन सूं पार ।
माया मन कारण है दुख जग में, जो जाने सो उतरे पार ।। साहिब जी

48 श्री कृष्ण अर्जुन को दे ज्ञान रहे, अर्जुन पकड़े मन की तान ।
दुख के बादल चहुं और फैले, निज भूला अर्जुन महान ।। साहिब जी

49 हर जीव मन के वश पड़ा, छूटन का ना कोई उपाए ।
संत चरण धूली मिले, बिन इस के नांहि उपाए ।। साहिब जी

50 ईच्छाऐं दुख का मूल प्यारे, माया मन का खेल ।
जीव तूं तो आत्म रूप है, आत्म मन का नहीं मेल ।। साहिब जी

51 वस्तु कहीं ढूंढे कहीं, किस विधि आवे हाथ ।
जब कोई पूर्ण संत मिले, तभी होत ज्ञान की बात ।। साहिब जी

52 जीव पाप कर्म है कर रहा, किस विधि उतरे पार ।
आत्म रूप जाने नहीं, बिन जागे नहीं पार ।। साहिब जी

53 मन बुद्धि चित्त के संग में, उभरें काम क्रौध अहंकार ।
जब तक ना पाओ पूर्ण सतगुरू, काल के हाथ पतवार ।। साहिब जी

54 कंचन कामिनी तजना सहल ना, ये सब मन के काम ।
मान बड़ाई रिश्ते नाते, मन के हाथ बाण कमान ।। साहिब जी –

55 जग में जो भी दिख रहा, वह सब मन का जाल ।
हर घट में मन का ही राज है, अंधा मोह का जाल ।। साहिब जी

56 निर्मोही होई ज्ञान विचारिए, जब संत सूं मिलती दात ।
सार सब्द की दात जब पास में, फिर मन की बने ना बात ।। साहिब जी

57 श्री कृष्ण आप जग में परवरयो, दुख का करने नाश ।
जीव ये सब जाने नहीं, जीव का संग मन साथ ।। साहिब जी

58 जैसे बीज तूं बो रहा, वैसे फूल उगात ।
जब बीज ही फेंका मोत का, फिर फूल भी मोत का पात।। साहिब जी

59 वस्तु कहीं ढूंढे कहीं, किस विधि आवे हाथ ।
जो कोई पावे पूर्ण सतगुरू, पल मे साहिबन साथ।। साहिब जी

60 मूल नाम की दात को पाकर, पाओ मौक्ष पद का धाम ।
अमृत सब्द सुरति जगावे, जिस का निजघर निजधाम।। साहिब जी

61 इधर उधर भटकना छोड़ कर, सब्द प्राण पवन में धरो ध्यान ।
अच्छा बुरा विचार जो, मध्य में ले उसे आन।। साहिब जी

62 सुन्न में तूं ध्यान दे, सार सब्द सूं जोड़ पवन प्राण ।
नुक़्ते को मत छोड़ तूं, पल में पहुंचों निजघर निजधाम।। साहिब जी

63 सहस्त्रार और निजधाम मध्य, सुरत कमल स्थान ।
ग्यांहरवां द्वार इसी को कहते, सतगुरू लौक महान।। साहिब जी

64 आज्ञा चक्र सूं सतगुरू ले जांए, सुरत कमल स्थान ।
आज्ञा चक्र में ध्यान जब पहुंचे, तन मृतक सतगुरू ध्यान।। साहिब जी

65 मन सुन्न तन सुन्न सांसा उल्टे, तभी सुन्न को पायें ।
आज्ञा चक्र में केवल, चेतना ही रह जाये।। साहिब जी

66 आज्ञा चक्र सतगुरू ध्यान, दर्शन करो अपार ।
संग सतगुरू संग सुरत कमल में, साहिबन दर्शन करो अपार।। साहिब जी

67 जन्म से मृत्यु की श्रृंखला, दुख और पीड़ा संग साथ ।
जीव में जीवन को साधो, सुरत सब्द में सुरति साथ।। साहिब जी

68 अब चार उंगल में सांसा चल रही, इसे बिन्दु सम कर डाल ।
उल्टा स्वांसा आप हो जात, सत्त सब्द सुरति प्राण में डाल।। साहिब जी

69 हर स्वांस में वासा साहिबन है, तुझे ख़बर नहीं मेरे भाई ।
लौभी मन भरमा रहा, सार सब्द ख़बर नहीं मेरे भाई ।। साहिब जी

70 भगवन अर्जुन सूं कहते, दुख सुख एक समान तूं जान।
हानि–लाभ, विजय–पराजय, इक समान ही तूं जान ।। साहिब जी

71 इन सब से मैं लड़ कर, पांऊ राज दरबार ।
दुखी हो अर्जुन कहे, भगवन सुन लो मेरी बात ।। साहिब जी

72 गुरू खड़े पितामह खड़े, किस किस का करूं संहार ।
अपने गुरूजनों सूं, कैसे करूं ऐसो दुरव्योवहार ।। साहिब जी

73 सुख ना पावे ऐ प्रभु, कुल का करे जो नाश ।
पाप का भागीदार हो, नर्को में करे वह वास ।। साहिब जी

74 करने घोर अपराध को, पहले करो विचार ।
क्या इसी में है राज सुख, कुल बंधु दूं मार ।। साहिब जी

75 ऐसे वचन उचार कर, धनुष बाण दिया छौड़ ।
रथ से नीचे उतर कर, युद्ध सूं मुख लिया मोड़ ।। साहिब जी

76 कभी ना मौक्ष पा सके, जो पाप का भागी होये ।
अर्जुन के शब्दों में, समर्पण का भाव नहीं कोये ।। साहिब जी

77 गुरू की आज्ञा सर पर राखे, चले आज्ञा विरूद्ध ना कोये ।
समर्पण हो तो पूरा हो, विरोधाभास से ना उभरे कोये ।। साहिब जी

78 क्या करिये क्या छोड़िये, छोड़ो सब एक साथ ।
सतगुरू सूं जोड़ो सुरति को, सभी कुछ ही उन हाथ ।। साहिब जी

79 कृष्ण जी कहत जागो अर्जुन, ना करो चाम सूं प्यार ।
जैसे स्वपन रैन का, ऐसा जानो संसार ।। साहिब जी

80 ना कोई रहा ना रहेगा, सपनों सूं रचा संसार ।
इस सूं प्यार क्या कीजिए, सपनों सा संसार ।। साहिब जी

81 जो तूं पड़ा मन माया जाल में, कैसे उतरेगा पार ।
माया तो मन की मोहिणी, बिन समर्पण नहीं पार ।। साहिब जी

82 मन माया जाल सब को अन्धा करे, तूं भी सोया कहलाये ।
लाखों जन्मों से सोया पड़ा, कोई संत ही इन्हें जगाये ।। साहिब जी

83 भक्ति अमृत अशुद्ध हुआ, कामी ईन्द्री स्वाद ।
हीरा खोया निज आपना, लाखों जन्मों की पड़ी जो राख ।। साहिब जी

84 भोजन में कुछ स्वाद ना, जीवा में ही स्वाद ।
कोई वस्तु स्वाद ना दे सके, ईन्द्री चखा स्वाद ।। साहिब जी

85 सतगुरू नाम जा पास में, काम बाण से पार ।

काम ऊर्जा का उत्थान कर, जन्म मरन सूं पार ।। साहिब जी

86 कामी क्रौधी लालची, गुरू सूं ना करता प्यार ।
दुख चारों ओर से साथ में, सुख का आर ना पार ।। साहिब जी

87 तन मन स्थिर कैसे रहें, काम बाण सूं घात ।
इस बाण सब वश किया, सुर नर मुणि इक साथ ।। साहिब जी

88 अर्जुन मन के वश पड़ा, मन नहीं अर्जुन वश ।
जो कोई मन से बचे, मन माया उस वश ।। साहिब जी

89 मन ही माया मन ही निरंजन, सबै रहा भरमाई ।
जे कोई संत सूं सार नाम पा ले, पल में वश आ जाई ।। साहिब जी

90 सतगुरू कृपा निरन्तर बहती, संग होते ही जाग जाई ।
संत ही जग में सतपुरूष रूप हैं, संगत में रहो समाई ।। साहिब जी

91 बृहंगा मत संतन के पासा, सुरति सूं चलावे बाण ।
पारस लोहा सोना कर दे, सतगुरू करे आप समान ।। साहिब जी

92 श्री कृष्ण ही साकार निराकार बन जाते, तीन लोक विस्तार ।
आप ही सात आकाश, और सप्त सागर विस्तार ।। साहिब जी

93 आप ही तन मन रचनाकार हैं, महा प्रलय आधार ।
आप ही शुभ अशुभ, पाप पुण्य का सृजक दातार ।। साहिब जी

94 तीर्थ व्रत यज्ञ और तप, कर्म फल आधार ।
इस सूं मौक्ष फल नांहि, कभी ना उतरे पार ।। साहिब जी

95 वस्तु कहीं ढूंढे कहीं, किस विधि आवे हाथ ।
सतगुरू सब्द जब पास में, पल छिन आवे हाथ ।। साहिब जी

96 बिन सतगुरू जानो नहीं, जे कौटि करो उपाए ।
चरणन में सिर डाल दो, पल में मिले उपाए ।। साहिब जी

97 यह जग सपने समान है, कुछ भी तो सच नांहि ।
कोई भी यहां अपना नहीं, सब नाते बिन सपने कुछ नांहि।। साहिब जी

98 सतगुरू ने मुझे मोती दिखलाया, मेरे अंदर दृष्टि् में समाया ।
ऐसी कृपा दयानिधि सत्तगुरू ने कीनी, जग सपना दर्शाया ।। साहिब जी

99 जग में देवी देव भरमाए, कोई ना पहुंचा उस पार ।
तीन लौक के आगे देखा, साहिब अमरलौक दरबार ।। साहिब जी

100 अमर लोक ही हंसा देश प्यारा, जहां से हंसा आयो ।
तीन लोक माया में फंस कर, निज घर का भेद ना पायो ।। साहिब जी

101 जग के सुख स्वपन समान हैं, रिश्ते नाते झूठी प्रीत ।
हर जीव केवल आत्मां, मन कारण धरा शरीर ।। साहिब जी

102 आत्मां प्रेम आनंद बिन कुछ है नांहि, यह तो ईच्छा रहित ।
पूर्ण सतगुरू जब मिले, छूटे मन माया से प्रीत ।। साहिब जी

103 अर्जुन कहे सुख ना पावे, ऐ प्रभु, कुल घाति जो होये ।
हृदय उसका पतित हो, सुख ना पावे कोये ।। साहिब जी

104 यह तो घौर अपराध प्यारे, गुरू सम्बंधी दूं मार ।

क्या इसी में है राजसुख, कुल बन्धु दूं मार ।। साहिब जी

105 अर्जुन ये सब उचार कर, धनुष बाण दिया छोड़ ।
रथ से नीचे उतर कर, रण से मुख लिया मोड़ ।। साहिब जी

106 अर्जुन को दुखी देख कर, कहें प्रभु समझाये ।
तुम तो आर्य पुरूष हो, युद्ध में कायरता कहां से लाये ।। साहिब जी

107 कायरता से कीर्ति, खो जावे आत्म आनंद ।
निर्बलता को त्याग दे, दे शत्रुओं को दण्ड ।। साहिब जी

108 धनुष बाण को पकड़ कर, अर्जुन सुन मेरी बात ।
प्राण रहें या ना रहें, कर्म का बाण रखो साथ ।। साहिब जी

109 अजर अमर है आत्मां, अविनाशी इसे तूं जान ।
देह के मरने पर भी, प्राण के संग इसे तूं जान ।। साहिब जी

110 जीव को आत्मां मत कहो, यही तो जीव की भूल ।
सब में आत्म वास है नहीं, जागे तो जानो भूल ।। साहिब जी

111 अपना पराया कोई है नहीं, सभी हैं हंसा रूप ।
भेद भाव सभी मिटे, जब जीव ही हंसा रूप ।। साहिब जी

112 भेद भाव सूं सहज ना हो सके, कल कल में जीना होये ।
इस पल में जीना जब आ गया, सब जग एक बन जाये ।। साहिब जी

113 मन लौभी मन लालची, मन का करो विवेक ।
मन सार सब्द सूं निर्मल करो, तभी दिखें सब एक ।। साहिब जी

114 कुल का नाष जब होत है, कुल धर्मों का नाष हो जात ।

धर्म का नाष होने पर , कुल की नाव डूबे इक साथ ।। साहिब जी

115 धर्म के बादल छट जाने पर, सुख के बादल छट जात ।
तब कुल का नरक में वास हो, सब काल का ग्रास बन जात।। साहिब जी

116 दोष के कारण वर्ण संकर, उत्पति निश्चित जान ।
जड़मूल से नाष होता धर्म का, दुख ही दुख हर ओर जान।। साहिब जी

117 अंश आत्म नाष कभी है नहीं, क्यों दुख चारों ओर ।
रहे आत्मा एक रस, देह पुरातन होए ।। साहिब जी

118 शस्त्र से कटती नहीं, आग जलावे नांहि ।
जल वायु और धूप से, गले मुकावे नांहि ।। साहिब जी

119 बाल जवानी बूढ़ापन, रोग सोग तन साथ ।
मन माया जीव भरमाया, काम क्रौध संग साथ ।। साहिब जी

120 प्राण आत्मां वस्त्र पुराने त्याग कर, नए धारे संग साथ ।
ऐसे देह को छोड़ कर, दूजा घर संग साथ ।। साहिब जी

121 कायरता से कीर्ति, खो जाता आत्म आनंद ।
निर्बलता को त्याग दे, बिन ईच्छा कर्म आनंद ।। साहिब जी

122 अर्जुन हानि लाभ अच्छा बुरा, जीत हार तूं भूल ।
जंग को जंग ही जान कर, बिन कारण कर्म ना भूल ।। साहिब जी

123 मनुष्य पुरूषार्थ प्रयत्न का, अधिकारी नित जान ।
कर्तव्य निष्चय समर्पण, निश्चित कर्म तूं जान ।। साहिब जी

124 कर्तव्य से आंख मत बंद कर, स्वांसों में धरो ध्यान ।

सतगुरू पर डौरी छोड़ दो, कर्म पर धरो ध्यान ।। साहिब जी

125 अर्जुन करूणा से भरा हुआ, अशुवन सूं भरे हैं नैन ।
व्याकुल दुखी अर्जुन खड़ा, हाथ जोड़ बैठा चरणन भगवान ।। साहिब जी

126 यह तन दुख का मोल है, मत भरमायो कोये ।
कुछ भी मरता जग में नहीं, फिर दुख काहे को होये ।। साहिब जी

127 कर्तापन को त्याग दे, कुछ नहीं अपने हाथ ।
सहज अवस्था सहज है नांहि, सतगुरू समर्पण सूं आवे हाथ।। साहिब जी

128 माया मोह में जो फंसा, सब प्रयास निश्फल जाये ।
जब सतगुरू शरणी मिले, हर कार्य सफल हो जाये ।। साहिब जी

129 निज को निमित जान कर, सतगुरू में सुरति डाल ।
तेरा जग में कुछ है नांहि, उसी में सुरति डाल ।। साहिब जी

130 हर जीव हंसा रूप है, जन्म मरण का संग ना जान ।
मूल दात सतगुरू पास में, उसी में मोक्ष निर्वाण ।। साहिब जी

131 कर्म धर्म बन्धन रोग हैं, जात पात झूठ तूं जान ।
रिश्ते नाते बन्धन रोग हैं, सतगुरू मोक्ष की खान ।। साहिब जी

132 सार नाम के ज्ञान सूं, निर्मल बुद्धि शांत चित्त हो जाये ।
बिन सार सब्द की दात के, आत्म मेल ना जाये ।। साहिब जी

133 पांच तत्व के बीच में, आत्मां बंधी तू जान ।
लाखों जन्मों से है फंसी, सतगुरू की कर पहचान ।। साहिब जी

134 तुम तो हंसा रूप हो, जागो तो पावो मोक्ष ।

सतगुरू बिन जागे ना कोई, बिन जागे मिले ना मोक्ष ।। साहिब जी

135 अनुभव आत्म ज्ञान का, कथनी का ना कोई सार ।
कथनी धूल समान है, सुरति करे तो मोक्ष है सार ।। साहिब जी

136 कृष्ण कहें अर्जुन सूं, ध्यान से सुन मेरी बात ।
देह को मरता देख कर, चिन्ता की क्या बात ।। साहिब जी

137 सदा अमर है आत्मां, फिर मरने की क्या बात ।
हानि लाभ को छोड़ कर, जल्दी कर संग्राम ।। साहिब जी

138 पाप उसे छुए नहीं, करे धर्म जो काम ।
आत्म का कर्म धर्म सूं काम ना, यही भूल तूं जान ।। साहिब जी

139 कृष्ण कहे कर्म कर्ता जो मरे, ताका नहीं दोष ।
गुरू की जो ना सुने, उस के सर पर दोष ।। साहिब जी

140 जो जग में जैसा करे, तैसा ही फल पाये ।
बिन संतन शरणी पड़े, मोक्ष कभी ना पाये ।। साहिब जी

141 करनी करे सब का भला, कथनी कड़वे फल समान ।
कथनी करता जो मरे, सोया गया अन्जान ।। साहिब जी

142 करनी ना कथनी करे, अज्ञानी सो जान ।
उस के जीवन में सुख ना उपझे, हर कार्य मन सूं जान ।। साहिब जी

143 सार सब्द सुरति में जो धरे, उसे जागा तूं जान ।
पूर्ण सतगुरू सूं सार सब्द जो पाये, उसे सब्द विदेह तूं जान।। साहिब जी

144 अमी सब्द लिखा पढ़ा ना जाये, वह तो सब्द विदेह ।

सतलोक से सब्द ये आया, जिस रचेयो हंसा लोक विदेह ।। साहिब जी

145 मूल सब्द सुरति सूं ध्यायें, मोक्ष पद मिली जाये ।
काल जाल में मोक्ष ना होये, चार मुक्ति सूं पुनः जग आयें।। साहिब जी

146 पित्र लोक स्वर्ग ब्रह्म, शुद्ध ब्रह्म लोक को जायें ।
पुण्य कर्मों को भौग कर, पुनः जग में जन्म को पायें ।। साहिब जी

147 सार नाम की महिमां, अति प्यारी तूं जान ।
सतगुरू अमी सब्द सूं, सतलोक का कर्ता जान ।। साहिब जी

148 सत सब्द की महिमां न्यारी, मन माया का छूटे संग साथ ।
यह दात सतलोक सूं आई, सतगुरू की सुरति संग साथ ।। साहिब जी

149 काल की महिमां जो कोई गावे, मन माया में रम जावे ।
सुर नर मुनि सब को लुभावे, कोई विरला ही बच पावे ।। साहिब जी

150 'वे नाम गुलाम' सार सब्द को लाया, ले लो रे भाई ले लो रे ।
युग बीते मनुष्य ना जाग सका, सार नाम तुम ले लो रे ।। साहिब जी

151 शब्द सूं तीन लोक हैं आए, शब्द सूं मन माया जाल ।
हंस रूप होई निरवान मिले, तां सूं छूटे संसार ।। साहिब जी

152 श्री कृष्ण पल पल चितारते, केही कारण भयो अधीन ।
धर्म कार्य के कारने, तुम्हें दोष कैसे कोई दीन ।। साहिब जी

153 जग में कोई नहीं मर रहा, एक तन छूटे दूजा पा जाये ।
जाना ही लौट आना जान लो, जीवित मरना मोक्ष दिलाये ।। साहिब जी

154 कोई ना मरता एक पल के लिए, यही तो दुख की बात ।

जीवित मरना आ गया, पल में छूटे मन माया का साथ ।। साहिब जी

155 जब जब पाप प्रकट जग होई, धरो अवतार करो नाश सोई ।
यही विधि युगन युगन चली आई, पाप नाशे सत्त प्रकटाइ ।। साहिब जी

156 जब जब द्वापर आवे जग मांहि, यही यही घटे विधि अनुसार ।
कुछ बदलाव ना देख सको, सब घटे जग में विधि अनुसार।। साहिब जी

157 कौरव पाण्डव हर युग में लड़े, कर्मों अनुसार मरी और आये ।
तुमरे किए कुछ ना हो सके, कर्मों विधि करे कराये ।। साहिब जी

158 तुम तो अभी आप में नांहि, कैसे जानो निज आप ।
सहज अवस्था जब मिले, तभी आत्मां कर्ता धर्ता आप ।। साहिब जी

159 आप जो कर्ता सोहि कल कहावे, यह सब मन आधार ।
इच्छा तृष्णा मन का रूप हैं, सतगुरू करावे पार ।। साहिब जी

160 मन के मते ना चलिऐ, मन के मते अनेक ।
मन पर जो असवार है, उस सतगुरू को देख ।। साहिब जी

161 वही काया जो मन चित लाया, वोहि काल का जाल ।
यह तन पंच में समायेगा, उसी सूं आया जान ।। साहिब जी

162 जे माया में मन रहे समाये, मन सूं ना छूटे संग ।
सेवा फल सूं जब रहित, काल सूं छूटे संग ।। साहिब जी

163 सार नाम सतगुरू सूं पायो, हंसा बन निजघर जाये ।
सतलोक निजघर है सब का, तन मन छूटे निजघर जाये ।। साहिब जी

164 आत्मां मन माया सूं पार है, तन सूं लेन ना देन ।

मन माया कुछ लाभ ना, सतगुरू मिले तो प्रेम आनंद ।। साहिब जी

165 सार नाम में सुरति डाल दो, लाभ हानि पर ना धरो ध्यान ।
पूर्ण सतगुरू के चरणों में, पल पल धरो ध्यान ।। साहिब जी

166 सतगुरू दर्शन जो करे, साहिब के दर्शन जान ।
सतगुरू आज्ञा में रहे, मिले मोक्ष पद का दान ।। साहिब जी

167 अल्पज्ञानी क्या जाने मोक्ष की दात को, सतगुरू गुरू में ना जाने भेद ।
सतगुरू पे सब छोड़ दो, पल में मोक्ष का जानो भेद ।। साहिब जी

168 अपनी करनी मत करो, सतगुरू को कर्ता जान ।
तूं तो केवल बाण है, सतगुरू जान कमान ।। साहिब जी

169 निज को जानना आत्म ज्ञान है, सतगुरू को कर्ता जान ।
आत्म में परमात्म देखो, पाओ मोक्ष पद का दान ।। साहिब जी

170 बुद्धि जब एक से अनेक हो, वह ही वासना जान ।
बुद्धि ही वासना द्वार है, कारण पतन का जान ।। साहिब जी

171 भौग और ऐश्वर्य आसक्त मनुष्य, समाधि स्थिर ना होये ।
नित्य ''वे नाम'' सब्द में स्थिर रहो, हंसा रूप हो जाये ।। साहिब जी

172 समत्व बुद्धि को धार कर, फल की आशा छूट जाये ।
फल की ईच्छा जो करे, वह पामर कहलाये ।। साहिब जी

173 मोह रूपी दलदल को तूं पार कर, तभी तो सतगुरू पायें ।
सुनने और सुनाने के लिए, सतगुरू के पल पल दर्शन पायें।। साहिब जी

174 मोन से मिल मोन हो जाओ, तभी सतगुरू के कहलाओ।

केवल आँसू आँख के, पल में पार लगायो ।। साहिब जी

175 सुख दुख जानो एक समान, इस पल रहे जब ध्यान ।
कल और कल मन का काम है, सुरति में रहना जान ।। साहिब जी

176 सुरति ही हंसा रूप है, निज को जान सुरति पहचान ।
सुरति निरति सब कहें, बिन सतगुरू ना होत पहचान ।। साहिब जी

177 शीतल होत बिन ध्यान ना, शीतल संत को जान ।
शीतल से जब मेल हो, शीतलता की हो पहचान ।। साहिब जी

178 नहीं शीतल है चन्द्रमां, हिम नहीं शीतल होये ।
साहिब जी शीतल संत जन, नाम स्नेही होये ।। साहिब जी

179 कौटि नाम संसार में, मुक्ति सूं लेन ना देन ।
मूल नाम निजधाम सूं आया, सतगुरू सूं मिलता दान ।। साहिब जी

180 सुरत सब्द की दात सूं, मन माया का छूटे संग ।
प्राण तार सूं मिल नाम को जोड़ते, सतगुरू सूं जब संग ।। साहिब जी

181 अर्जुन उवाच :— हे केशव ! स्थितप्रज्ञ के लक्षण मुझ को दो बतलाये ।
कैसे वह है बोलता, बैठना उठना दो बतलाये ।। साहिब जी

182 श्री भगवान उवाच :— जब मन की तरंग को नर, पल में करे त्याग ।
ऐसी रहनी रहे व बोले, सुरति बिन सब का त्याग ।। साहिब जी

183 अब मन बैठे हंसा डोले, सुरति सूं करे विचार ।
अब सुरति सूं देखे सुने, सुरति सूं करे विचार ।। साहिब जी

184 मन बुद्धि का संग गया, जन्म मरन सूं छूटा साथ ।

अब सुरति सूं उड़ चलो, साहिबन संग साथ ।। साहिब जी

185 अब वह जन पूरा जाग गया, कल और कल सूं छूटा साथ ।
अब वह जन हंसा हो गया, तीन लोक सूं छूटा साथ ।। साहिब जी

186 राग द्वैष से पार वह, सब जीव एक समान ।
कौन बुरा और कौन भला, कुछ भी भेद ना मान ।। साहिब जी

187 जिस की प्रीत लगी सतगुरू सूं, दूजे सुख तूं तुच्छ जान ।
अंदर पल पल पाए, साहिब दर्शन महान ।। साहिब जी

188 हर पल सार नाम के ध्यान में, छूटा मन का जाल ।
खुद को जान आत्म हंसा बने, छूटा मोह माया का जाल ।। साहिब जी

189 अर्जुन जे तूं हंसा बने, मोक्ष पद मिल जाये ।
तुझ को ज्ञान वर्णन करूं, सकल कामना मिट जाये ।। साहिब जी

190 मूर्ख मान कुछ माने नहीं, काम क्रौध संग साथ ।
मैं और मैं में डूब कर, खोया मन माया के साथ ।। साहिब जी

191 जब अर्जुन कुछ माने नहीं, तब धारा सकल सरूप ।
सूर्य चांद सितारे रूप में, तीन लोक विस्तार प्रकटाये रूप।। साहिब जी

192 देवी देव समाये रूप में, धरती आकाश पाताल ।
अति विशाल रूप को देखा, अर्जुन का बुरा हाल ।। साहिब जी

193 लाखों जीव मुख अंदर, दांतों सूं खाते ईक साथ ।
सब को एक साथ मरते देख, अर्जुन करी पुकार ईक साथ।। साहिब जी

194 निज रूप में आओ भगवन, देख ना पाऊं यह रूप ।

आप ही कर्ता जगत में भगवान, आप का प्यारा वही रूप ।। साहिब जी

195 श्री कृष्ण अस्त्र चल गया, जब धारा सकल सरूप ।
सुर नर मुनि सब छलि छलि मारे, अर्जुन देखा निराकार का रूप।। साहिब जी

196 वे नाम देत पुकार हैं, चीन्ही तत्व भेद सत सार ।
वे नाम सूं पा लो दात को, पल में होत भव निधि पार ।। साहिब जी

197 मूर्ख अमर सब्द नहीं जानता, सतगुरू सूं ना करता प्यार ।
सतगुरू बंधन काटते, पल में करते उस पार ।। साहिब जी

198 पर पंची जग को रचा, बिन सतगुरू मिले ना द्वार ।
काल के भेद को जाने नहीं, झूठे स्वपन देत संसार ।। साहिब जी

न बाबा नानक कहें :— शब्दे धरती शब्द आकाश, शब्दे शब्द भयो प्रकाश।
यह संसार शब्द सूं आया, अमर लोक सब्द किया प्रकाश।। साहिब जी

199 तीन लोक शब्द सूं आये, मन का जान विस्तारा ।
मन काल निरंझन एक रूप हैं, महां प्रलयः विनाश ।। साहिब जी

200 सब्द आया निजधाम सूं, जिस का आर ना पार ।
निजधाम सतपुरूष का रूप है, सब्द सुरति सूं विचार ।। साहिब जी

201 हम सब हंसा देश के प्यारे, पड़े काल वश आई ।
तन मन छूटे आत्म हंसा बने, निजघर को वह जाई ।। साहिब जी

202 अजर अमर है हंसा प्यारो, झूठा सब संसार ।
शस्त्र सूं कटती नहीं, आग से है वह पार ।। साहिब जी

203 सब भेद सतगुरू सूं मिलें, अमर दात सतगुरू पास ।

बिन सतगुरू कोई पावे नहीं, जन्म मरन का ना छूटे साथ।। साहिब जी

204 निजघर को जानना प्यारो, जीव का लक्ष्य तूं जान ।
निजघर का जानना आत्म की पहचान, पहले सतगुरू पहचान।। साहिब जी

205 निज रूप जे ना जान सके, तो काल सूं ना छूटें प्राण ।
इस पल में रहना सीख लो, तो निज का होत कल्याण ।। साहिब जी

206 भय और क्रौध को त्याग कर, सब जन सूं करे प्यार ।
सुख दुख में एक सम रहे, सार सब्द सूं पार ।। साहिब जी

207 विषय कामना छोड़ कर, संतन सूं करे प्यार ।
संत ही साहिबन रूप हैं, इस का करो विचार ।। साहिब जी

208 ईन्द्रिय दमन से होत है, प्रसन्नता प्रकाश ।
स्थिर बुद्धि और शान्ति, सुरति चेतन सूं प्रकाश।। साहिब जी

209 ईन्द्रियां मन जब एक हों, होत बुद्धि का नाष ।
सागर में नाव का, आंधी ज्युं करती नाष ।। साहिब जी

210 कौरव पाण्डव हर युग लड़ते, कृष्ण का होता अवतार ।
इन के करने कुछ नहीं होता, काल निरंझन करत विनाष।। साहिब जी

211 मन में मान कबहु ना कीजे, कौन मारे और किसको मारे ।
तन मन आत्म संग दिया, काल निरंझन किया यह काम।। साहिब जी

212 सतलोक से आत्मां है आई, अमर शांत आनंदमयी ।
वहां जन्म मरन की बात ना, ना विषय विकार और मोह।। साहिब जी

213 शब्द मन और मुख से आवे, सब्द सुरति भंडार ।

मन और मुख से जो उच्चारो, वह माया भंडार ।। साहिब जी

कबीर जी वाणी

क कहे कबीर किसे समझाऊं, सब जग अन्धा जान ।
ईक दो होवे उन्हें समझाऊं, सबै भुलाना पेट का धन्धा।। साहिब जी

क ऐसा कोई ना मिला, जासो कहिए रोये ।
जासो कहिए भेद को, सो फिर बैरी होये ।। साहिब जी

क बहु बंधन से बंधया, एक विचारा जीव ।
जीव विचारा क्या करे, जो ना छुड़ावे पीव ।। साहिब जी

क तीर्थ व्रत आचार विविध विधि, जप तप आदि उपाई ।
ज्यों ज्यों करत यत्न छूटन को, त्यों त्यों होवे दृढ़ताई ।। साहिब जी

क आपा को आप ही बंधया, जैसे स्वान कांच मन्दिलमां भ्रमति भूंकी मरयो।
ज्यों केहरी बपु निरखी, कूप जल प्रतिमा देखी परयो।। साहिब जी

क वैसे ही गज फटिक सिला मो, दसनन आनि अरयो ।
नटवर मूठी स्वाद नहीं बिछुरे, धर धर नटत फिरो ।। साहिब जी

क संतन को कीजे दण्डवत, कोटि कोटि प्रणाम ।
कीट ना जाने भृंग को, सतगुरू कर लें आप समान ।। साहिब जी

214 सुर दुर्लभ मानव तन पाया, श्रुति पुराण वेद ग्रंथन गाया ।
अमरधाम मोक्ष का द्वारा, जेहि ना पाया भटक गया ।। साहिब जी

215 जब जब पाप भयो जग भारी, धारूं अवतार करूं मैं नाष ।

जब जब द्वापर आवे जग मांहि, तन का हुआ विनाष ।। साहिब जी

216 मनुष्य कुछ ना कर सके, जो करे सो आप ।
मन में मोह कभी ना आवे, निरंकार बन्धन बने आप ।। साहिब जी

217 तुम पर दौष है डालना, काल ही करे संहार ।
जिस का हाथ उठे किसी उपर, सहे पाप की मार ।। साहिब जी

218 काया मन एक समान है, मरना तन का होये ।
जैसी धारा मन में बहे, वही रूप धार जग आये ।। साहिब जी

219 जो भगवान को कर्ता लेत मान, सो ही ज्ञानी तूं जान ।
जो कमल समान जल निर्लेप है, उसे सहज तूं जान ।। साहिब जी

220 जो हर वस्तु भगवान की मानता, उसी की जान करे प्रयोग ।
उसे ज्ञानी जान कर, ध्यान का कर प्रयोग ।। साहिब जी

221 राग़ द्वैष ईन्द्रिय रस हैं, उन में आसक्ति मन का काम ।
मन की तरंग को मार दे, तो हो गया पूरा काम ।। साहिब जी

222 पूर्ण सतगुरू जे ना मिले, मन का ना छूटे साथ ।
मन पल पल भरमा रहा, अपने आप का कर तूं साथ ।। साहिब जी

223 जो जिस की भक्ति करे, उसी में जा समाये ।
जो भगवान कृष्ण की भक्ति करे, गौ लोक में जाये ।। साहिब जी

224 भोग भोग कर भक्ति फल का, मृत्यु लोक आ जायें ।
अमर लोक ही सच्चा लोक है, हंसा बन मोक्ष को पायें ।। साहिब जी

(अध्याय आठ)

225 अर्जुन बोले भगवान, ब्रह्म और आत्म का दीजिये ज्ञान ।
भौतिक जगत और देवता, मन का दीजिये ज्ञान ।। साहिब जी

226 ये तन विष की बेलड़ी, आत्म की क़ैद महान ।
ईन्द्रियों के वश जीव पड़ा, छूटना कठिन तूं जान।। साहिब जी

227 सुनते मानते कई युग गये, मन माया का छूटा ना साथ ।
बिन सतगुरू बात बने नांहि, सार नाम बिन कैसे छूटे साथ।। साहिब जी

क कबीर काया अथाह है, कोई बिरला जाने भेद ।
हर नर छे तन धार कर, मुक्ति का ना जाने भेद।। साहिब जी

228 हर नर दो शरीर में, जग में करते वास ।
योगी ध्यान में जा कर, तीजे तन में करते वास।। साहिब जी

229 योगेश्वर छटे तन को पार कर, लोक लुकान्तरों की करते सैल ।
तन तज शुद्ध ब्रह्म में जाकर, प्रलयः तक करते वास।। साहिब जी

230 पपील मीन की चाल सूं, ब्रह्माण्डों की करते सैल ।
जब चाहें जहां चाहें, जगत ब्रह्माण्डों की करें सैल ।। साहिब जी

क मरते मरते जग मुआ, मरन ना जाना कोये ।
ऐसी मरनी ना मरा, बहुरि ना मरना होये।। साहिब जी

231 ऐसी अवस्था जब मिले, आत्म तन सूं हो बाहिर ।
ऐसी अवस्था पाने पर, मन सूं आत्म बाहिर।। साहिब जी

232 अनुभव आत्मां को लागे, अब निज की हो पहचान ।

गीता अमृत सार वे नाम सुरति धारा
पूर्ण सतगुरू बिन संभव नहीं, सार नाम सूं होता काम।। साहिब जी

233 दसवें द्वार में पवन का ताला, सार नाम सूं खुले उसी पल।
अति कठिन है द्वार का खुलना, सतगुरू कृपा सूं खुले हर पल।। साहिब जी

234 साहिब साहिब मत रट तूं, सुरति सूं सिमरो नाम ।
सुरति प्राण जब एक हों, सार नाम सूं बने सब काम।। साहिब जी

235 प्रीतम को पत्तियां लिखूं, जो रहते परदेस ।
सुरति में रहते साहिब हर पल, उनको कोन संदेस।। साहिब जी

236 त्रुटि कोई नहीं तहां, मन माया के उस पार ।
मन बुद्धि का काम तहां ना, सुरति सूं उस पार।। साहिब जी

237 मार्ग ज्ञान जग में दो ही जानो, एक कर्मफल एक पूर्ण मोक्ष ।
निरंकार के लोक में कर्म फल, सतगुरू मिले तो पूर्ण मोक्ष।। साहिब जी

238 परमात्मां तथा कालपुरूष, भिन्न भिन्न ना तूं जान ।
ये दोनों तो एक हैं, सतपुरूष को भिन्न तूं जान।। साहिब जी

239 परमपुरूष सतपुरूष ही का नाम है, अमरलोक स्थान ।
हंसा हर जीव वहां से आया, काल देस बना बंधन स्थान ।। साहिब जी

240 दशरथ पुत्र राम से पहले, राम नाम का ध्यान ।
तीन राम व्यावहार जान, चोथा राम निज ज्ञान।। साहिब जी

क एक राम दशरथ घर डोले, एक राम घट घट बोले।
एक राम का सकल पसारा, एक राम त्रिभुवन से न्यारा।। साहिब जी

241 साकार राम दशरथ घर डोले, निरंकार राम घट घट बोले ।

बिंदु राम का सकल पसारा, निरालम्भ राम ही सब से न्यारा।। साहिब जी

242 संसार साहिब सतपुरूष ना जान सका, हंसा रूप आधार ।
पूर्ण मोक्ष कालपुरूष नहीं जाने, तांहि तो दुख विच संसार।। साहिब जी

243 सुरति आत्म सात सुरति का अंग है, हृदय में वासा पायें ।
आत्म हृदय में नांहि, आज्ञा चक्र में वासा पायें।। साहिब जी

244 तीन लोक में सब हैं अटके, अच्छे बुरे सारे ही अटके जान ।
जो यह भेद नहीं जानता, सो नर काल जाल में अटका जान।। साहिब जी

245 तीन लोक में काल का राज है, चौथा लोक अमर निर्वाण ।
ताको जाने संत जन, सात तन चक्र सूं नहीं निर्वाण।। साहिब जी

246 धर्म अधर्म अमर लोक में नांहि, पूजा पाठ और दान ।
ऊंच नीच जात पात कुछ नांहि, वो धरती देस महान।। साहिब जी

247 तीर्थ मूरती सेवा पूजा दान, नांहि कर्म विस्तार ।
बिन सतगुरू कोई भेद ना पावे, भ्रम में पड़ा सब संसार।। साहिब जी

248 साकार कहुं तो माया विच, निरंकार अंदर बिन जाने नांहि ।
अमर देस है रहनी संतों की, बिन सतगुरू कोई जाने नांहि।। साहिब जी

249 'वे नाम' आया सतलोक से, हर एक को देत पुकार ।
आओ चलें सतलोक को, साहिब देत पुकार।। साहिब जी

क दसवें द्वार से जीव जब जाई, स्वर्ग लोक में वासा पाई ।
ग्याहंरवें द्वार से प्राण निकासा, अमरलोक में वासा पाई।। साहिब जी

क जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाये।

सुरति समानी सब्द में, वाको काल ना खाये।। साहिब जी

250 सतगुरू बिन नांहि मूल सब्द, जो मन माया सूं पार ।
सब्द बिन वैराग ना, बिन वैराग ना उभरे प्यार।। साहिब जी

251 प्राकृति बाहिर वह सब्द है, अग़म अचिंत अपार ।
अनुभव सहज समाधि में, बिन सतगुरू होत ना पार।। साहिब जी

252 मन वाणी सूं पार है, सार नाम की दात ।
मन माया सब छूटते, जब सतगुरू देता दात।। साहिब जी

253 सुरति निरंतर सब्द में, सुरति सूं पकड़ें तार ।
निरति आती प्राण संग, सब्द मिलावे दोनों ईक धार।। साहिब जी

254 सब्द सात सुरति इक करे, आत्म हंसा रूप ।
मन माया हंसा वश ना कर सके, देख सब्द का रूप।। साहिब जी

255 श्री कृष्ण अर्जुन को वर्णन यूं करें, मुझ में धरो ध्यान ।
मुझमें ध्यान डाल दो, सब तजो तो मुझमें समाओ आन।। साहिब जी

256 'वे नाम कहें' मन मुख सूं सिमरन, मत कीजिए मेरे भाई ।
सतगुरू सूं तुम जान लो, सुरति सूं काम लो मेरे भाई।। साहिब जी

257 मन मुख सूं जाका स्मिरण करो, उसी में जा समाये ।
तन तज उसी लोक में जाए, पुण्य भोग इसी लोक में आये।। साहिब जी

258 अर्जुन सदैव कृष्ण चिंतन करो, कर्तव्य का पालन तब आये ।
कर्मों को मुझ में समर्पित करो, मन बुद्धि मुझ में स्थित हो जाये।। साहिब जी

259 श्री कृष्ण अर्जुन सूं कहें, परम पुरूष भौतिक प्राकृति सूं पार ।

उनके तेज को कौन वर्णन करे, वाणी सूं हैं पार।। साहिब जी

260 आत्म परमपुरूष का है अंश, अमरपुर निजघर जान ।
हंस–आत्म बाल के अग्र भाग के, दस हज़ारवें अंश के सम जान।। साहिब जी

261 भक्ति भक्ति सब कोई कहे, भक्ति का ना जाने भेद ।
पूर्ण भक्ति तब मिले, जब सार नाम का जाने भेद।। साहिब जी

262 प्यारो संत की भक्ति बिना, मृतक जान संसार ।
सतगुरू की दात बिना, कैसे जागे संसार।। साहिब जी

263 जब लग नाता जात धर्म का, भक्ति ना प्रकटे कोये ।
रिश्ते नाते तोड़ दो, भक्ति प्रकटे तोये।। साहिब जी

264 आपा खोवे आप को जाने, तब जागा कहलाये ।
मन माया में सुरति रहे तो, सोया ही कहलाये।। साहिब जी

265 श्री कृष्ण कहे नित समझाई, ध्यान सूं अंदर को जाई ।
अन्तर्यामी सब जानता, निज को सौंप गुरू चरणन जाई।। साहिब जी

266 वेदों का ज्ञान ओईम का उच्चारण, सन्यास कहे ब्रह्म उच्चारण ।
दोनों से कोई पार ना हो सके, बिन सार नाम सुरति ध्यान।। साहिब जी

267 निष्काम भाव सूं सतगुरू भक्ति करो, मोक्ष का पावो दान ।
सतगुरू सम जग दाता नहीं, जो देता मोक्ष का दान।। साहिब जी

क ऋषि मुनि त्रिदेव आदि ये, पांच शब्द में अटके ।
मुद्रा साध रहे घट भीतर, फिर औंधे मूंह लटके।। साहिब जी

ख पांच शब्द और पांचों मुद्राएं, सोहि निष्चय माना ।

आगे पूर्ण पुरूष पुरातन, ताकि खबर ना जाना।। साहिब जी

ग नौ द्वारे संसार सब, दसवां योगी साध ।
एकादश खिड़की बनी, जानत संत सुझान।। साहिब जी

268 सतगुरू बिन भ्रम छूटे नांहि, कोटि कर्म करो मेरे भाई ।
सतगुरू बिन चाहे ध्यान करो, मोक्ष मिले ना भाई।। साहिब जी

269 लौभी सूं बुरा कोई है नांहि, आशा तृष्णा संग साथ ।
अधर्म काम सब लौभ से, छूटे ना काल का साथ।। साहिब जी

270 ये तन विष की बेलड़ी, सतगुरू अमृत की खान ।
तन मन दिए जो संत मिले, संत कृपा सूं जान।। साहिब जी

271 सतगुरू जैसा दाता नहीं, तूं सुरति सूं कर विचार ।
मन पल पल भरमा रहा, मत मन सूं कर विचार ।। साहिब जी

272 पारस संतन का मेल ना, सतगुरू की महिमां महान ।
पारस तो लोहा कंचन करे, सतगुरू साधक को करे आप समान।। साहिब जी

273 सगुन भक्ति करता संसार है, निर्गुण योगेश्वर सुन्न के पार ।
परम पुरूष दोनों के पार है, सतगुरू जाने उस पार।। साहिब जी

274 भक्ति का लक्ष्य तो मोक्ष है, जिस सूं नर हो पार ।
सगुन निर्गुण में पूर्ण मोक्ष ना, सार नाम सूं हंसा पार।। साहिब जी

275 मुक्ति मुक्ति हर कोई कहे, विरला जन जाने भेद ।
वह देश तीन लोक से पार है, सतगुरू सूं जानो भेद ।। साहिब जी

276 पांच तत्व का तन रचयो, पाया संतन भेद ।

इस में कुछ सतलोक का, सात सुरति का भेद ।। साहिब जी

277 हृदय में सुरति वास है, प्राण में निरति समाई ।
सार नाम में दोनों का जोड़ है, हंसा रूप बन जाई।। साहिब जी

278 भृंगा मत सतगुरू के पासा, इस मत सूं नर ले जगाये ।
सुरति सूं हंसा करे, पल में साधक निजधाम को जाये।। साहिब जी

279 सतगुरू महिमां लखी ना जाये, पढ़ी ना जाये ।
उनकी महिमां महान है, सच्चा साधक ही जान पाये।। साहिब जी

280 ओम, ब्रह्म तथा भगवान कृष्ण, परस्पर मित्र नांहि ।
ओम ब्रह्मण्ड ध्वनि गूंझ रही, योगी धरते ध्यान ध्वनि मांहि।। साहिब जी

281 गीता योग भक्ति संदेश की, हर योग में देती संदेश ।
पांच प्रकार से भक्ति में, ध्यानी देते कृष्ण संदेश।। साहिब जी

282 शांत भक्त, प्रेमी भक्त, और दासा रूप में भक्ति युक्त ।
पूर्ण प्रेम भक्ति में युक्त हुआ, ओम नाम में भक्ति युक्त।। साहिब जी

283 जो कृष्ण ध्यान में रह कर, ओम का करता जाप ।
वह परम सिद्धि प्राप्त कर, गौ लोक को जाता आप।। साहिब जी

क साहिब के दरबार में, कर्ता केवल संत ।
कर्ता केवल संत, साहिब भी संतन साथ।। साहिब जी

ख कोटि नाम संसार में, तिन से ना मुक्ति होये ।
मूल नाम जो गुप्त है, जाने विरला कोये।। साहिब जी

284 सजीवन नाम सतगुरू के पासा, सतपुरूष से ही मिल पाये ।

सजीवन नाम मुक्ति नाम है, जो पाये निजघर जाये।। साहिब जी

285 सार नाम जगाता सोए को, तीन लोक सूं करता पार ।
काल का संग छूटता, जन्म मरन सूं होता पार।। साहिब जी

286 सार नाम काया पलट, देवे आत्म को हंसा रूप ।
ऐसा सजीवन नाम है, जिस दिया सत्य का रूप।। साहिब जी

क प्रथम पूर्ण पुरूष पुरातन, पांच शब्द उच्चारा ।
सोंह, सत, ज्योति निरंझन कहिए, रंरकार औंकारा ।। साहिब जी

क शब्दै धरती शब्द आकाश, शब्दै शब्द भया प्रकाश ।
सकल सृष्टि है शब्द के पीछे, नानक शब्द घट घटे आछे।। साहिब जी

क शब्दै निर्गुण शब्दै सगुण, शब्दै वेद ब्खाना ।
शब्दै पुनि काया के भीतर, करि बैठे अस्थाना।। साहिब जी

क ज्ञानी योगी पण्डित सब ही, शबदै में अरूझाना ।
पांच शब्द और पांचों मुद्रा, काया बीच ठिकाना।। साहिब जी

व्याख्या :– शब्द ही निर्गुण है, शब्द सगुण भी है । वह शब्द इस में भी है। तन में पांच स्थानों पर वह स्थित है। जैसे ज्योति निरंझन, नैनन मांहि, शब्द औंकार त्रिकुटि है। अस्थाना, सोंह शब्द, भंवर गुफ़ा अस्थाना, सत शब्द सहस्त्रसार चक्र, रंरकार शब्द दसवें द्वार में मिलता है ।

287 जो ना माने सतगुरू वचन को, अनुभव सूं श्रद्धा ना जागे।
वह जन सहज अवस्था ना पा सके, मांगों में रूचि लागे।। साहिब जी

288 परमपुरूष पांच शब्द से आगे, पूर्ण सतगुरू भेद यह जाने ।
बिन सतगुरू कृपा के, कैसे कोई सत्त सब्द को जाने।। साहिब जी

289 जब भौतिक ब्रह्मण्ड का, प्रलयः होत ईक साथ ।
आत्म रूप ब्रह्माण्ड में, शून्य तत्व में रहते साथ।। साहिब जी

290 तन छूटा मन साथ है, मन छूटन का नहीं उपाये ।
बिन सार नाम की दात के, कोई मन सूं छूट ना पाये।। साहिब जी

291 ब्रह्मां का चार अरब 32 करोड, वर्ष का एक दिन लो जान ।
इतनी ही बड़ी ब्रह्मां की रात्री, छूटन का मिले ना दान।। साहिब जी

292 जब जब ब्रह्मां का दिन हो, जीव प्रकटाये हर लोक ।
ब्रह्मां की रात्रि के समय, सब माया विलीन हर लोक।। साहिब जी

श्री कृष्ण कह रहे हैं :– अध्याय 8 श्लोक 20
यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति

293 इन तीन लोक से आगे, एक अन्य अव्यक्त प्रकृति तूं जान ।
जिस का नाष कभी नहीं, अमर लोक वह जान ।। साहिब जी

294 वे नाम उसी लोक का वर्णन करे, उसी का दे पैग़ाम ।
सतपुरूष आप ही वह लोक है, सभी उन्हीं का अंश लो जान।। साहिब जी

295 इन तीन लोक में, हर ईक बंधया बहु बंधन ।
मन ने किया सब काम है, बिन सतगुरू कैसे छूटे ये बंधन।। साहिब जी

296 इस जग में तन धार, सुखिया कोई है नांहि ।
मन माया में दुख बिन कुछ ना, आत्म मैली नांहि।। साहिब जी

अमरलोक

297 सतगुरू सुरति सूं देखें, साहिबन का सुरति निजदेश।

सूरज चांद तहां ना, तहां ना बिन हंसा प्रवेश।
धरती आकाश पवन तहां ना, नांहि पंच तत्व प्रवेश।
जप तप तहां ना, जानो सार नाम का अमर देश।
तहां से संत जो आवें, देवें साहिबन सुरति संदेश।। साहिब जी

298 बिन मन मान निजघर प्यारो, चारों ओर उजियारा।
बिन बोल भाषा सुन पाओ, सुरति सूं उच्चारा।। साहिब जी

299 ज्योति लगाये ब्रह्म जहां दरपे, आगे अगम अपारा ।
कहे 'वे नाम' तहां रहन संतों की, बतावे सतगुरू प्यारा।। साहिब जी

300 अमरलोक हंसों का प्यारा, हद अनहद के पारा ।
आत्म रूप हंसा सब संतों ने जाना, कितना देश है प्यारा।। साहिब जी

301 सत्त लोक जहां पुरूष विदेही, वह साहिबन करतारा ।
आदि ज्योत और काल निरंझन, तहां ना इनका पसारा।। साहिब जी

302 जहां जाय फिर हंसा ने, भव सागर को धारा ।
संतो सो निज देश हमारा, सतपुरूष लोक प्यारा।। साहिब जी

303 पवन ना पानी पुरूष ना नारी, हद अनहद तहां नहीं प्यारा ।
ब्रह्मां ना जीव ना तत्व की छाया, तहां नहीं दस ईन्द्रि पसारा।। साहिब जी

304 ज्ञान ध्यान का तहां न लेखा, पाप पुण्य तहां नहीं देखा ।
तहां नहीं ज्योति निरंझन राई, अक्षर अचिंत तहां ना जाई।। साहिब जी

305 काम क्रौध मद लोभ ना कोई, तहां हर्ष शोक ना भानो ।
नाद बिंद तहां ना पानी, नहीं तहां सृष्टि चौरासी जानी।। साहिब जी

306 पिण्ड ब्रह्माण्ड का तहां ना लेखा, लोका लोक तहां नहीं देखे ।
आदि पुरूष तहां अस्थाना, पूर्ण संत बिना एको नहीं जाना।। साहिब जी

307 पांच तत्व गुण तीन तहां ना, नहीं तहां सृष्टि् पसारा ।
तहां न माया कृत प्रपंच प्यारो, नांहि लोग कुटुम्भ परिवारा।। साहिब जी

308 आशा तृष्णा नहीं प्रेम सुरति प्यारो, सुख दुख का नहीं संचारा ।
आदि व्याधि उपाधि नांहि, नांहि पाप पुण्य विस्तारा।। साहिब जी

309 ऊंच नीच कुल की मर्यादा, आश्रम वर्ण विचारा ।
धर्म अधर्म तहां कछु नांहि, संयम नियम अचारा।। साहिब जी

क अति अभिराम धाम सर्वोपरि, शोभा अगम अपारा ।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, तीन लोक से न्यारा।। साहिब जी

310 मेहरमी होये सो जाने संतो, ऐसा देश हमारा ।
अवधू बेग़मपुर देस हमारा, सतपुरूष लोक प्यारा।। साहिब जी

311 तहां नांहि यम का क्लेशा, रचना बाहिर वो देसा ।
ब्रह्मां विष्णु महेश तहंवा ना, ऋषि मुनि तहां ना प्रवेसा।। साहिब जी

312 तीन लोक में जन्म मरन क्लेशा, अमर लोक जन्म मरन ना देखा ।
कृष्ण कहत उस देश का लेखा, जो वहां जाये फिर जन्म ना लेता।। साहिब जी

313 एक हज़ार युग मिल कर, ब्रह्मां का एक दिन कहलाये ।
एक हज़ार युग मिल कर, ब्रह्मां की एक रात्रि कहलाये।। साहिब जी

314 ब्रह्मां के दिन शुभारम्भ में, तन मन मिलता साथ ।
पर रात्रि होने पर, तन छूटे मन का जाल रहे साथ।। साहिब जी

315 परमपुरूष और ब्रह्मां के, मध्य में सतगुरू धाम ।
सब्द की डौर सतगुरू हाथ, साधक को देवे दान।। साहिब जी

316 सार नाम सतपुरूष है वासा, ले चले संग निजधाम ।
यदि ध्यान सार नाम में, संग ले चले आत्म हंस महान।। साहिब जी

317 सार नाम तीन ढंग से, उपर से, कान से, धूं धूं सब्द से ।
धूं धूं करता आता है, आत्म ले चले संग निजधाम।। साहिब जी

318 सुरति केवल सब्द में, तन सूं नाता ना ।
वैर छोड़ माया ध्यान सूं, मन सूं नाता ना।। साहिब जी

319 सतगुरू संग प्रीत ऐसी लागी, यम सूं ले बचाये ।
और कुछ दरशे नहीं, निज घर संग ले जाये।। साहिब जी

320 यही अलख लोक है भाई, अलख पुरूष इसे जानो भाई ।
अश्वन सूर्य रोम संग नांहि, इस राज़ को जानो भाई।। साहिब जी

321 महांशून्य घाटी बड़ी भयंकर, बिन सतगुरू नहीं पार ।
विहंगम चाल हमारी, सतगुरू कृपा सूं पार।। साहिब जी

322 हे भरत पुत्र श्रेष्ठ ! विभिन्न कालों को जान ।
संसार से प्रयाण बाद, पुनः आवन ना जान।। साहिब जी

323 जो कर्ता भगवान को मानता, उसे डर कोई ना ।
वह सब कृष्ण पर छोड़ता, पाता कृष्ण धाम कुछ और ना।। साहिब जी

324 जो अनन्य भक्त ना, कर्मयोग ज्ञान योग हठ योग में अटके ।
निज को कर्ता जानते, जन्म मरन में रहते अटके।। साहिब जी

325 विषयों में सभी जग जागे, योगी इस में सोये ।
छोड़ के सब की कामना, इच्छा रहित नर होये।। साहिब जी

326 अहंकार ममता सब त्याग दे, सुरति में ध्यावें सब कोये ।
सार नाम को समझ ले, मोह माया सूं छूटे सब कोये।। साहिब जी

327 अर्जुन कहे दयालु प्रभु प्यारे, कृपा कर समझाओ ।
कर्म उत्तम या त्याग है, इस का भेद बताओ।। साहिब जी

328 श्री भगवान ने कहा :–
अर्जुन तुम ईर्षा रहित हो, तुम्हें मैं देता भेद ।
जो निष्ठा प्रेम से गुरू सेवा करे, उसे तीन लोक डर ना ।
भगवन यह सब देखते, दुख सुख का भेद कुछ ना।। साहिब जी

329 पुरूष हमारा एक है, हम नारी बहु अंग ।
उसी एक सूं प्रेम कर, पूर्ण मोक्ष का अंग।। साहिब जी

330 बिन ज्ञान नांहि भक्ति है, ज्ञान भक्ति का प्राण ।
बीत राग में भक्ति है, भक्ति बिन अज्ञान।। साहिब जी

331 बिन ज्ञान भक्ति करे, सो अंधा जग जीव ।
भक्ति तत्व नहीं समझा, फिर कैसे पावे पीव।। साहिब जी

332 स्वतः सहज वह सब्द है, अगम अचिंत अपार ।
अनुभव सहज समाधि में, सतगुरू चरण आधार।। साहिब जी

333 प्राकृति पार वह सब्द है, सार सब्द कह सोये ।
सब सब्दों में सब्द है, सब का कारण सोये।। साहिब जी

334 मन वाणी से पार है, साहिब सब्द स्वरूप ।

सुरति में जो धार ले, पावे पुरूष अनूप।। साहिब जी

335 बाहिर मिट्टी भीतर विचार, तां से मनुष्य बना ।
जहां ना मिट्टी ना ही विचार, तब हंसा बिन मना।। साहिब जी

336 मन भीतर का घर तुम जानो, तन बाहिर का घर ।
ना जहां मन ना जहां तन, अमर धाम हंसा जाए निजघर।। साहिब जी

337 अब नांहि तन मन नांहि, दोनों सूं छूटा संग ।
अब आत्म हंसा हो गई, जाई बसो निजधाम।। साहिब जी

338 तन मन से लेन ना देन प्यारो, यही मेरी पहचान।
तूं तो कुछ कहता नांहि, देता नांहि कोई पहचान।। साहिब जी

339 दुख दर्द और रोग़ में, मुझे ही प्रकट तूं जान ।
अब तुम चुप्पी धार लो, कोई धरे ना ध्यान।। साहिब जी

340 सुख सम्पदा में मैं नांहि, उसी पल सतगुरू पहचान ।
बिन जाने भटके सदा, काल का बाण महान।। साहिब जी

341 तुम हर ओर से कहते हो, मैं कहां था ख़बर कैसे हो।
तूं तो अभी है ही नहीं, फिर देखना कैसे हो।। साहिब जी

342 मंगते से क्या मांगना, मिलता उसी सूं बिन मांगे देता जो ।
भक्त कभी नहीं मांगता, बिन मांगे पाता वो।। साहिब जी

343 भक्त मांगे तो बात गई, नाता छिन्न भिन्न हो गया।
मांगे तो सेतु गिरा, प्रीत बहाना हो गई।। साहिब जी

344 बिन मांगे मोती मिलें, मांगे मिले ना भीख ।

मांगे तो नाता गया, प्रेम में पड़ गई राख़।। साहिब जी

345 तीन बड़े सत्य जीवन के, दो सत्य दिखते हैं नांहि ।
पहला जन्म दूसरा मृत्यु, दोनों में प्रेम सत्य बिन कुछ नांहि।। साहिब जी

346 प्रेम ही आत्मां, प्रेम आनंद तूं जान ।
यह काम सुरति सूं प्रकटे, जीवन खिले फूल समान।। साहिब जी

मीरा बाई कहे :–

म सील संतोख सार सब्द सूं, तुम्हारे भीतर से चले प्रभु का बाण ।
सुरति सार सब्द प्राण में, अधर में मधुर मुस्कान ।
बिन साहिबन मीरां भई बाँवरी, सुरति में पायो सुरति बाण।। साहिब जी

म आओ मन मोहना जी, जीवां थारी बाट ।
खान पान म्हारे नेक न भावो, नैना खुलो कपाट।। साहिब जी

म थे आये बिन सुख न म्हारो, तन मन भयो उचाट ।
मीरा थे बिन भई बाँवरी, हर पल जोति बाट।। साहिब जी

आओ मेरे मन मोहन मैं तुम्हारी बाट जोह रही हूं। तुम्हारे दर्शनों की आस में मुझे खाना पीना भी नहीं सुहाता। नैनों के कपाट हमेशा खुले रहते हैं। रात दिन ऐसा लगता है कि अब तुम आए, अब तुम आये। किन्तु तुम तो कभी नहीं आते। सच कहती हूं कि तुम्हारे आए बिना मुझे सुख मिलने वाला नहीं। मैं बता नहीं सकती कि मेरा हृदय कितना उच्चाट है, मीरा तुम बिन बांवरी हो गई है। मुझे इस प्रकार निराधार मत छोड़ो। दर्शन दे कर मेरी व्याकुलता हरो।

म दर्श बिन दुखन लागे नैन, हर ओर देखें नैन ।
आहट सुनते मेरी छतिया कांपे, मीठी धारो बैन।। साहिब जी

म विरह विथा किस से कहुं री, आरी कर दिया खून ।

सच कहती मैं तुझ हरि सूं, यादों ने छीना चैन।। साहिब जी

म नैन ये मेरे पंथ निहारें, रात भई छेः छेः मास ।
मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे, दुख मेटन सुख देन।। साहिब जी

म दर्श बिन मोहे नींद ना आवे, करवट बदलुं कंई कंई बार ।
नींद ना आवे विरह सतावे, आँख खोलूं कंई कंई बार।। साहिब जी

म पिया बिन मेरी ज्योत मर मंदिर की, अंधकार छाया हर ओर ।
पिया बिन मेरी ज्योत सूनी, जागत रैन दुख छाया हर ओर।। साहिब जी

म या ब्रज में देखयो री, कछु टोना जादु छोना।
ले मटकी सिर चली गुज़रिया, आगे मिले नंद के छोना।। साहिब जी

म वृन्दावन की कुण्झ गलिन में, आंख लगाऐ गयो मन मोहना।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सुन्दर स्याम सुन्दर सलोना।। साहिब जी

पूर्ण सतगुरू श्री रविदास जी को पाने के उपरांत मीरा लिखती हैं :–

म ऊंची चढ़ चढ़ पंथ निहारूं, रोए रोए अखियां राति।
यो सकल संसार जग झूठा, झूठा कुल रा न्याति।। साहिब जी

म दौ कर जोड़या अरज करूं छूं, सुन लो मेरी बाति।
यो मन मेरो बड़ो हरामी, ज्युं मदमाता हाथी।। साहिब जी

म पल पल पिव को रूप निहारूं, निरख निरख सुख पाति।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरण चित राति।। साहिब जी

विरह में व्याकुल मीरा पिया मिलन (सतगुरू) को प्रार्थना करती है कि मैं हर समय आपके आने की प्रतीक्षा करती हूं, तुम्हारे दर्शन के लिए रोते रोते मेरी आंखें लाल हो गई हैं, मेरा चंचल मन सतगुरू मिलन में बाधा पहुंचा रहा है, हे सतगुरू ! मेरा मन बड़ा चंचल है, यह सारा संसार झूठा है। इस में कुछ भी सत्य नहीं है। जितने भी संसार में रिश्ते नाते हैं वे सब झूठ हैं, जात पात धर्म पूजा पाठ सब झूठ है, यह सब जीव को भरमाते हैं और मनुष्य को सच्चे साहिब से दूर ले जाते हैं। मन एक मदमस्त हाथी की तरहं है जो जीवों को दुख देने में लगा है । मन और काल निरंझन एक ही जानो, मन और माया एक ही जानो, यह सारा संसार मन ही की रचना है, इस में कुछ भी सच्चा नहीं है।

म दीपक से प्रीत लगी पतंग की, वार फेर जिय दे।
मीरा को प्रीति लगी सतगुरू सूं, सतगुरू चरण चित दे।। साहिब जी

म सुरति सुहागन नार, कुंआरी क्युं रही।
सतगुरू मिलया नांय, कुंआरी बीश यूं रही।। साहिब जी

म सतगुरू बेगिमिलाप, हिन में सावा मोदिया।
झटपट लगन लखाय, व्याव बेगो छड़िया ।। साहिब जी

म अड़द सुड़द के बीच, रत्न चंबरी रची।
हर हतलेवा जोड़, सुरत फेरा फरे।। साहिब जी

म भाभल दीया डाइजी रतन धन चार पदार्थ प्रेम रा।
गेणी म्हारे ज्ञान री, पेशया हार नाम रा।। साहिब जी

म अब म्हुं चढ़ गई, ढोल बजाय घर चली आपनो।
भंवर गुफा रे माय पुरूष एक सार रे।
सुरत कमल सतगुरू संग, जा पहुंची निजघर र।। साहिब जी

मीरा अमर लोक जा पहुंची संग साहिब के। मन माया का संग छूट गया, आत्मां हंसा हो गई, अतः कुंआरी हो गई । आत्मां का साहिब से

मिलना, आत्मां का साहिब से विवाह कहलाता है, निजधाम में सभी हंस हैं व आत्मां से पूछते हैं कि तूं अभी तक कुंआरी क्यों रही, इस पर (आत्मां) हंसा उत्तर देता है कि वह कंई जन्मों और युगों तक कुंआरी इसलिए रही और अपने घर सतलोक नहीं पुहंच पाई क्योंकि उसे कोई पूर्ण सतगुरू नहीं मिल पाया था । जब ही पूर्ण सतगुरू संत श्री रविदास जी मिले, वह हंसा बनी और अपने निजघर सतलोक पहुंच गई । उसे प्रेम रूपी रत्न दहेज में मिला, ज्ञान के गहने, और सतगुरू ने सार नाम (मूलनाम) रूपी हार दिया । सब्द रूपी ढोल सुरति से ही बजाया जाता है, वह आत्मां लोक लुकांतरों की यात्रा करती करती सतपुरूष संग निजधाम जा पहुचती है ।

साहिब रविदास जी की वाणी अनुसार :–

र रविदास जपै राम नामा ।
मोहि जम सिऊ नांही कामा ।। साहिब जी

र चौथे लोक के प्यारे राम न्यारे राम जी ।
जय राम जय रा जय राम जी ।। साहिब जी

र सार नाम की दात को पालो, उसी में राम रे ।
जय राम जय राम जय राम जी ।। साहिब जी

र साची प्रीति हम तुम सिउ जारी ।
तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी।। साहिब जी

र कहि रविदास बाजी जगु भाई ।
बाजीगर सउ मोहि प्रीति बनि आई।। साहिब जी

र हरि सा हीरा छाड़ि के, करे आन की आस।
ते नर जमपुर जाहिंगे, सतभाषै रै दास।। साहिब जी

संत मीरा जी कहती हैं :–

म जब कछु पावै तब गरबु करतु है ।
माइया गई तब रोवन लगतु है।। साहिब जी

म जन रविदास राम रंगि राता।
इउ, गुर परसादि नरक नहीं जाता ।। साहिब जी

म प्रेम की जेवरी काध्उि तेरो जन।
कहि रविदास छुटिबो कवन गुण।। साहिब जी

म सतसंगति मिलि रहिए माधउ, जैसे मधुप मखोरा।
जाती ओछा पाती ओछा, ओछा जनमु हमारा ।
राजा राम की सेव ना कीन्ही, कहि रविदास चमारा ।। साहिब जी

म भर मारी रे बाण मेरे सतगुरू, विरह लगाए के।
पावन मन कानन कहिरा, सूझत नहीं नैना ।। साहिब जी

म खड़ी खड़ी रे पंथ निहाऊं, मरम ना कोई जाना ।
सतगुरू औषध ऐसी दीनी, रूप रूप भई चैना ।। साहिब जी

म सतगुरू जस्या बैद न कोई, पूछो भेद पुराना।
मीरा रे प्रभु गिरिधर नागर, अमरलोक में रहना ।। साहिब जी

संत मीरा ने अपने इस पद में कहा है कि मेरे सतगुरू (रविदास जी परमहंस) ने मुझे सब्द रूपी बाण मारा जिस ने मुझे जीवित मार दिया है। इससे मीरा के अंदर का मन और माया का लोभ खत्म हो गया है । मेरी आत्मां की ज्योत जग गई है। इस भाव को प्रकट करते हुए कह रही है कि मेरे सतगुरू ने विरह के तीर से मुझे घायल कर दिया है। मेरे अहंकार होमा को खत्म करके प्रेम से मेरा ह्रदय भर दिया है। मैं अपने तन की सुद्धि खो बैठी हूं और केवल अपने सच्चे साहिब (सतपुरूष) मिलन का अनुभव कर रही हूं, जो कि इन तीन लोक से आगे अमरलोक के मालिक हैं। हम हंसा उन्हीं का अंश हैं ।

347 यह लोक नहीं तेरा हंसा, यह लोक नहीं तेरा ।
तूं तो अमरलोक का वासी, हंस रूप है तेरा ।। साहिब जी

348 तूं तो साहिब प्यारे का अंश, माया रूपी धन नहीं तेरा ।
काल जाल में आकर पड़ा, भूला निजघर जो तेरा ।। साहिब जी

349 चल हंसा तूं सतलोक को, जो है निजघर तेरा।
काल जाल में आकर फंसा, हंसा रूप जो तेरा ।। साहिब जी

350 सतगुरू बिन कोई पार ना पावे, कोटि कर्म करावे मन तेरा।
मन माया का बंधन तोड़े, सार नाम काटे बंधन तेरा ।। साहिब जी

कृष्ण जी कहते हैं :–

351 जो यात्री धुए, रात्रि, कृष्णपक्ष दिवंगत होत ।
स्वर्ग में करे प्रवेश, फिर फिर जन्म वे लेत ।। साहिब जी

352 विहंगम चाल जो कोई जाये, अमरलोक में वासा पाऐ।
जन्म मरण सूं छूटे वह, हंस बन अमर हो जाऐ ।। साहिब जी

353 भक्तजन दोनों मार्ग जानते, मोह माया सूं दूर।
जो भक्ति में सदैव स्थिर, काल जाल सूं दूर ।। साहिब जी

354 जप तप दान साकाम कर्म, फलों से वंचित ना हो।
वेदों का अध्ययन यज्ञ तप, चार मोक्ष सूं वंचित ना हो ।। साहिब जी

355 ज्ञान रहित सन्यास से, कभी ना मुक्ति होये।
कर्म बिना इक क्षण भी, जी ना सके नर कोये ।। साहिब जी

356 मन माया के वश पड़ा, कर्म कमावे सब कोये।

आत्मां को मन सूं बाहर करे, सुरति रूप देखे हर कोये ।। साहिब जी

357 ऐसे ज्ञानी नर को, कर्म का लेप ना होये ।
आत्म सुरति में आनंदित रहे, सुख दुख लगे ना कोये ।। साहिब जी

358 फल की आशा तृष्णा त्याग कर, सार सब्द में ध्यान।
मोह गया माया गई, रिश्ते नातों का ध्यान ।। साहिब जी

359 सदगुरू प्रेम में डूबी सुरति, सब्द प्राण में ध्यान ।
सदगुरू वाणी सुने, सुरति में सब्द ध्यान ।। साहिब जी

360 निज स्वभाव सरल करे, सदगुरू प्रेम में डूबा हो।
मिलन की प्यास हो, पाने की आकांक्षा खोई हो ।। साहिब जी

361 कृष्ण गोपियां छोड़, मथुरा किया प्रस्थान ।
गोपियां कृष्ण संग देख कर, उद्धव हुए हैरान।। साहिब जी

362 सदगुरू सूं बिछोड़ा नांहि, विरह अग्नि सूं सदगुरू साथ।
सदगुरू प्रेम सुरति साथ में, हर पल सतगुरू संग साथ ।। साहिब जी

363 मेरी लागी लगन सतगुरू चरणन में, और न कुछ सुरति में आवे।
सतगुरू चरणन ध्यान, दर्श बिन मोहि चैन ना आवे ।
झूठा मन माया सूं प्रेम, मेरी लागी लगन सतगुरू दर्श दे जावे।। साहिब जी

364 आत्म ज्ञान बताओ सार सब्द, बात कहो सांचे घर की।
जिनको सतगुरू पूरा मिलया, खबर सुनो निःअक्षर दात की।
'वे नाम' कहे, मेरी लागी लगन सतगुरू चरणन की ।। साहिब जी

भगवान कृष्ण जी कहते हैं :–

365 जिनकी सुरति सतगुरू संग लागी, छूटे सब कर्म संताप।
भक्ति की शुद्धि कारिणी, भक्ति प्रकटे कटे संताप ।। साहिब जी

366 सतगुरू सब्द अमृत धारा प्यारो, काटे काल क्लेश।
भक्ति योग अति सुखदाई, बंधन काटे सुख संदेश ।। साहिब जी

367 श्रद्धाहीन जो भक्ति करे, मुझे नहीं पावे वह।
जन्म मृत्यु का जाल ना टूटे, फिर फिर जग आवे वह।। साहिब जी

368 श्री कृष्ण नाम यश लीलाऐं, भौतिक ईन्द्रियां ना देत ज्ञान।
जो नर भक्ति युक्त ईच्छा, भगवन होत पहचान ।। साहिब जी

369 तीन लोक श्री कृष्ण दर्शायो, चौथे लोक में व्याप्त नांहि।
मनुष्य योनि में मन रूप व्याप्त, जीव भरमाहे तांहि ।। साहिब जी

370 परम ईच्छा अधीन सब, पत्ता पत्ता भी परम ईच्छा अधीन ।
परम ईच्छा सूं प्यारो उत्पन्न हुआ, मरना जीना ईच्छा अधीन।। साहिब जी –
371 सतगुरू पालो प्यारो, आशा तृष्णा का छूटे संग।
अब तुम आत्मिक हो गये, कर्म का टूटा संग ।। साहिब जी

372 हे कुन्ती पुत्र ! कल्प अंत पर, प्राणी मुझ में करे प्रवेश।
आता कल्प आरम्भ पर, पुनः उत्पन्न आदेश ।। साहिब जी

373 संपूर्ण विराट जगत, मेरे अधीन अर्जुन तूं जान।
मेरी ईच्छा सूं प्रकटे, मेरी ईच्छा सूं विलीन ।। साहिब जी

374 हे धनन्जेय ! सब कर्म सूं मुक्त, इन सूं लेन न देन ।
सब प्राकृति मेरी शक्तियां, एक उदाहरण ले जान।। साहिब जी

375 मेरे अवतरित होने पर, मूर्ख ना करे पहचान।

वह मेरा प्रभु रूप ना जानते, दुख का कारण जान ।। साहिब जी

376 कुछ नर भगवान कृष्ण को, पारब्रह्म नहीं मानते।
ऐसे नर भक्ति फल सूं दूर, काल निरंझन नहीं जानते।। साहिब जी

377 असुरी दुष्ट कामी, कृष्ण शरणी नहीं आते।
किसी सूं जाग न पाते, सतगुरू सूं ना करते हेत।। साहिब जी

378 सतगुरू लोक सुरत कमल है, निजधाम इस लोक के मध्य।
जन्म मृत्यु तहां न कोई, त्रिकुटि में धरो ध्यान ।। साहिब जी

379 एक रस जो रहे प्यारो, उसे भगत तूं जान।
मनसा वाचा कर्मना, सारे कार्य सतगुरू सेवा में ध्यान ।। साहिब जी

380 कुछ लोग ज्ञान और यज्ञ द्वारा, भक्ति करें श्री कृष्ण महान ।
दूजा कोई ध्यान में नहीं, जा समावे धाम श्री कृष्ण महान।। साहिब जी

381 जो कोई नर एकांत ध्यान में, धारें कृष्ण सुरति में ध्यान।
श्री कृष्ण विश्वरूप जान कर, हर पल उन्हीं में ध्यान।। साहिब जी

श्री कृष्ण कहे :—

382 मैं ही कर्म काण्ड, मुझे ही यज्ञ पित्तर तर्पण तूं जान।
औषधि दिव्य मन्त्र अग्नि आहुति, मेरा किया तूं जान।। साहिब जी

383 मैं ही ब्रह्माण्ड का मात पिता, आश्रय पितामहः जान।
मैं शुद्धि कर्ता औंकारा, मुझमें ही चारों वेद ले जान।। साहिब जी

384 मैं ही लक्ष्य पालनकर्त्ता, सच्चा धाम प्रिय मित्र जान।

मैं ही सृष्टि् तथा प्रलयः, सब का आधार अमर बीज ले जान।। साहिब जी

श्री कृष्ण जी बोले हे अर्जुन :—

385 मैं ही तप प्रदान करता, वर्षा करता रोकता ले जान ।
अमरत्व तथा साक्षात मृत्यु, सत असत्त मोहे जान।। साहिब जी

386 वेदों का ज्ञाता, सोमरस सेवन, मेरी भक्ति में लीन ।
पाप कर्मों से शुद्ध हो, ईन्द्र स्वर्ग धाम लीन।। साहिब जी

387 स्वर्गिक फल को भोग कर, पुण्य कर्मों का फल क्षीन।
मृत्यु लोक में पुनः कर्म, धर्म में होता लीन ।। साहिब जी

388 जो भी तीनों वेदों के ज्ञान में, ईन्द्रिय सुख में लीन ।
कर्म धर्म और जन्म मरन के, चक्र में रहता लीन।। साहिब जी

389 जो अनन्य भाव से मेरे, दिव्य स्वरूप का करे ध्यान ।
उन के हर कार्य को कर के, उनको देता मान ।। साहिब जी

श्री कृष्ण जी बोले हे कुन्ती पुत्र :—

390 जीव जो देवी देव, भक्ति तथा पूजा करें।
मेरी ही पूजा जान, सब त्रुटि—पूर्ण पूजा करें।। साहिब जी

391 जो प्रेम और भक्ति से, पत्तर पुष्प फल जल करे प्रदान।
और श्रद्धा से प्रणाम, प्रेम भाव से करो ध्यान ।। साहिब जी

392 तुम जो कुछ करो खाओ, अर्पित करो दान दो।
और जो भक्ति तपस्या, मुझे अर्पित कर दो ।। साहिब जी

393 मेरा सब कुछ जान करो, जो भी करो तुम काम ।
सब बंधन सूं पार हो, मुक्ति पाने पहुंचो मेरे धाम।। साहिब जी

394 किसी से द्वेष पक्षपात, मैं करता नहीं।
जो भक्ति पूर्वक सेवा करे, उसे दुख कोई नहीं।। साहिब जी

395 योगियों से वही भला, श्रद्धावान जो होये ।
प्रेम भक़्ति में मगन रहे, मेरा प्यारा सोये ।। साहिब जी

396 मेरा राखे आसरा, मुझ में सुरति ध्यान ।
मन को ऐकाग्र करे, प्राण गति में नाम ।। साहिब जी

397 ज्ञान विवेक की सार यह, मैनें दी बतलाये ।
ज्ञान से उत्तम और कुछ, सुरति में ना लाये।। साहिब जी

398 यत्न करे सतगुरू मिले, सुने वचन धीर चित लाये ।
प्रथम वेद शस्त्र का ज्ञान, फिर सतगुरू पार लगाये।। साहिब जी

399 सब घट सुरति सूं भरा, खाली घट ना कोये ।
सार नाम की दात सूं, साहिब जी प्रकट होये।। साहिब जी

400 बहुत गुरू हैं इस जग मांहि, आत्म का कुछ ज्ञान नांहि।
प्रथम ताकी परिक्षा कीजै, बिन जाने दीक्षा आदि नांहि।। साहिब जी

401 उस का काल क्या करे, जो नित जागा होये ।
आत्म मन अधीन चले जब, वचन का उपाए ना कोये।। साहिब जी

क हरि कृपा जो होये तो, नहीं होये तो नांही।
कहे कबीर गुरू कृपा बिन, सकल बुद्धि बह जाहिं।। साहिब जी

402 मोह सबन दुख का मूला, तभी तो जीव सच्च है भूला ।
जिन के हित परलोक बिगाड़, उन्हीं के कारण निजघर भूला।। साहिब जी

403 सतगुरू महिमां वह ही जानेगा, जिन की सुरति सतगुरू समाये।
वह उनमें हर पल रहते, प्रेम की डोर सूं एक हो जाये।। साहिब जी

श्री कृष्ण जी कहते हैं :—

404 तीन लोक में मुझे, कर्म बंधन की ईच्छा नांहि।
तो भी जग को जगाने के लिए, कर्म करूं जग मांहि।। साहिब जी

405 आत्मनिष्ट जो नर हैं प्यारो, जगत लिया तिन जीत।
उसे साधु तुम जान लो, संकल्प से भगवन लो जीत।। साहिब जी

406 भक्ति से चरित्र सुधार लो, तुरन्त धर्मात्मां बन जात।
हे कुन्ती पुत्र ! शान्ति को प्राप्त करे, सो भगवन प्यार पा जात ।। साहिब जी

407 जो मेरी शरण ग्रहण करे, नीच स्त्री वैश्य शूद्र ।
जैसा भी गुरू शरणागति, परमधाम मिले हो शुद्ध ।। साहिब जी

408 धर्मात्मां ब्राह्मण भक्त, राज ऋषियों का कहना क्या।
मेरो (गुरू रूप) प्रेम भक्ति में, मोक्ष पद पा जाये।। साहिब जी

409 जितने विषय संसार में, दुख के कारण जान।
उपजत विनसत ही रहे, सुख इनमें ना मान ।। साहिब जी

410 सब विषयों को त्याग दे, दृष्टि त्रिकुटि जमाये।
सुरति प्राण को शुद्ध कर, सतगुरू पार लगाये।। साहिब जी

411 काम क्रौध से रहित हो, मन ईन्द्री ले जीत।
सब कष्टों से बच रहे, मुझ से होये प्रीत।। साहिब जी

412 हृदय में प्रकाश जगे, अन्दर अंधेर विनाष।
वही ध्यानी योगी, ब्रह्मां में पावें वास।। साहिब जी

413 अर्जुन ! मैं कहता सन्यास को, उसे योग तूं जान।
बिन सन्यास के योग न, ये सांच कर मान।। साहिब जी

414 कर्म ईन्द्रियों के विषय से, होये प्रीत जब दूर।
सतगुरू कृपा सूं संकल्प तजे, योग जगे भरपूर।। साहिब जी

415 आत्म ही तो प्रेम प्यारो, जे मन ईन्द्री जीत।
जिस को ईन्द्री जीत ले, पड़े वस वे चित।। साहिब जी

416 बिन सार सब्द के, मन माया होत ना शांत।
धरें ध्यान सार नाम में, देखें जगह एकांत।। साहिब जी

417 शुद्ध स्थान निरखे परखे, तन मन न उठे विचार।
कुशा मृग वस्त्र बिछा, शुद्ध आसन करे तैयार।। साहिब जी

418 सतगुरू सब्द की सुरति में, मन माया को जीते सार।
मन बुद्धि को स्थिर कर, प्राण में डाले सार।। साहिब जी

419 सिर काया अरू ग्रीव को, राखे एक समान।
अंदर से सुरति चले, दृष्टि नाक भाग पे आन।। साहिब जी

420 मन को ऐसे जीत कर, सतगुरू (कृष्ण) में जा समाये।

शांतमय ब्रह्म में मिले, कहे कृष्ण समझाये।। साहिब जी

421 अति जाग्रत अरू स्वपन में, सुरत सब्द न पकड़े कोये।
निराहार बहु सेवनों, ध्यान अधूरा होये।। साहिब जी

422 इसी प्रकार सहले योग कर, आशा तृष्णा देवे त्याग।
दर्शन पावे सतगुरू का, प्रेम की जोड़े जब तार।। साहिब जी

423 सतगुरू सम जग दाता नहीं, जो देवे मोक्ष का दान।
जो प्रेम डोर से बंध गया, पल में पहुंचे निजधाम।। साहिब जी

424 जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नांहि।
सब अंधेरा मिटि गया, जब दीपक देखया माहीं।। साहिब जी

425 मन को नित्य चिन्तन लाए, भक्त बनो करो प्रणाम।
मेरी ही नित पूजा कर, मुझ में करो विश्राम।। साहिब जी

अध्याय दस

426 अर्जुन तुम मेरे प्यारे सखा, ऐसा ज्ञान करूं प्रदान।
लाभ ही लाभ तुमको मिले, श्रेष्ठ कहुं मैं ज्ञान।। साहिब जी

427 पारस सुरति होये जहि पासा, सोहि सांचा सतगुरू जानिये।
सुरति सूं हंसा करे, काल संग छूटे निजघर का जानिये।। साहिब जी

साहिब दादू दयाल जी कहते हैं :—

द सतगुरू मिले तो पाईये, भक्ति मुक्ति भण्डार।
दादू सहजे पाईये, साहिबन का दीदार।। साहिब जी

द सतगुरू काडे पकड़ी हाथ, डूबत इहि संसार।
दादू नाव चढ़ाई कर, किया भव जल पार।। साहिब जी

द दादू सतगुरू देव को, मैं बलिहारी जाऊं।
जहां आसन अमर अलेख है, ले राखे उस ठाऊं।। साहिब जी

द सच्चे सतगुरू की पहचान करो, मोक्ष पद पा जाओ।
सभी जीव सतपुरूष से आऐ, सतगुरू नाम पाई पार हो जाओ।। साहिब जी

द जब लगि बूंद न सिन्धु समाऐ, तब लगि रहे अहंकार।
सतगुरू मिले सार सब्द मिले, छूटे मन माया अहंकार।। साहिब जी

428 मन ही ओइम निरंकार निरंझन जानिये प्यारो।
आत्म को पल पल रहे भरमाई, मानो 'वे नाम' की बात प्यारो।। साहिब जी

429 कहें निरंझन सुन ओ ज्ञानी, कथि हो जान तुम्हारी वाणी।
युगत महात्मां सब बताऊँ, तुम्हारा नाम ले सब पंथ चलाऊँ।। साहिब जी

430 कहे ज्ञानी सुन काल विचार, हंस हमारा होये नहीं न्यारा।
निस्वार रहुं लौ लीन, सब्द विचार नहीं होये मन विस्तारा।। साहिब जी

431 सार सब्द निज वासा साहिबन, एक सूं होते तीन।
सतगुरू, शिष्य और ईश्वर, तीनों मिली भक्ति कीन।। साहिब जी

432 मन माया सूं प्रीति कारण बड़ा, हर थां हरि ही जान।
कौन स्थान खाली पड़ा, कण कण में भगवान।। साहिब जी

433 घूं घूं की वाणी चलने से, सतगुरू निष्काम सुष्मिन सम से पार।
ये भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कंई ढंग सूं करते भव पार।। साहिब जी

434 भक्ति योग गीता अंग है, पर पूर्ण मोक्ष सूं दूर।
सार सब्द जिन पायो, फिर मोक्ष से नांहि दूर।। साहिब जी

435 कर्म करे सब प्रकृति, हंस आत्मां निर्लेप।
ज्ञान शब्द के ध्यान सूं, दूर करो विक्षेप।। साहिब जी

436 सगुण उपासना जो करे प्यारे, प्रेम सहित चित लाये।
श्रद्धा भक्ति से सिमरण करे, वोहि जन श्रेष्ठ कहलाये।। साहिब जी

437 जो भगवन को जैसे भजे, वैसा ही फल पाये।
अर्जुन ! यह तीन लोक, मुझ में आ समाये।। साहिब जी

438 राग द्वेष क्रौध भय त्याग, मुझ में चित लगाये।
देह छोड़ मुझको मिले, कहे कृष्ण समझाये।। साहिब जी

439 जप तप नियम व्रत, इन सूं पार नहीं होत।
पांच तत्व गुण तीन लोक, बिन गुरू पार ना होत।। साहिब जी

440 अच्छे व बुरे गुण, मन की उत्पति ले जान।
सुख दुख जन्म मृत्यु, यह श्री कृष्ण सूं जान।। साहिब जी

441 तप दान यश उपवास, विविध गुण मन का काम।
जो भी दिखता जग में, अच्छा बुरा मन का काम।। साहिब जी

442 श्री कृष्ण और मन में भेद ना, दोनों एक ही जान।
आत्मां सूं कुछ लेन ना देन, आत्म बंधन में जान।। साहिब जी

443 पिंड नांहि ब्राह्मण्ड नांहि, नांहि लोक आकाश।
इस ब्राह्माण्ड से भिन्न है, अमर लोक बिन आकाश।। साहिब जी

क कबीर पढ़ना दूर कर, पुस्तक देईये बहाये।
बावन अक्षर छोड़ कर, निःअक्षर लौ लाये।। साहिब जी

444 हार जीत मान अपमान, ऐसे रहित संत निर्वाण।
शील संतोष प्रेम से रहना, क्षमा गरीबों संतन दयावान।। साहिब जी

445 सभी लोकों में जीव, मेरे मन के कारण जान।
सभी का पालन पौषन करूं, तन मान का देता दान।। साहिब जी

446 पच्चीस प्रजापतियों तथा, सभी मनु लोक लोकान्तर में जान।
श्री कृष्ण (निरंजन) कृपा सूं, ब्रह्मा सृष्टि का किया निर्माण।। साहिब जी

447 ब्रह्मा से सनक सनन्दन, सनातम सनत्कुमार उत्पन्न जान।
रूद्र सप्तर्षि ब्राह्मण, क्षत्रियों आदि का निर्माण जान।। साहिब जी

448 जीव को तन और मन देकर, आत्म बंधन में जान।
बिन पूर्ण सतगुरू, आत्मां का नहीं कल्याण।। साहिब जी

449 कंचन तजना सहल है, सहज श्रिय का नेह।
मान बड़ाई ईर्षा, दुर्लभ तजना यह।। साहिब जी

450 जब घटा मोह समाया, चारों ओर अंधियार।
निर्मोहि ज्ञान विचार के, कोई बिरला पावे सतगुरू प्यार।। साहिब जी

451 सार नाम सुमिर नर प्यारे, पूर्ण सतगुरू देवे दात।

सुमिर नाम सतलोक को जावे, जब पास अमर नाम की दात।। साहिब जी

452 दुख सुख लोभ मोह, सेवा सब काल की जान।
जो नर इन ते वाचई, काल जाल छूटा जान।। साहिब जी

453 यह मन नीचा मूल है, नीचा कर्म सुहाये।
अमृत छोड़ मान करो, विषहि प्रीति लगाये।। साहिब जी

454 सात शून्य सात ही कमल, सात सुरति स्थान।
ईक्कीस ब्रह्माण्ड लांघ, काल निरझंन जान।। साहिब जी

455 गर्व गुमान जब छूटते, सतगुरू की होत पहचान।
जब लग मन अहंकारी, कहां टिकेगा नाम।। साहिब जी

श्री कृष्ण वर्णन यूं करें :–

456 समस्त अध्यात्मिक भौतिक जगतों का, कारण मुझको जान।
हर वस्तु अदभुत, मेरे कारण तूं जान।। साहिब जी

457 वह ही बुद्धिमान, जो इस राज़ को लेवे जान।
मुझे ही ईश्वर जान कर, शरणागत होकर करे ध्यान।। साहिब जी

458 वेदों का ठीक अध्ययन करे, उच्च अधिकारियों से ज्ञान।
उपदेशों का ठीक ठीक उपयोग, उसी का होत कल्याण।। साहिब जी

459 नारायण शिव और ब्रह्मा, काल निरंझन के पुत्र जान।
आद शक्ति और कालपुरूष, मात पिता तूं जान।। साहिब जी

460 सब उत्पति कारण, श्री कृष्ण ही तूं जान।
सब कुछ उनके अधीन, उन बिन कुछ और ना जान।। साहिब जी

461 जो नर भगवान कृष्ण को, मनुष्य कर जानते।
वह नर अंधे इस जग में, ना जो ध्यान उनका करते।। साहिब जी

462 प्रेमी भक्तों की वाणी, हर पल उनमें करती वास।
वह हर पल जग सेवा में रहते, बिन आस करे विश्वास।। साहिब जी

463 अध्यात्म पौधा क्रमशः बड़े उच्चतम लोक करे प्रवेश।
कृष्ण लोक परमधाम है, प्रेम लहर सूं करे प्रवेश।। साहिब जी

464 भक्ति सूं भगवान हृदय में धारते, हर पल करें प्रेम।
उनके हृदय में प्रभु का वास, अंदर जगे प्रकाश प्रेम।। साहिब जी

465 अर्जुन बोले पूर्ण जान कर, परम सत्य परम भगवान।
नित्य दिव्य आदि पुरूष, अजन्म शब्द पुरूष भगवान।। साहिब जी

466 जो भी आप ने वर्णन किया, पूर्ण सत्य लिया है जान।
देवतागण, असुरगण, कर न सके पहचान।। साहिब जी

467 सब के उद्‌गम स्वामी, मन में लिया है ठान।
आप देवों के देव हैं, ब्राह्माण्ड के मालिक महान।। साहिब जी

468 समस्त ऋषि धन और देवता, मेरे कारण तूं जान।
देवता महर्षि क्या नहीं जानते, प्रयास बिन कैसा ज्ञान।। साहिब जी

469 मैं परम भगवान जगत का, लो मुझे तुम जान।
बिन गुरू चरण में जाये, मुझे सको ना जान।। साहिब जी

470 जन्म मरन से रहित हूं, मेरा निरंजन नाम।
मारूं राखूं तुमरा आसरा, धर्म कर्म सूं चले सब काम।। साहिब जी

471 अर्जुन तुम को मैं कहुं, सच्ची गुप्त ये बात।
समझ ज्ञान विज्ञान को, पाओ मुक्ति की दात।। साहिब जी

472 तीन लोक ब्रह्माण्ड यह, मुझ से स्थिर ले जान।
संग मेरा किसी सूं नहीं, मुझे निर्लेप पछान।। साहिब जी

473 जो मुझे अजन्मा अनादि, लोकों का स्वामी लेता जान।
मोह रहित वह नर है, समस्त पापों से मुक्त उसे तूं जान।। साहिब जी

474 वे आदि रूप प्रकट हुऐ, सामान्य शिशु में परिणित जान।
जन्म मरन से रहित वे, मन के रूप में जान।। साहिब जी

475 गुरू साधू तथा शास्त्र, एक ही आज्ञा देत।
सतगुरू महिमां महान है, सार सब्द सूं मोक्ष है देत।। साहिब जी

क सतगुरू मोरा सूरमा, कस कर मारा बाण।
नाम अकेला रह गया, पाया पद निर्वाण।। साहिब जी

ख जब मैं था तब सतगुरू नहीं, अब सतगुरू हैं मैं नांहि।
प्रेम गली अति सांकरी, ता में दो ना समाही।। साहिब जी

ग सतगुरू समाना शिष्य में, शिष्य लिया कर नेह।
बिलगाऐ बिलगे नहीं, एक रूप दो देह।। साहिब जी

476 श्री कृष्ण समस्त जीवों में, मन के रूप में करते वास।
आत्म को वश में है किया, पूर्ण संत मिलें तो बनती बात।। साहिब जी

477 कृष्ण आदित्यों में विष्णू, प्रकाशों में तेजस्वी सूर्य जान।

मरूतों में मरीचि, नक्षत्रों में चन्द्रमां जान।। मोक्ष का भेद –

478 समस्त्र रूद्रों में शिव, यक्षों, राक्षसों का देवता कुबेर।
वसुओं में अग्नि हूं, समस्त पर्वतों में मेरा जान।। साहिब जी

479 समस्त पुरोहितों में बृहस्पति, सेना नायिकों में कार्तिकेय जान।
समस्त जलाशयों में समुंद्र, महर्षियों में भृगु जान।। साहिब जी

480 मैं वाणी में औंकार हूं, यज्ञों में जप तूं जान।
गजराजों में ऐैरावत हूं, मनुष्यों में राजा जान।। साहिब जी

481 मैं हथियारों में वज्र हूं, गायों में सुरभि जान।
उत्पति का कारण प्रेम का देवता, सरपों में वासुकि नाग।। साहिब जी

482 फणी नागों में मैं अनन्त हूं, जलचरों में वरूण देव।
पितरों में अर्यमा हूं, नियमों में मैं यमदेव।। साहिब जी

483 दैत्यों में भक्त प्रहलाद, दमन कारियों में यमराज।
पशुओं में सिंह हूं, पक्षियों में गरूड़ राज।। साहिब जी

484 समस्त पवित्र तत्वों में वायु, शस्त्र धारियों में राम।
मछलियों में मगर हूं, नदियों में गंगा जान।। साहिब जी

485 समस्त सृष्टि् का मैं, आदि, मध्य और अन्त।
विद्यायों में आध्यात्म विद्या, तर्क शस्त्रियों में सत्य।। साहिब जी

486 अक्षरों में मैं औंकार हूं, समासों में द्वन्द समास हूं।
तूं शाश्वत काल मुझे जान, ब्रह्मा और शुद्ध ब्रह्मा भी मैं हूं।। साहिब जी

487 मैं जीवन मृत्यु देता हूं, मोत का भेद भी संग मिले।

मैं विजय साहस दोनों हूं, बलवानों का बल मुझे।। साहिब जी

488 सारा यह ब्राह्माण्ड जो, मुझ में स्थिर जान।
संग किसी के मैं नहीं, तूं निर्लेप पछान।। साहिब जी

489 जैसे पवन आकाश में, विचरत है सब ओर।
तैसे ही यह जीव सब, मुझ में विचरें सब ओर।। साहिब जी

490 प्रलयः काल में सब प्राणी, मेरे में हों लीन।
आद कल्प जब फिर चले, फिर मैं ही रचना कीन।। साहिब जी

491 अविनाशी मोहे जान तूं, मुझ में ध्यान लगाओ।
ज्ञानी पुरूष सिमरें मुझे, स्तुती मेरी गाओ।। साहिब जी

अर्जुन भगवन सूं कहने लगा :–

492 आप जग परम आधार हैं, सनातन धर्म पालक भगवान।
आप ही मात पिता, पालनहार भगवान।। साहिब जी

493 आदि मध्य और अन्त से रहित, महिमां अपार भगवान।
सूर्य चंदा निज आंखें, मुख अग्नि ब्राह्माण्ड मुझ में जान।। साहिब जी

494 आप ही केवल एक हैं, सब में रहे समाये।
इस रूप को देख कर, मेरी बुद्धि गई भरमाये।। साहिब जी

495 देवी देव भयभीत हों, तुझ में करें प्रवेश।
महर्षि सिद्ध ध्यानी, वैदिक पाठ में करें प्रवेश।। साहिब जी

496 शिव के विविध रूप, पितृगण गंधर्व यक्ष असुर।
सिद्ध देव नर मुणि, आश्चर्यपूर्वक हो देखें रे।। साहिब जी

497 इस अदभुत रूप को देख कर, अति विचलित हैं देव।
मैं भी विचलित हूं प्रभु, भंयकर रूप ये देख।। साहिब जी

498 सर्वव्यापी भगवान नाना ज्योर्तिमय रंगों से युक्त।
आकाश को स्पर्श करता हुआ, मुख फैलाए अंगों से युक्त।। साहिब जी

499 यह सब देख अर्जुन, भय से भूला मन का भाव।
मानसिक संतुलन खो गया, गया मोह माया का भाव।। साहिब जी

500 भगवान प्रज्जवलित मुखों से, सभी को निगलने में व्यस्त।
पूर्ण ब्रह्माण्ड झुलसाती किरणों सहित, प्रकाश में पूर्ण व्यस्त।। साहिब जी

501 जहां तक वाणी अनहद की, तहां तक काल पुरूष का वास ।
वाणी छोड़ सार सुरति धरे, पहुंचे अमरलोक साहिबन पास।। साहिब जी

502 सुरति फंसी संसार में, ताते पड़ गयो दूर।
सार सुरति प्राण बांध एक करो, आठों पहर हजूर।। साहिब जी

503 खाता पीता सुरति में रहे, हर पल सार सब्द मांहि।
तीन लोक घर तेरा नांहि, रहो सतगुरू शरणी मांहि।। साहिब जी

504 सुमिरन सुरति की रीती, केवल सतगुरू में लगाये।
साधक सतगुरू भक्ति करे, पल में मोक्ष मिल जाये।। साहिब जी

505 न कुछ किया न कर सका, न करने योग्य शरीर ।
जो कुछ करते साहिब हैं, न मन करे न शरीर ।। साहिब जी

506 एक साहिब न जाना, जग में कुछ ना जाना जान।

सतगुरू मिले तो काम हो गया, सतगुरू ही कर्ता जान।। साहिब जी

507 साहिबा सुरति एक है, भावें जहां लगाये।
भावें सतगुरू भक्ति करे, भावें मन संग जाये।। साहिब जी

508 गुप्त भयो है संग सभी के, निरंझन मन ईक जान।
यही तो काल का जाल है, सतगुरू सूं ले तूं जान।। साहिब जी

509 निराकार जो वेद बखाने, सोई काल कोई भेद न जाने।
मन माया निराकार का रूप, पर जीव ये भेद ना जाने।। साहिब जी

510 तीन लोक तो मन ही है, मन का सकल पसार ।
मन चीन्हे तो अमर है, सतगुरू मिले तो पार।। साहिब जी

511 ये सब माया जाल है, मन का किया तूं जान।
सार सब्द अमृत दात है, सतगुरू मिलें तो जान।। साहिब जी

512 सत्य सब्द सतपुरूष का, पावें संत सुजान।
काल का जीव माने नहीं, सत्य सब्द निर्वाण।। साहिब जी

513 सार सब्द जब अनुभव ज्ञान, आत्म राम तब हंसा होई।
अनुभव हंसा रूप को मत पूछो, गूंगे की बात गूंगे से होई।। साहिब जी

514 सतपुरूष जान सोई एक हैं, दूजा है निराकार।
एक सूं पूर्ण मुक्ति दात है, दूजा माया संसार ।। साहिब जी

515 शब्द सब्द में भेद है, एक मन एक सुरति जान।
सब्द तो सार सब्द है, शब्द मन की पहचान।। साहिब जी

श्री कृष्ण अर्जुन को कहते हैं :–

516 जो मुझको सिमरे प्रेम से, मुझमें चित्त लगाऐ ।
मुझको ध्यावे प्रणाम कर, निष्चय मुक्ति पाऐ ।। साहिब जी

517 समस्त सृष्टि् का बीज हूं, सब उत्पति मुझ से जान।
सब ऐश्वर्य सौन्दर्य तेज, मेरे कण मात्र से जान।। साहिब जी

518 मुझे अपने अंश मात्र से, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त जान।
दृष्टि् में मन माया का जाल, मम रूप दर्शन दुर्लभ जान।। साहिब जी

519 दिव्य चक्षु करूं प्रदान, बिन दिव्य चक्षु भेद ना जाने।
आशा तृष्णा जब तजे, मोक्ष मिला ही जाने।। साहिब जी

520 हर नर कल कल में जी रहा, मन माया किया बेहाल।
इस पल में जीना सीख ले, तेरा छूटे काल जंजाल।। साहिब जी

521 आत्म तृष्णाहीन है, रिश्ते नातों से दूर।
मन माया बिन आत्म हंसा बने, जो प्रेम सत्त का नूर।। साहिब जी

522 हंसा में सतपुरूष दिखें, हो आंख तो देखे नूर।
नूर प्रेम की बूंद बने, जा मिले बूंद महांसागर नूर।। साहिब जी

523 आत्म बिन हंसा नांहि, कैसे देखे साहिबन रूप।
सतगुरू बिन पावे नहीं, सार नाम सूं हंसा रूप।। साहिब जी

524 श्री कृष्ण काल पुरूष हैं, ऋषिगण कहें ब्रह्मा का रूप।
भक्त गण इन्हें भगवान मानते, जो हैं ज्योत सरूप ।। साहिब जी

525 लख सौ चंदा जे उगें, सूर्य चढ़े हज़ार।
यह सब प्रकाश कुछ है नहीं, बिन सतगुरू जग अंधयार।। साहिब जी

526 अर्जुन हाथ जोड़ विनति करे, प्रभु धारो सच्चा रूप।
यह रूप देखा जाता नहीं, मन बेहाल हुआ देख विराट स्वरूप।। साहिब जी

527 अर्जुन कृष्ण माया देख भरमाया, भूला सभी विचार।
मोह गया माया गई, मानने को हुआ सब तैयार।। साहिब जी

528 प्रेम सहित जो मुझे ध्यावे, तब तो मुझको निश्चय पावे।
परस्पर प्रेम करे बहु वचना, सर्वत्र ही देखे मम रचना।। साहिब जी

529 आद अंत सब मोहे ही माने, कर्ता धर्ता मोहे ही जाने।
बहु भांति से मुझे रजावे, चित वृति से सीस नवावे।। साहिब जी

530 ऐसे भक्त करूं प्रति पाला, हो कर उन पर अति दयाला।
बड़े आनंद मोक्ष पद पावे, बोहड़ जन्म में फिर न आवें।। साहिब जी

531 सब भूतों का बीज तूं, मुझ को अर्जुन जान।
चराचर इस जगत में, मुझ बिन कुछ ना मान।। साहिब जी

532 शोभा तो प्रकाश है, चित विभूति लाये।
सब जग अपने अंश से, मैं राखा ठहराये ।। साहिब जी

अर्जुन कहते हैं :–

533 हाथ जोड़ विनति करूं, सुन लो आप मुरार।
विश्व रूप का ऐ प्रभु, पाया जाए न पार।। साहिब जी

534 कारण हो तुम ही जगत के, सत्तचित्त रूप आनंद।

पार कोई पावे कहां, हैं सब के गोविंद।। साहिब जी

535 सर्वव्यापी पिता हो, सब के पालनहार।
पारब्रह्म जगदीश हो, दयामय निर्विकार।। साहिब जी

536 तेतीस करोड़ देवता, स्तुति करें अनंत।
ऋषि मुणि और देवता, महिमां गावें महंत।। साहिब जी

537 ब्रह्मा विष्णु देवता, सीस निवाय तोये।
चार वेद षट् शास्त्र, तेरी महिमां ना होये।। साहिब जी

538 आकाश पृथ्वी अंतरिक्ष में, तेरी ज्योत समाये।
पात फूल फल में प्रभु, तेरी सुगन्धि आये।। साहिब जी

539 अग्नि वायु प्रजापति, चंद्र तेजस्वी रूप।
नमस्कार करूं बार बार, हो विज्ञान स्वरूप ।। साहिब जी

540 अर्जुन कहे भगवान से, उग्र रूप में कौन ।
पल–पल नमस्कार बन्धना करूं, इस रूप में कौन।। साहिब जी

541 क्या आप ही भगवान हैं, या कोई दूजा रूप।
कृपा कर बतलाओ, इस उग्र रूप का रूप।। साहिब जी

542 भगवन यूं वर्णन किया, मैं ही काल का रूप।
जीव विनाष करने को, धारा काल का रूप।। साहिब जी

543 केवल पाण्डव छोड़ कर, योद्धाओं का करो विनाष।
धृतराष्ट पुत्र सभी राजाओं संग, अधर्मियों का करो विनाष।। साहिब जी

544 उत्पति प्रलयः सभी, सभी निरंझन का जाल पसारा।
ताका भेद 'वे नाम' जाने, जग में भेद ये सब सूं न्यारा।। साहिब जी

545 ज्यों सपना वेखना, जग रचना तिम जान।
इस में कुछ सांचा नहीं, नानक सांची मान ।। साहिब जी

546 पिण्ड ब्रह्माण्ड के पार वह, साहिबन सत्त करतार ।
अमरलोक देस हंसों का, झूठा सब संसार ।। साहिब जी

547 काल वस सब नर पड़े, क्या राजा क्या रंक।
सब जीव मन वस पड़े, बिन रसरी सकल संसार।। साहिब जी

548 यह जगत दिन रैन का सपना, समझ ना कोई यहां अपना।
रिश्ते नाते सब झूठ है, कोई नहीं इस जग अपना।। साहिब जी

क स्वांस स्वांस में नाम ले, वृथा स्वांस ना खोये ।
क्या जाने किस स्वांस का, आवन होए ना होये ।। साहिब जी

ख सुमिरन से सुख होत है, सुमिरन से दुख जाये।
कहे कबीर सुमिरन किए, सांई मांहि समाये।। साहिब जी

ग नानक जो निश दिन भजे, रूप राम तेहि जान।
ध्यान ही वेद शास्त्र कहत हैं, ध्यान ही संत बख़ान।। साहिब जी

549 यह सुरति निजधाम से आई, मन वश पड़ी जग आन।
मन माया आत्म सुरति भरमाई, आत्म खोई अपनी पहचान ।। साहिब जी

श्री कृष्ण अर्जुन को कह रहे :–

550 अर्जुन उठो लड़ने के लिए, यश पाओ जग आन ।

शत्रुओं को तुम जीत कर, राज सुख की महिमां जान।। साहिब जी

551 द्रोण भीष्म जयद्रथ कर्ण, योद्धा सभी महान।
मुझ सूं सभी मरे पड़े, तुम बनो योद्धा महान।। साहिब जी

552 भगवन वचनों को सुन कर, अर्जुन बारम्बार करे प्रणाम।
सिद्ध पुरूष हर्षित हो रहे, असुरगणों की टूटी बिगड़ी कमान।। साहिब जी

553 आप ब्रह्म से परे पारब्रह्म, फिर कैसे ना करूं प्रणाम।
आप अनन्त देवेश आधिदेव, भौतिक जगत सूं ना काम।। साहिब जी

554 आप जगत पालन हार हैं, सनातन पुरूष निराकार।
आप कर्ता जाननहार हैं, कर्म धर्म सूं पार।। साहिब जी

555 आप भौतिक गुणों से परे, अनन्त रूप महान।
आप ही अग्नि वायु पृथ्वी जल, सुन्न आकाश महान।। साहिब जी

556 आप आदि जीव ब्रह्म हैं, मैं करूं बारम्बार नमस्कार।
आप कर्ता तीन लोक के, पुनः पुनः नमस्कार।। साहिब जी

557 आप को आगे आप को पीछे, चारों ओर नमस्कार।
आप असीम शक्ति, अनंत पराक्रम करतार।। साहिब जी

558 आप ही सर्वव्यापी भगवान हैं, करन करावन हार।
महिमां अपरम्पार आप की, कंई नामों से करो पुकार।। साहिब जी

559 कई बार मुझ सूं अनादर हुआ, जाना ना करतार।
आप चर अचर जगत के, पूर्ण गुरू पालन हार।। साहिब जी

560 तीन लोक में आप के तुल्य ना, ना कोई आप समान।

सब जीवों का पालन पोषण, निज हाथ अतुल शक्ति महान।। साहिब जी

561 आप ही सगुण आप ही निर्गुण, करूं बारम्बार प्रणाम।
कृपा अपराध मेरे क्षमा करो, कबूल करो प्रणाम।। साहिब जी

562 सतगुरू तुल्य चार लोक कोई नांहि, जिसे करूं प्रणाम।
सार सब्द सुरति में डाल दो, पल में होत कल्याण।। साहिब जी

563 शुद्ध प्रेम गुण अति बड़ा, देश काल का संग न जान।
मीरा को तुम देख लो, पा लियो निजघर निजधाम।। साहिब जी

अध्याय ग्याहरां – विराट रूप

564 अर्जुन कहे मिटा मोह मेरा, जब पाया उपदेश न्यारा।
आप तो समस्त अवतारों के उदगम, तभी तो हो अवतार प्यारे।। साहिब जी

565 अर्जुन अब कृष्ण को मित्र नहीं मानता, प्रत्येक वस्तु का कारण वह।
अर्जुन अति प्रबुद्ध हो चुका, अंदर की आंख सूं देखे वह।। साहिब जी

566 दर्शन कर विराट के, अति डरा था वह।
यह दर्शन सब के वास्ते, अंदर की आंख से देखे वह।। साहिब जी

567 जीव की उत्पति प्रलयः का कर्ता, केवल आप ही आप ।
सब की उत्पति विस्तार सुना, संग ना करते आप।। साहिब जी

568 विराट रूप को धार कर, अर्जुन को दिखलाऐ तेजस्वनी रूप।
नमस्कार करे बार बार, कहे ज्ञान विज्ञान स्वरूप ।। साहिब जी

569 ह्रदय ज्ञानी पुरूष में, पुरूषोतम का आभास।

परम पवित्र नाम है, तेरा ही पार ब्रह्म जगदीश।। साहिब जी

570 स्तूति करने योग्य हो, सर्व व्यापी औंकार।
इसी नाम से करो, भक्तों का उद्धार।। साहिब जी

571 क्षमा करो अपराध मम, पारब्रह्म जगदीश।
मैं अपराधी जन्म जन्म से, तेरी कृपा सूं हुआ आदर्श।। साहिब जी

572 अर्जुन कहे जगदीश सूं, दया करो अब नाथ।
मुकुट विराजे सीस पर, गधा चक्र हो हाथ।। साहिब जी

573 श्री कृष्ण हो प्रसन्न फिर, अपना रूप दिखाया।
अर्जुन को प्रसन्न किया, फिर उपदेश सुनाया।। साहिब जी

574 दुर्लभ पाना ये रूप है, कहा सुना देखा ना जाये।
चर अचर वर्तमान भविष्य, सब विश्वरूप दिखलाये।। साहिब जी

575 बाहिर की आंख से देख ना पावे, नाम दात सूं मिलती आंख।
नाम दात ही दिव्य आंख है, मन मिटे तो खुल जाए आंख।। साहिब जी

576 सतगुरू देते आंख हैं, अंदर के खोलें किवाड़।
पल में चानन होत है, जा पहुंचो साहिब दरबार।। साहिब जी

577 वेद यज्ञ तप दान से, कोई ना दर्शन पाये ।
केवल अनन्य भक्त ही, इस रूप के दर्शन पाये।। साहिब जी

578 अर्जुन तुझे इस संसार में, दर्शन कराए समस्त विश्वरूप ।
कोई तुझ सम भाग्यशाली नहीं, जिस दर्शन किए मम रूप।। साहिब जी

579 जब मन संग है सतगुरू नांहि, मन जाये आत्म संग सतगुरू समाये।
हंस आत्मां अति पातली, ता में दो ना समाये।। साहिब जी

580 तेरे अंदर घौर अंधेरा, रहता तूं भयभीत।
अंदर का दीप सार सब्द सूं जले, फिर कैसे कोई भयभीत।। साहिब जी

581 माटी की काया हम सब की, मान छूटे कंचन हो जाये।
मरना जीना जब छूट गया, माटी सूं अमृत हो जाये।। साहिब जी

582 मान छूटे तो मरना जाने, लोभ मोह अहंकार।
जब तक तेरे संग यह साथी, कैसे उतरेगा पार।। साहिब जी

583 ऐसी मरनी मरनी नांहि, तन छूटे तन पाये।
मन छूटे तो हंसा होवे, सार नाम में सुरति समाये।। साहिब जी

584 आप मरूं सतगुरू को पाऊं, एक सुरति ही रह जाये।
यही है जीवित मरना भवजल तरना, आत्म हंसा हो जाये।। साहिब जी

585 बिन सुरति कुछ ना बचे, जीवित मरना कहलाये।
हंस रूप तभी रह पाये, जब साहिबन आन समायें।। साहिब जी

586 सार सब्द ने मान भाव मिटायो, बस सुरति ही रह जाये।
मन भाव मिटा मान ना जाये, फिर किस विधि पार हो जाये।। साहिब जी

587 नाम सुमिर सार नाम का, नहीं तो पीछे पछताये।
काल जाल इक धोखा जग में, बिन जाने पछताये।। साहिब जी

588 मन ही निरंझन काल कराला, जीव नचाऐ करे बेहाल।
तूं कहता सब मन सूं वाणी, यह भाषा केवल काल से जानी।। साहिब जी

589 सुरति जान आत्म की वाणी, काल सूं ये ना पकड़ी जाई।
अमरपुर निजधाम से आई, केवल सतगुरू सूं पकड़ी जाई।। साहिब जी

590 आंख ना मूंदो कान ना रूंधो, नहीं अनहद अरू जावे।
ऐसी मुक्ति सतगुरू मोहे दीनी, सहज सुरति की धुन जगावे।। साहिब जी

गोस्वामी तुलसीदास जी कह रहे हैं :—

त ब्रह्म राम ते नाम बड़ा, वरदाया वरदान।
राम चरित्र सत कोटि में, लिया महेश ये जान।। साहिब जी

591 यह नाम क्या है, कैसा है क्या करता।
सतगुरू दात सतपुरूष सूं पावे, मन माया से पार करता।। साहिब जी

592 कल और कल गया, तुम पूरे जाग जाते।
तुम इसी पल में जीने, और सुमिरन में लग जाते।। साहिब जी

साहिब कबीर वाणी अनुसार :—

क नदी किनारे सतगुरू भेंटे, तुरन्त जन्म सुधारी।
कहे कबीर सुनो भाई साधो, दोऊ कुल तारी चली।। साहिब जी

क ईब ना रहुं माटी के घर में, जाई मिलूं हरि में।
ईब मैं जाई रहुं मिली साहिब में, सब्द का आत्म सूं मेल।। साहिब जी

'वे नाम' कहें :—

593 ईब ना रहुं माटी के घर में, पांच तत्व का शब्द सूं मेल।
ईब मैं जाई रहुं मिली सतपुरूष में, सब्द का हंसा सूं मेल।। साहिब जी

594 गर्व गमान जब छूटते, तभी कोई पाता नाम।
जब तक मन अहंकारिया, कहां ठहरेगा नाम।। साहिब जी

595 सच्चे साहिब सूं सुरति लगा लो, प्रेम करो ताहि संग।
आशा तृष्णा त्याग दो, प्रेम दिया जले इक संग।। साहिब जी

596 श्री कृष्ण को मनुष्य कर जानते, ते नर अन्धा जान।
उनको मुक्ति कभी ना मिले, जन्म जन्म हो स्वान।। साहिब जी

597 प्रेमी भक्तों की वाणी, श्री कृष्ण में करती वास।
वह जीवन को सेवा में, अर्पित करें बिन आस।। साहिब जी

598 अध्यात्मिक पोधा क्रमश बड़ता जाए, उच्चतम लोक में वास।
गो लोक कृष्ण परमधामे, प्रीत लगे तो मिलता वास।। साहिब जी

599 जो भगवन को अंदर धारते, जाग जो हर पल रहे।
उन के ह्रदय करते वास वह, चाह रहित वह रे।। साहिब जी

600 अर्जुन श्री कृष्ण को कहने लगे, परम पवित्र परम सत्य भगवान।
नित्य दिव्य आदि पुरूष, अजन्मा शब्द पुरूष भगवान।। साहिब जी

601 जो भी आप ने वर्णन किया, पूर्ण सत्य लिया मान।
ना देवतागण ना असुरगण, आप स्वरूप ना सके वह जान।। साहिब जी

602 आप सब के उद्गम तथा स्वामी, मन में लिया है ठान ।
आप देवों के भी देव हैं, ब्रह्मण्ड के मालिक महान ।। साहिब जी

603 आप जग परम आधार हैं, धर्म पालक भगवान ।
आप ही करता धरता हैं, मेरे पालनहार भगवान।। साहिब जी

604 शिव के विविध रूप, पितृगण गन्धर्व यक्ष असुर।
सिद्ध देव सभी आप को, आश्चर्य पूर्वक देत पुकार।। साहिब जी

605 आप के इस अदभुत रूप को देख कर, अति विचलित हैं देव।
मैं भी अति विचलित हूं, भंयकर रूप को देख कर देव।। साहिब जी

606 जहां लग वाणी मुख कहे, तहां लग काल को वास ।
वाणी छोड़ सुरति धरे, सार सुरति सूं साहिबन पास।। साहिब जी

607 गुप्त भयो हैं संग सभी के, मन ही कृष्ण होई।
दुख सुख एक समान जान ले, कृष्ण की महिमां जाने सोई।। साहिब जी

608 यह संसार मन ही है, मन का सकल पसार।
मन अमर की बात ना है, ध्याय सार सब्द निज सार।। साहिब जी

609 तेरे अंदर मन की दोड़ है, मन का करो विचार।
सार नाम ध्याय मन अचल है, यही संतन विचार।। साहिब जी

610 संत कहे विचारि के, सुन लो हमारी बात।
निःअक्षर सार गाह बिना, पार की करो ना बात।। साहिब जी

611 अनुभव ज्ञान सुरति में होई, आत्म राम जाने है सोई।
वहां सुख आनंद परम व्यापे, पूर्ण सतगुरू सूं मेल।। साहिब जी

612 लाभ कभी सोचें नहीं, दुख कभी देखें नहीं।

जिस की सुरति में हर पल सतगुरू, कुछ भी कभी मांगे नहीं।। साहिब जी

613 वेद कुरान उपनिषद ज्ञाता, रामायण गीता का विख्याता।
इन सब से कुछ हाथ ना आवे, भीतर सुरत सब्द को गाता।। साहिब जी

614 भीतर सुरति सार सब्द की, सतगुरू संग साथ।
उस अंदर वासा साहिबन का, पल पल करता बात।। साहिब जी

615 आत्म चेतन जब होत है, साहिब को लेती पहचान।
परम आनंद सील संतोख, यही सतगुरू पहचान।। साहिब जी

616 संतजन सच्चे गीता पारखी, हर नर की करते पहचान।
प्रेम तरंग सुरति सूं उठे, यही तुम्हारी पहचान।। साहिब जी

617 सुरति जगि रहे, सुरति मधुर आनंद तूं जान।
वाणी में प्रेम संगीत हो, अधर पर मधुर मुस्कान।। साहिब जी

618 प्रेम की सतगुरू सूं जोड़ो तार, कुछ रही ना चाह संग संसार।
सतगुरू प्रेम ही का रूप हैं, सार नाम सुरति एक तार।। साहिब जी

619 जगा लो आत्म सुरति मतवारी, पीवत राम रस लगी खुमारी।
अनंत आनंद की वर्षा प्यारी, हर ओर वर्षा नाम खुमारी।। साहिब जी

620 इस जग में कोई रह ना पावे, सो निश्चय कर जान।
पांच तत्व से निकल जाएगी, पल में पक्षी प्राण।। साहिब जी

621 पिण्ड ब्रह्मण्ड से पार वह, साहिब सत निजधाम।
सतलोक धाम हंसों का, झूठा तीन लोक मुकाम।। साहिब जी

622 सब जीव काल के वश पड़े, क्या राजा क्या रंक।

कोई भेद जाने नहीं, कैसे छूटे मन माया का संग।। साहिब जी

623 ज्ञान सब्द सतगुरू सूं पाओ, बिन सतगुरू तुम भेद ना पाओ।
सार सबद है बीज सरूपा, ज्ञान बीज तैं मोक्ष तुम पाओ।। साहिब जी

624 यह ज्ञान निज धाम सूं आया, काल लोक में 'वे नाम' पधारे।
जो पावे सतगुरू प्यारा, सार सब्द सूं पार उतारा।। साहिब जी

625 सत्य सुरति निजधाम सूं आई, पड़ी जाल निज मन।
मन माया हंसा सुरति भरमाई, आत्म पड़ी वश मन।। साहिब जी

अर्जुन श्री कृष्ण जी की महानता, का वर्णन मन महान

626 आप जग पालनहार हैं, सनातन पुरूष निराकार।
आप कर्ता जाननहार हैं, कर्म धर्म सूं पार।। साहिब जी

627 आप भौतिक गुणों से परे, अनंत रूप प्रकाश।
आप ही वायु अग्नि, पृथ्वी जल सुन्न आकाश।। साहिब जी

628 आप तीन लोक के कर्ता धर्ता, पुनः पुनः करें नमस्कार।
आप आदि जीव ब्रह्म हैं, करूं मैं बारम्बार नमस्कार।। साहिब जी

629 आप को आगे आप को पीछे, चारों ओर सूं नमस्कार।
असीम शक्ति सम्पन्न, अनंत पराक्रम करतार।। साहिब जी

630 आप ही सर्वव्यापी भगवान हैं, आप ही करन करावनहार।
आप की महिमां अपरम्पार है, कई नामों से करें पुकार।। साहिब जी

631 आप का कंई बार अनादर हुआ, जाना ना करतार।

आप इस चर अचर जगत के, पूर्ण गुरू पालनहार।। साहिब जी

632 तीन लोक में कोई आप के तुल्य ना, ना कोई आप समान।
सब जीवों का मरना जीना, हाथ अतुल शक्ति महान।। साहिब जी

633 आप ही सगुण आप ही निर्गुण, इसी रूप को प्रणाम।
मेरा अपराध कृपा बख्शिये, करो कबूल प्रणाम।। साहिब जी

634 सतगुरू तुल्य चार लोक कोई है नहीं, जिसे करो प्रणाम।
सार सब्द सुरति में डाल दो, बारम्बार करो प्रणाम।। साहिब जी

635 केवल अनन्य भक्ति सूं, जाने समझे नर को।
केवल इसी विधि ही सूं, ज्ञान सार को पावे को।। साहिब जी

636 जाग आशा तृष्णा त्याग दे, सतगुरू का करो ध्यान।
कल ओर कल को छोड़ दे, केवल इस पल में रहे ध्यान।। साहिब जी

637 आज सत्य तो कल भी सत्य, आज सूं आता कल।
आज झूठ तो कल सत्य कैसा, आज कली कल फूल।। साहिब जी

638 मन माया का संग गया, आत्म नूरो नूर।
मन माया नर घेरिया, तांहि सूं पड़ गया दूर।। साहिब जी

639 मन माया तो एक हैं, माया मन ही समाई।
सांचा सतगुरू जे मिले, अब सतगुरू ही संग सहाई ।। साहिब जी

640 सतगुरू आज्ञा माने नहीं, चले मन की चाल।
पूर्ण संत ना पा सका, फिर फिर काल के जाल।। साहिब जी

641 जो सतगुरू द्वार पर पड़ा रहे, सतगुरू की माने बात।

उस के संग साहिब आप हैं, किसी पल ना छूटे साथ।। साहिब जी

642 सेवक स्वामी जब एकमत, कृष्ण अर्जुन समान।
मन माया का संग गया, आत्म हो हंस महान।। साहिब जी

643 सेवक अर्जुन सा होई रहे, सेवक कहिए सोये।
'वे नाम' कहे सेवा बिना, साहिब ना पावे कोये।। साहिब जी

644 सुख दुख में एक सम रहे, कभी ना जागे भ्रम।
मन माया का रंग गया, जाने प्रेम मम।। साहिब जी

645 काहू को ना सताये, वह भी तो अपना रूप।
पल पल सतगुरू बन्दिये, बने वह सतगुरू रूप।। साहिब जी

646 लगा रहे सुरति सूं, ध्यान सतगुरू स्वरूप।
आशा तृष्णा संग छूटे, सुरति में सब्द स्वरूप।। साहिब जी

647 सतगुरू कर्ता चार लोक के, पल पल करो प्रणाम।
उनका किया सब साहिब का करना, सुरति में करो सब काम।। साहिब जी

648 अर्जुन देख विराट रूप को, कहने को रही ना बात।
ह्रदय में मन कारण भयभीत, डर और भय संग साथ।। साहिब जी

649 हे सहस्त्र भुज भगवान, चर्तुभुज रूप धारया आप।
अपने चारों हाथों में, शंख चक्र पदम गद्ा एक साथ।। साहिब जी

650 जब सतगुरू सुरति में रम गये, साधक चेतन रूप हो जाये।
अब बिन सतगुरू कुछ भावे नहीं, सागर में बूंद समाये।। साहिब जी

651 मूल नाम ही सांचा नाम है, सुरति में रहे समाए।
मन माया संग छूट गया, बिन नाम छूट ना पाए।। साहिब जी

652 नाम होए मन माथु नवावे, नहीं तो जीव बंधा रह जाए।
जन्म जन्म से मन संग पड़ा, बिन सार नाम छूट ना पाये।। साहिब जी

653 परमपुरूष शक्ति मूल सब्द में, पाओ तो उतरो पार।
बिन सत सब्द मन संग ना छूटे, कोटिन जे करो उपाए।। साहिब जी

654 मीरा राधा को पार कर गई, बिन देसकाल पाये भगवान।
राधा के तो संग थे, आप श्री कृष्ण भगवान।। साहिब जी

655 सुख दुख शीत उष्ण में, सन्तोष राखे नर होये।
उस को दुख व्यापे नहीं, कहत कृष्ण नर तोये।। साहिब जी

656 जग में तेरा वैरी कोई है नांहि, तेरा वैरी तूं आप।
जब लग मन की सुने, कैसे जाने तूं सुरति राज़।। साहिब जी

657 तेरे घर में घौर अंधेरा, और रहता हर पल भ्रमित।
अंदर दीप सुरति सूं जले, फिर कोन किस से भयभीत।। साहिब जी

658 गगन मंडल में तारी लगाई, गये गगन के तीर।
छाछी छाछी पंडित पीवे, संतन महिमां अपार।। साहिब जी

659 सतगुरू शरणी बिना, पहुंचे न मुक्ति धाम।
नर प्यासा इक नाम का, जो ले जावे निजधाम।। साहिब जी

660 नर देह को पा कर प्यारे, मोक्ष दात को पाऐ।
मन माया के बंधन तोड़ के, पूर्ण सतगुरू शरणी जाऐ।। साहिब जी

661 मन छूटे जीवित मरना होए, छूटे लोभ मोह अहंकार।
जब लग इनका संग आत्म सूं, छूटे ना इन्द्री जाल।। साहिब जी

662 यह तो मरना ना हुआ, एक तन छूटे दूजा पा जाऐ।
मन जाये जीवित मरना होए, सुरत में सुरत समाऐ।। साहिब जी

663 जीवित मरो सतगुरू समायें, केवल सुरति ही रह जाऐ।
जीवित मरना ही है पाना, हंसा हो निजघर जाऐ।। साहिब जी

664 कुछ ना रहे हंसा बचे, जीवित मरना कहलाऐ।
हंसा रूप सतपुरूष समायें, पल छिन में साहिबन पायें।। साहिब जी

665 जब मैं को तूं ना मार सका, जीवित मरना कैसे होऐ।
मन ना जाये मान ना जाये, किस विधि पार हो पाऐ।। साहिब जी

666 सार नाम ना विसरे भाई, सतगुरू कृपा हो जाई।
सतगुरू भावें बिन सांस ते रखें, मोक्ष दात मिल जाई।। साहिब जी

667 मान तो सांप समान प्यारे, सतगुरू करे गरूड़ का काम ।
यह सब मन माया की देन है, जे कल और कल में ध्यान।। साहिब जी

668 सार नाम की पक्की रसरी बिन, मान रूपी बंदर बांधे कोन।
इन्द्री जाल अति भरमावता, बिन सत्य सब्द बांधे कोन।। साहिब जी

669 सब जग काल के वस पड़ा, इस पिझंरे को खोले कोन।
सांचा सतगुरू जे पाये, वो ही खोले बंधन अनेक।। साहिब जी

670 तेरा घर अंधेरे सूं भरा, पल पल दे डराऐ।

निःअक्षर सब्द दिया जब जले, रोशनी प्रकटे अन्धेरा जाऐ।। साहिब जी

671 अंधेरे में सांप, चोर डर रहे, पल पल भय बड़ाये।
भय सूं मरना मरना नांहि, इधर सूं जाये उधर से आये।। साहिब जी

672 मरो रे साधको मरो, मरण सूं मिले पूर्ण आनंद।
ऐसी मरनी को मरो, जिस मरनी छूटे मन तरंग।। साहिब जी

673 जैसी चदरिया साहिबन दीनी, और उज्जवल कर लीनी।
तन छूटा मन छूटा, आत्म हंसा भई, चदरिया रंग न लीनी।। साहिब जी

674 जो डूबे सो ही उभरे, कोई सतगुरू ले बचा।
जो न डूबा सतगुरू प्रेम रस, कोन सके उसे बचा।। साहिब जी

675 जो नर सकाम कर्मों को त्याग कर, समर्पण सतगुरू ध्यान।
अब उसको क्या चाहिए, जिसका घर निजधाम।। साहिब जी

676 सांची सुरति जब होई, मन छूटे उसी पल।
ईंद्रियां उर्दमुखी हो गईं, दुख छूटे उसी पल।। साहिब जी

अध्याय बारहं

वे नाम जी कहते हैं :—

677 अर्जुन बोले श्री कृष्ण जी, मुझको दो समझाये।
भक्ति सर्गुण भली है, या निर्गुण की जाये।। साहिब जी

678 श्री कृष्ण साकार रूप, गुरू रूप तूं जान।
गुरू की महिमां गाने के लिए, जग में आये जान।। साहिब जी

679 साकार को तूं जान कर, निराकार की महिमां जान।
बिन साकार की महिमां के, निराकार की कैसी पहचान।। साहिब जी

680 मन माया सतगुरू मिटावे, जा सूं आत्म हंसा कहलाये।
मन माया जाये, जागा कहलाये तभी वह नर हंसा कहलाये।। साहिब जी

681 निराकार स्वांस स्वांस में रम रहा, कैसे होत पहचान।
सतगुरू देता सार नाम का दान, तब होती पहचान।। साहिब जी

682 सतगुरू में निराकार साकार, नांहि केवल सतपुरूष रम रहे।
इन सूं ही होती सतगुरू सब्द पहचान, किस में वे आप रम रहे।। साहिब जी

683 यह संसार शब्द पसारा, बिन सार सब्द नहीं पारा।
'वे नाम' साहिब सूं सब्द है पाया, तांहि सूं उतरे पारा।। साहिब जी

684 अभी तुम हो ही नहीं, तो कैसे पाना किसको पाना।
जब ही तुम निज को जानो, आत्म की होत पहचान।। साहिब जी

685 सत्य सब्द सतगुरू बिन नांहि, सतगुरू की करो पहचान।
खुद की जब पहचान हो गई, निर्गुण की होत पहचान।। साहिब जी

686 सतगुरू सिर पर राखिये, चलिये आज्ञा मांहि।
सतगुरू संग साथ जब, फिर डर की बात कुछ नांहि।। साहिब जी

687 सगुण उपासना जो करे, प्रेम सहित चित लाये।
श्रद्धा से भक्ति सिमरन करे, वही श्रेष्ठ कहलाये।। साहिब जी

688 कष्ट उन्हें अर्जुन बहुत, जो निगुर्ण लाये चित।
रूप रेख जिसका नांहि, किसको सिमरे नित।। साहिब जी

689 जो भक्ति (गुरू) मेरी करे, मुझ में लाये चित।
भय जन्म मरण का दूर हो, मुझे ध्यावें नित।। साहिब जी

690 अपने लाभ को भूल कर, परमार्थ के करता काज।
मोह माया सब छूट गये, अब सतगुरू करता काज।। साहिब जी

691 आत्म ज्ञान बिन छूटे ना, काल का ये संसार।
सार सब्द बिन मन ना मानता, नां टूटे इसकी तार।। साहिब जी

साहिब कबीर जी वाणी :–

क सुरति से संत देखते, साहिबन का वह देश ।
तहां नहीं चांद सूरज, तहां ना मन प्रवेश ।
तहां नहीं धरती, तहां नांहि पवन आकाश ।
तहां नहीं जाप अजपा, सार नाम का देश ।
तहां के गये संत ही आवें, देवें साहिबन संदेश।। साहिब जी

क सतपुरूष जी अगम हैं, सब घट व्यापक सोई।
उनकी जो भक्ति करे, आवागमण से मुक्त होई।। साहिब जी

क अमर मूल निज ग्रंथ है, कहे कबीर विचार।
अमर मूल है सब ते न्यारा, अमल मूल कहो विचार।
अमर मूल जाने बिना, कोई ना उतरे पार।
अमर मूल जो जानसी, छूटे काल जंजाल।। साहिब जी

क हेरत हेरत हे सखि, रहा कबीर हिराह।
समुन्द समाना बूंद में, सो कत हेरी जाई।। साहिब जी

क यही बड़ाई सब्द की, जैसे चुंभक भाये ।
बिन सब्द नहीं उभरे, केता करें उपाये।। साहिब जी

क सब्द सब्द सब कोई कहे, वह तो सब्द विदेह।
जीवा पर आवे नांहि, निरख परख के ले।। साहिब जी

क कबीर ऐको जानिया, तो जाना सब जान।
कबीर एक ना जानिया, तो जाना सब अजान।। साहिब जी

क सुमिरन मन की रिति है, भावे जहां लगाऐ।
भावें सतगुरू भक्ति करें, भावें विषय कमाऐ।। साहिब जी

क 'अमर मूल' निज ग्रंथ है, कहे कबीर विचार।
अमर मूल है सब ते न्यारा, अमल मूल कहो विचार।। साहिब जी

क अमर मूल जाने बिना, कोई ना उतरे पार।
अमर मूल जो जानसी, छूटे काल जंजाल।। साहिब जी

क यही बड़ाई सब्द की, जैसे चुंभक भाये ।
बिन सब्द नहीं उभरे, केता करो उपाये।। साहिब जी

क शब्द शब्द सब कोई कहे, वह तो सब्द विदेह।
जीवा पर आवे नांहि, निरख परख के ले।। साहिब जी

क कोटि नाम संसार में, तिन ते मुक्ति नां होये।
मूल नाम जो गुप्त है, जाने बिरला कोये।। साहिब जी

क काया नाम सबहि गुण गावैं, विदेह नाम एक कोई ।
विदेह नाम पावेगा सोई, जा का सतगुरू सांचा होई।। साहिब जी

क केवल नाम निःअक्षर अहि, निःअक्षर में रहे समाई।
निःअक्षर ते करै निवेरा, कहे कबीर सोई जन मेरा।। साहिब जी

क कबीर हरि के रूठते, गुरू की शरणी जाये।
कहे कबीर गुरू रूठते, हरि ना होत सहाये।। साहिब जी

क जा कारण जग ढूंडिया, सो तो घट ही मांहि।
परदा पड़ गया माया का, ता ते सूझे नांहि।। साहिब जी

क सुमिरन सुरत लगाये कर, मूर्ख मन से कुछ न बोल।
आशा तृष्णा पट बंद कर, सुरति का पट खोल।। साहिब जी

क सब आए उस एक सूं, डाल पात फल–फूल।
कबीरा पीछे क्या रहा, गह पकड़ी जब मूल।। साहिब जी

क देवी देवता कोटि जगत में, कोटि पूजे कोय।
सतगुरू की पूजा किये, सबकी पूजा होय।। साहिब जी

क नौ द्वार तेरे अंदर, दसवां योगी साध।
एकादशे खिड़की बनी है, जानत संत सुजान।। साहिब जी

क सतगुरू मोर सच्चा सूरमा, कसकर मारा बाण।
नाम अकेला रह गया प्यारो, पाया पद निवार्ण।। साहिब जी

क कोटि जन्म का पथ था प्यारो, सतगुरू पल में दिया पहुंचाये।
जब मैं था सतगुरू नांहि, अब सतगुरू है मैं नांहि।। साहिब जी

क जब मैं था तब सतगुरू नांहि, अब सतगुरू हैं मैं नांहि।
प्रेम गली अति सांकरी, तां में दो ना समाहि।। साहिब जी

क सुरति फंसी मन माया में, इसी सूं पड़ गया दूर।

मन माया सूं टूटी डोरी, आठों पहर हुजूर।। साहिब जी

692 सार सब्द सुरति धरे, त्यागे मन माया दुख देई।
कहे 'वे नाम' तिनों लोक में, पूर्ण जाग सोई।। साहिब जी

693 वेद शास्त्र अरू भागवत गीता, पढे जो श्रद्धा सूं।
तीन काल संतुष्ट मन, सतगुरू भक्ति सुरति सूं।। साहिब जी

694 कहता हूं कहि जात हूं, कहुं बजाय ढोल।
स्वांस स्वांस खाली जात है प्यारे, सार दात का जानो मोल।। साहिब जी

695 सुर नर मुणि जन और देवता, ब्रह्म विष्णु महेश।
ऊंचा देस साहिबन का प्यारो, पार ना पावे सोया देश।। साहिब जी

696 सब्द लाया सुरति सूं, आत्म हंसा हो जाये।
सुरति में सब्द सिमरते, सतगुरू दर्श पायें।। साहिब जी

697 सुरति सम कुछ जग में नहीं, मन तो केवल मान।
डाल दो सुरति सतगुरू में प्यारो, पाओ साहिबन दर्श महान।। साहिब जी

698 सतगुरू महिमां शब्दों बाहिरा, जाने सुमिरन हारा।
हर पल संग में साहिब प्यारे, जाने साधक प्यारा।। साहिब जी

699 सतगुरू महिमां अनंत है प्यारो, मौसे कही ना जाये।
तन मन सतगुरू को देकर, चरणन ध्यान लगायो।। साहिब जी

700 सब्द आया निजधाम सूं, जिसका आर ना पार।
निजधाम सतपुरूष का रूप है, सब्द सूं सुरति धार।। साहिब जी

श्री कृष्ण अर्जुन सूं :–

701 जो प्रेम सूं मेरी भक्ति करे, करण करावनहार मुझे जान।
खुद को सेवक जान ले प्यारे, जीवन सूं पार उसे जान।। साहिब जी

702 मेरा ध्यान भूल मत भाई, मोह सुमिरे चित लाई।
माया देख मत भूलो भाई, तेरा आवागमण मिट जाई।। साहिब जी

703 सतगुरू महिमां बरणी न जाई, श्री कृष्ण दुर्वासा ऋषि गुरू पाया।
श्री राम जो भी गुरू पायो, वशिष्ठ मुणि चित लाये।। साहिब जी

704 जात धर्म बीच में मत लाओ, जो आवे उसे दूर भगाओ।
मनुष्य जात धर्म प्यारा, जो जाने सो उतरो पारा।। साहिब जी

705 जब तक नाता जाति धर्म का, मान की तार संग साथ।
नाता तोड़ सतगुरू भजे, भक्ति तार संग साथ ।। साहिब जी

706 बड़े गये अपने बड़े, रोम रोम अहंकार।
सतगुरू के परिचय बिना, चारों वर्ण नांहि पार।। साहिब जी

707 सब जग झूठा जान के, सतगुरू की करो तलाश।
सार सब्द को पा लिया तो, हर पल तेरे साथ।। साहिब जी

708 प्यारो कमाई जाग कर, कभी ना निष्फल होये।
जब कभी पुकार दे, सुख प्रेम आनंद की वर्षा होये।। साहिब जी

709 जप तप मन का फेर है, परम पुरूष सब्द ध्यावें संत।
सब, निज धर्म पुराण छूटे, ऐसो धर्म सिद्धांत।। साहिब जी

संत सहजो बाई जी कहती हैं :–

स गुरू चरण दास जी की शिष्या सहजो बाई।
बड़े सुन्दर तर्क सूं, गुरू महिमां है गई।। साहिब जी

स हरि तजुं गुरू को ना बिसारूं।
गुरू के संग हरि को ना निहारूं।। साहिब जी

स हरि ने जन्म दिया जग मांहि।
गुरू ने आवागमण छुड़ाई।। साहिब जी

स हरि ने पांच चोर दियो साथ।
गुरू ने लई छुड़ाय अनाथ।। साहिब जी

स हरि ने कटुम्भ जाल में घेरा।
गुरू ने काटी ममता बैरी।। साहिब जी

श्री कृष्ण कहें :–

710 सुन अर्जुन तात, दुख सुख इक सम जान।
हानी लाभ विजय पराजय, इसे भी तूं इक सम जान।। साहिब जी

711 मन में कुछ विचार ना आवे, यही है दुख का आधार।
धर्म युद्ध ईच्छा रहित कर, गुरू आज्ञा अनुसार।। साहिब जी

साहिब मीरां बाई कहती हैं :–

म मीरा रवि दास सतगुरू पाये, राम नाम नित गया।
जहर मिला अमृत कर पिया, राणा मार न पाया।। साहिब जी

म हरि ने रोग भोग उरझायो, गुरू भोगी कर सबे छुड़ायो।
हरि ने कर्म धर्म भरमायो, गुरू ने आत्म रूप लखायो।। साहिब जी

म हरि ने मौसे आप छिपायो, गुरू दीपक दे ताही दिखायो।
चरण दास पर तन मन वारूं, गुरू ना तजुं हरि को तज डारूं।। साहिब जी

712 मोल अमोलक नर तन पायो, ऐसी कृपा तेरी कर्म कमाई।
सतगुरू ध्यान भूल मत भाई, सतगुरू कृपा पार ले जाई।। साहिब जी

713 इड़ा पिंगला सम कर भाई, सुशिमन द्वार खोल जाई।
लागे तार त्रिवेणी रे धारा, ऊंची त्रिकुटि घाटी चढ़ जाई।। साहिब जी

714 अखण्ड ज्योति जले दिन राति, बिन दीपक बिन बाती।
जो कोई सुने आवाज दीप की, तेरी कोई ना पूछे जाती।। साहिब जी

715 सकाम कर्म और कोरा चिन्तन, भक्ति भाव सूं दूर।
भक्ति भाव सुरति सूं प्रगटे, आशा तृष्णा सूं दूर।। साहिब जी

श्री कृष्ण जी कहते हैं:—

716 मन में श्री कृष्ण का ही वासा, बुद्धि दो उनमें डाल।
सदैव मुझ में निवास कर, यही भक्ति की ढाल।। साहिब जी

717 जो चित को अविचल भाव से, मुझ में सको न डाल।
भक्ति योग विधि पालन कर, चित में लो मुझे डाल।। साहिब जी

718 यदि यह भी ना हो सके, मेरे लिये कर्म कमा।
ऐसा करने से भी प्यारे, मुझ को लोगे पा।। साहिब जी

719 फल की इच्छा त्याग दे प्यारे, कर्म में चित को डाल।
संकल्प आत्म को स्थिर करने का, चित में लो उसे डाल।। साहिब जी

720 अभ्यास, ज्ञान से श्रेष्ठ, केवल ध्यान तूं जान।
ध्यान से भी श्रेष्ठ प्यारे, कर्म फल को ले जान।। साहिब जी

721 द्वेष भाव जो रखता नांहि, सब जाने एक समान।
निज को नहीं मालिक तुम जानो, मान अहंकार सूं ना काम।। साहिब जी

722 जो दुख सुख में एक समान रहे, आत्म सुरति महान।
मन बुद्धि स्थिर हो उसकी, सुरत सब्द में ध्यान।। साहिब जी

723 जिस नर में श्री कृष्ण (सतगुरू) वासा, वे ही भक्त महान।
सदा रहे वह सतगुरू ध्यान में, पाये मोक्ष का दान।। साहिब जी

724 मित्र शत्रु एक सम जाने, मान अपमान एक सम जाने।
दुख सुख में डोले नांहि, यश अपयश में सम भाव जाने।। साहिब जी

725 जो जन एक मोन धार ले, हर हाल संतुष्ट तूं जान।
घर बाहिर की चिंता नांहि, ज्ञान में दृढ़ चट्टान समान।। साहिब जी

726 ऐसे नर भाये श्री कृष्ण को, उसे उनका प्रिय तूं जान।
मन स्थिर कर नित उनको भजता, उनका प्यारा उसे जान।। साहिब जी

727 जैसी प्रीति कुटुंभ सूं तेरी, सतगुरू सूं सुरति जोड़ो।
ऐसी प्रीति जब जग जाये, साहिब भी संग जोड़ें।। साहिब जी

728 सतगुरू सम जग दाता नांहि, दे सार सब्द का ज्ञान।
तीन लोक की संपदा प्यारे, केवल धूल समान।। साहिब जी

729 सतगुरू बिन ज्ञान न उपझे, लाख विधि जे करे।
सार नाम की दात बिना, भवजल पार ना कोई करे।। साहिब जी

730 जाका गुरू है अंधा, चेला खरा निरंध।
अंधा अंधे पे लिया, पड़ा काल के फंद।। साहिब जी

731 सिद्ध साध त्रिदेवादि ले, पांच शब्द में अटके।
मुद्रा साथ रहे घट भीतर, फिर औंधे मुंह लटके।। साहिब जी

732 करे करावे आपे आप, मानुष के कछु नांहि हाथ।
जो कहे कि मैं कुछ करता, फिर फिर गर्भ योनि में।। साहिब जी

733 सर्व धर्म फरमात यह, ईश्वर सामर्थ सत्य।
ईश्वर, साहिब में अंतर है, कोई बिरला जाने सत्य।। साहिब जी

प्रेम संदेश

वे नाम कहें :—

734 मोह जब लग त्यागा नहीं, तब लग नहीं वैराग।
जा सुरति में वैराग नहीं, तां समाधि नहीं लाग।। साहिब जी

735 सतगुरू धोबी शिष्य कापड़ा, साबुन सार सब्द तूं जान।
सुरति सिला पर धोईये, आत्म हंसा जान।। साहिब जी

736 सतगुरू हमसे रीझ के, कहा एक प्रसंग।
बरसा बादल प्रेम का, भीज गया सब अंग।। साहिब जी

737 साहिब के घर कौन कमी, किसी बात की ईच्छा नांहि।
पलटू जो दुख सुख लाख पड़े, नाम सुधा रस चाखिये।। साहिब जी

738 हरि कृपा जो होये तो, काल का ना छूटे संग।
कहे कबीर सतगुरू कृपा बिन, मन सूं ना छूटे संग।। साहिब जी

739 सतगुरू कृपा सूं नर हंसा कहावे, जा सिधावे सतलोक।
ये काज जतन सूं ना होई, सतगुरू कृपा सूं निज लोक।। साहिब जी

740 संत सुरति गति चन्द्रमां, साधक नैन चकौर ।
आठों पहर निरखत रहे, सतगुरू चरणन की ओर।। साहिब जी

741 सुरति समागम प्रेम सुख, पूर्ण भक्ति विशवास।
संतन सेवा ते पाये, संतन सुरति निवास।। साहिब जी

742 जल परमाने माछली, कुल परमाने शुद्धि।
जो को जैसा संत मिला, ताको तैसी बुद्धि।। साहिब जी

743 वचन कर्म मन मोरी गति, भजन करहि निःकाम।
तिन के ह्रदय कमल महुं, करूं सदा विश्राम।। साहिब जी

क पुष्प वास से पातला, वायु से अति झीन।
पानी से उतावला, दोस्त कबीरा कीन।। साहिब जी

744 ना तूं कर्ता कल था, नां तूं कर्ता होगा फिर कल।
आज तूं कर्ता कैसे बन गया, जीना सीख ले इसी पल।। साहिब जी

745 पिंड ब्रह्मण्ड वेद कितेब, पांच तत्व के पार।
सतलौक जहां पुरूष विदेही, वह सच्चा दरबार।। साहिब जी

746 जब अच्छा बुरा कोई है नांहि, किस सूं कहुं कोई भेद।
जिसे देखूं साहिबन रूप है, अंदर की आंख सूं मिटे सब भेद।। साहिब जी

747 मन गया माया गई, कुछ अपना नहीं बिन एक।

अपना तो कुछ था नहीं, एक सूं आये अनेक।। साहिब जी

748 साहिब, भगवान (निरंझन) भी मिले, कैसे करूं मैं भेद।
सब अपना अपना कार्य कर रहे, छोटे बड़े में कैसा भेद।। साहिब जी

749 जो कुछ आया तीन लोक में, सतपुरूष किया तैयार।
निःअक्षर सब्द सूं सब आया, सुरति सब्द साहिबन प्यार।। साहिब जी

750 प्यार सूं उपझे तीन लोक हैं, प्यार सूं हंसा रूप ।
प्यार सूं ही निराकार भगवान, प्यार सूं बिन न ही रूप।। साहिब जी

751 प्रेम सूं दुख सुख एक हैं, प्रेम है सुरति अंग।
प्रेम ही अमर लोक है, प्रेम बिन एक ना अंग।। साहिब जी

752 काम क्रोध मद्य् लोभ, ये सब मन माया के अंग।
ये सब जीव भरमावते, केवल मन तरंग।। साहिब जी

753 सतगुरू मारा तानी के, सब्द सुरंग बाण।
मेरा मारा फिर जिये, तो हाथ ना गहुं कमान।। साहिब जी

754 काम क्रोध आदि आते जाते, ये नहीं आत्म के अंग।
जागें तो इनका भेद मिले, पल में छूटे संग।। साहिब जी

755 सुरति हमारी मन में बसे, निरति प्राण आधार।
मूल सुरति आत्म अंग है, सात सुरति आधार।। साहिब जी

756 हंसा तूं तो सबल था, अटपट तेरी चाल।
रंग बेरंग में खो गया, अब क्यों फिरत बेहाल।। साहिब जी

757 नशे में सभी हैं, सभी हैं पी रहे।
पर कोई एक प्यारा, दूर खड़ा देख रहा।। साहिब जी

758 कोई पी रहा है लहु आदमी का, क्योंकि है सोया हुआ।
किसी को नज़र से पिलाई जा रही, अभी वह नहीं जागा हुआ।। साहिब जी

759 अनेक बंधन ते बांधिया, नर विचारा जीव।
मन के रंग नहीं जानता, बिन सतगुरू के जीव।। साहिब जी

760 तन सूं सुखिया कोई जग नहीं, बिन सतगुरू की बात।
सार सब्द की दात बिन, सुख की मत कर बात।। साहिब जी

761 कामी का गुरू कामिनी, लोभी का गुरू दाम।
साधकों का गुरू संत प्यारो, संतो का गुरू साहिबन नाम।। साहिब जी

762 सुरति का सब खेल है, मन की नहीं पहचान।
सुरति मन के वश पड़ी, निज की करो पहचान।। साहिब जी

763 गुरू के सुमिरन मात्र से , विनशत विघ्न अनंत।
ताते सर्वा रंभ में, ध्यावत हैं सब संत।। साहिब जी

764 कर्म करना है हर जीव को, कर्म से रहो निर्लेप।
कमल फूल जल में रहे, कीचड़ से रहे निर्लेप।। साहिब जी

क गुरू हैं बड़े गोविंद से, मन में देख विचार।
हरि सुमिरे सो बार है, गुरू सुमिरे सो बार।। साहिब जी

765 आत्म ज्ञान सार सब्द सूं, सतगुरू मिले ताही बने बात।
बिन सतगुरू नर भटकता फिरे, कभी बने ना बात।। साहिब जी

766 हर जीव माया वश पड़ा, कर्ता जाने निज आप।
खुद को जाने निमित्त बिन जब, मालिक कर्ता बनेगा आप।। साहिब जी

क तन थिर मन थिर, सुरति निरति थिर होये।
कहें कबीर वा पलक को, कल्प ना पावे कोये।। साहिब जी

767 हरि सेवा युग चार हैं, सतगुरू सेवा पल एक।
तिसका पटतर ना तुला, संतन किया विवेक।। साहिब जी

768 ब्रह्मं लोक चार करोड़ सूर्य से प्रकाशत, कोई कोई पहुंचा देश।
विहंगम चाल सूं कोई कोई पहुंचे, जोत सरूपी देश।। साहिब जी

769 सतगुरू कृपा बिन पहुंचे नहीं, कोटन करे उपाये।
कोटि जन्म का पथ था, सतगुरू पल में दिया पहुंचाये।। साहिब जी

770 चला जब लोक को शोक सब त्यागिया, हंस का रूप सतगुरू बनाई।
कीट ज्यों भृंग को पलट भृंगी करे, आप संग रंग ले ले उड़ाई।। साहिब जी

संत वाणी अनुसार :–

स अगर है शोक मिलने का, तो हरदम लौ लगाता जा।
जला कर खुश नुमाई को, भस्म तन पर रमाता जा।। साहिब जी

स पकड़ कर नाम मा झाड़ू, सफ़ा कर हुज़रे दिल को।
मुताले जो किया कुछ है, वह दिल से सब भुलाता जा।। साहिब जी

'वे नाम' कहें :–

771 सब कार्य कर्ता केवल मालिक, उसी के कृतज्ञ रहो तुम आप।

पाप तुमको ना छू सके, जो वोहि है कर्ता तुझ में आप।। साहिब जी

772 निष्काम भाव से जो कर्म करे, मन माया से मुक्त कहलाये।
उसका आपा जब मिट गया, अब दाग़ कहां लग पाये।। साहिब जी

773 बिना जाने भक्ति नहीं, कैसे होगी पहचान।
सतगुरू बिन बात ना बनती, बिन खुद की पहचान।। साहिब जी

क सतगुरू आज्ञा ले आवही, सतगुरू आज्ञा ले जाहीं।
कहें कबीर ता दास को, तीन लोक डर नांहि।। साहिब जी

774 अब मै तो पूरी मिट गई, अंत तू ही केवल रह जाये।
तू ही तू कर्ता मै गया, मै मेरी मिट जाये।। साहिब जी

775 नाम हमारा जगत सब लहई, भेद विरला कोई एक।
भेद हमारा सार सुरत सब्द में, पावे बिरला कोई एक।। साहिब जी

776 सार सुरत सब्द सतलोक से आयो, पूर्ण सतगुरू पास।
प्रेम सूं जो कोई दात को पावे, अमर लोक में वास।। साहिब जी

777 अर्जुन मन ईन्द्रियों वश पड़ा, युद्ध से भागना चाहे।
आशा तृष्णा के जाल पड़ा, जाल से निकल ना पाये।। साहिब जी

क नाम निःअक्षर न्यारा भाई, तांहि में तुम रहो समाई।
बड़े बड़े सिद्ध साधक भयऊं, नाम भेद तांहि न लहऊं।। साहिब जी

क कहे कबीर निज नाम बिन, मिथ्या जन्म गंवाय।
निर्भय मुक्ति निःअक्षर, गुरू बिन कबहुं ना पाय।। साहिब जी

क आदि नाम निज मूल है, और शब्द सब डार।
कहे कबीर निज नाम बिन, डूब मुआ संसार।। साहिब जी

क जन्म मरन मिटे ना जीव का, खोज ना पावे सच्चा पीव।
कहें कबीर गुप्त घर हंसों का, कोई लेह भेद ना पीव।। साहिब जी

778 जग में मरता कोई है नांहि, हंसा नया चोला लिये फिर आये।
जब तक ''वे नाम'' सब्द की दात ना मिले, आवागमण ना जाये।। साहिब जी

779 मन माया मिटे जो हंसा बने, तभी मुक्ति हो संग साथ।
बिन पूर्ण सतगुरू शरणी मिले, मुक्ति कबहु ना संग साथ।। साहिब जी

780 तीन लोक में चार मुक्ति योग, पित्तर स्वर्ग सुन्न और महांसुन्न।
इन में पूर्ण मुक्ति नांहि, भौग भौग फिर जन्म का भौग संग साथ।। साहिब जी

781 कईं बार तूं ईन्द्र भयो, कंई बार कीट पतंग में वास।
सतगुरू निजधाम से होके आयें जब, तब मुक्ति हो ताके पास।। साहिब जी

782 सदा आनंद होत वा घर, कबहुं ना होत उदास।
परम पुरूष जहां आप विराजे, हंसा करत विलास।। साहिब जी

783 हर्ष शोक वहि घर नहीं, नहीं लाभ नहीं हान।
सब हंसा परमानंद में, धरें पुरूष को ध्यान।। साहिब जी

784 जब मन सूक्ष्म रूप में, मूल सुरति में करता वास।
तब लग हंसा आत्म रूप में, मन का भी संग साथ।। साहिब जी

785 हंसा निर्मल मन बिना, विहंगम चाल सूं उस पार।

अंतिम पराकाष्ठा पर पहुंचे, परम हंस रूप ले धार।। साहिब जी

786 सुरति सूं निज देश को, परम हंसा देखें कईं कईं बार।
मकर तार के भेद को, जानत सतगुरू सरकार।। साहिब जी

787 सुरति सूं देखो सखी, परम प्यारे का देश।
कंई बार सुरति रोके, देख साहिबन का देश।। साहिब जी

788 सुरति निरति मेला भला, जहां सुरति आन समावे निरति।
मन का संग तब छूटता, दोनों रूप महान सुरति।। साहिब जी

789 जहां लग मन वाणी, तहं लग काल का वास।
मन वाणी परे निःअक्षर है, सो सतगुरू संग साथ।। साहिब जी

क संत स्नेही नाम है, नाम स्नेही केवल संत।
नाम स्नेही एक संत ही, नाम को वही मिलावे।
वे ही है वाकिफकार, मिलन की राह बतावे।। साहिब जी

790 परम हंसा जी बोले, जित देखूं तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।। साहिब जी

791 अब ना तन संग रहा, ना ही रहा संग मन।
सतगुरू कृपा सूं सार नाम सूं, सुरति निरति का हो गया संग।। साहिब जी

792 भाव की डोरी टूट गई, ब्रह्मा विष्णु महेश।
सार नाम जिन पा लिया, छूटा दुख क्लेश।। साहिब जी

793 सार नाम ही निःअक्षर रूप, सुरति निरति का करता मेला।
मूल सुरति तब बनी, जब तन मन का छूटा खेल।। साहिब जी

794 संत बड़े पर्माथी, शीतलता इनके अंग।

तपत बुझाएं ओरन की, दे दे अपना रंग।। साहिब जी

795 नाम बिन ह्रदय शुद्ध ना, लख कर्म करे जो कोई।
जब लग दात सार नाम नहीं, मोक्ष मिले ना कोइ।। साहिब जी

796 सार नाम/विदेह नाम, काल पुरूष सूं ले छुड़ाये।
सार नाम आत्म चेतन करे, पल में ले छुड़ाये।। साहिब जी

क सतगुरू नाम सुमिरते, उभरे पतित अनेक।
कहे कबीर ना छाड़िये, सतगुरू नाम की टेक।। साहिब जी

797 बिन पूर्ण सतगुरू शरणी के, ये दात ना आवे हाथ।
सतगुरू जाते निजधाम को, साहिब देते सत्त सब्द की दात।। साहिब जी

798 नाम रत्न धन पाये के, गांठों बांध न खोल।
नहीं पाट नहीं पार भी, नहीं गाहक नहिं मोल।। साहिब जी

क चिंता तो सतगुरू नाम की, और ना चितवे दास।
जो कछु चितवे सार नाम बिनु, सोई काल की फांस।। साहिब जी

799 यज्ञ कर्म फल में वृद्धि करें, मोक्ष का मार्ग नांहि।
योग ध्यान और यज्ञ सूं, चार मुक्ति का मार्ग इन मांहि।। साहिब जी

800 सब्द पाये सुरति राखहिं, सो पहुंचे दरबार।
कहे दास तहां पाया, साहिब सतपुरूष प्यार।। साहिब जी

संत वाणी अनुसार :—

801 गुरू के चरण कंवल चित राखुं, आठ सिद्धि नौ निधि सब नाखूं।
सकल पदार्थ गुरू पग मांहि, गुरू पग परसे सब दुख जाहिं।। साहिब जी

802 गति मति परसे गुरू पग परसे, गुरू पग परसे त्रिभुवन दरसे।
गुरू पग परसे ब्रह्मा विचारे, गुरू पग परसे माया छांड़े।। साहिब जी

803 गुरू पग परसे जोग जुगन्ता, गुरू पग परसे जीवन मुक्ता।
गुरू पग परसे बंधन छूटे, मोह ममता की फांसी टूटै।। साहिब जी

804 गुरू पग परसे हरि पद पावै, रहे अमर है गर्भ ना आवै।
चरण दास पग महिमां भारी, बार बार सहजो बलि हारी।। साहिब जी

805 सार सब्द का सुमिरन करि है, सहज अमरलोक निस्तारी।
सुमिरन का बल ऐसा होई, कर्म काट सब पल में खोई।। साहिब जी

806 जाके कर्म काट सब डारा, दिव्य ज्ञान सूं उजियारा।
तत्व सार सुमिरन है भाई, जा बल हंसा पावे निजघर प्यारा।। साहिब जी

807 तीन लोक में काल है प्यारो, चोथा नाम निरवान।
जो नर ये भेद ना जानहि, सो नर काल मेहमान।। साहिब जी

श्री कृष्ण जी कहते हैं :– हे अर्जुन,

808 पित्तरों देवताओं भूतों की भक्ति त्याग कर, मुझ में आन समा।
एक राम संदेश हैं देते, गुरू चरणन शीष निवा।। साहिब जी

'वे नाम' कहें :–

809 वेद हम्हें धर्म अधर्म तथा, मोक्ष का मार्ग देते बतला।
ध्यान योग विधियों पर चलते हुऐ, चार मोक्ष दिये बतला।। साहिब जी

810 ये चार मोक्ष बंधन में डालते, पूर्ण मोक्ष नांहि।
सार सब्द दात के बिन, कभी भी मोक्ष नांहि।। साहिब जी

811 बैकुण्ठ में केवल सर्वश्रेष्ठ सुख, भौग कर मृत्यु लोक ही आना।
ये भी क्या कोई मोक्ष है, मन छूटे तो ही है मोक्ष पाना।। साहिब जी

812 मन सूं चार पाप नर कर रहा, क्रौध ईर्ष्या द्वेष और छल।
इन चारों को करने के लिये, बिन आत्म होत ना हल।। साहिब जी

813 काया सूं नर तीन पाप है करता, चौरी हिंसा व्यभचार।
इन तीन पाप कर्मों में, आत्म भी है भागीदार।। साहिब जी

814 वाणी सूं तीन नर तीन पाप है कर रहा, गारी निंदा और झूठ।
इन तीन में भी आत्म का, होता सहयोग नित्य साथ।। साहिब जी

815 श्री कृष्ण अमृत की खान प्यारो, बिन मान तजे बने ना महान।
मान तजे समर्पण उपझे प्यारो, सतगुरू चरणन में लागे ध्यान।। साहिब जी

816 श्री कृष्ण अर्जुन को दे रहे ज्ञान प्यारो, अर्जुन पकड़ो मन तीर।
दुख के बादल चहुं ओर फैले प्यारो, जीवन भूला अर्जुन वीर।। साहिब जी

817 ईच्छा दुख का मूल प्यारो, माया मन का खेल।
जीव तूं तो हंसा सुरति, सुरति मन का कैसा मेल।। साहिब जी

न नानक एको सुमरिये, जल थल रहा समाये।
दूजा काहे सुमरिये, जो जन्में ते मर जाये।। साहिब जी

क काया नाम सबहिं गुण गावें, विदेह नाम कोई बिरला पावै।
विदेह नाम पावेगा सोई, जिस का सतगुरू सांचा होई।। साहिब जी

क पाप पुण्य जानो दौ बेड़ी, ईक लोहा इक कंचन केरी।
मन माया को ऐको जानो, दुख की जानो यह डेरी।। साहिब जी

क मन मुरीद संसार है, गुरू मुरीद कोई साध।
जो माने गुरू वचन को, ताका मता अगाध।। साहिब जी

सगुण भक्ति में त्रिगुण सत्त रज तम गुण भक्ति का महत्व है

818 हर हर नाम सदा शिव केरा, तासों दूर ना होत भव फेरा।
बहुत प्रति सों शिव को ध्यावे, रिद्धी सिद्धि बहुत सुख पावे।। साहिब जी

819 मन जिसका निष्चय कर धरहिं, गिरि कैलास में वासा करहीं।
फिर के काल झपेटे बाहीं, डार देव भवसागर माहीं।। साहिब जी

तमोगुण – तमोगुण भक्ति शिव की भक्ति से कैलाश पर्वत पर वास पा लोगे, रिद्धि सिद्धियां और बहुत सुख आदि भी मिल जाएगा, परन्तु भव सागर से पार नहीं हो पाएगा। क्योंकि काल पुरूष के यम पुनः बाहों से पकड़ कर भव सागर में डाल देंगे। आगे फिर कह रहे हैं :–

820 शिव साधन की यह गति, शिव हैं भव के रूप।
बिन समझे यह जगत सब, परे महां भ्रम के कूप।। साहिब जी

इस भक्ति से हमारा कल्याण नहीं हो सकता, आओ सतगुण श्री विष्णु जी की भक्ति का लक्ष्य जाने :–

821 बहुत प्रीत सों विष्णु जो ध्यावे, सो जीव बैकुण्ठ जावे।
विष्णु पुरी बैकुण्ठ में निर्भय नाहीं, फिर के डार देह मुड़ावे।। साहिब जी

सतोगुण – 'वे नाम' कह रहे हैं सतगुण भक्ति भी सुरक्षित नहीं है, स्वर्ग लोक तक पहुंच जायेगा, पर फिर पुण्य क्षीण होने पर भव सागर में पड़ने का भय बना हुआ है।

रजगुण भक्ति महिमां :–

822 हरि हर ब्रह्म को है नाऊं, रज गुण व्यापक है सब ठाऊं।
ब्राह्मण को पूजे संसारा, जीव ना होवे भव ते न्यारा।। साहिब जी

823 पढ पढ़ विद्या जग भरमावे, भक्ति पदार्थ कैसे पावे।
पोथी पाठ पढ़े दिन राती, जग को धौखा दे जावे।। साहिब जी

824 आप भरम ते निर्भय नाहीं, जात पात भ्रम के मांहि।
औरन को शिक्षा सब देही, ताते मिलै न परम स्नेही।। ।। साहिब जी

825 पाप पुण्य का लेखा करहीं, बिना भक्ति चौरासी परहीं।
यह सब धोखा काल पुरूष का, बिन सतगुरू कबहु ना तरही।। साहिब जी

रजोगुण – रजगुण, ब्रह्मा भक्ति में भी मुक्ति पाने का कोई मार्ग नहीं है, इस भक्ति में भी मुक्ति नहीं है। बार बार मृत्यु लोक में आना पड़ेगा और फिर आत्मां कल्याण के लिए आगे बड़ना होगा। निर्गुण भक्ति में योगी योग करता है पर योग साधना से भी आत्मां इस भव सागर से पार नहीं होगी। इस से भी सभी निरंजन में ही समाते हैं। इस से आगे जाने का मार्ग नहीं जान पाते और सभी तीन लोकों में ही रह जन्म मरन के चक्कर में फंसे रहते हैं। बिन पूर्ण संत के कोई सत्य भक्ति को नहीं पा सकता। सत्य भक्ति सच्चे नाम (सार नाम/मूल नाम) की ताकत के बिना आत्मां काल पुरूष के जाल से निकल कर निजघर नहीं जा सकती है। यह नाम वह है जो लिखा ना जाये, पढ़ा ना जाये, ये तो नाम विदेह कहलाता है। नाम का अर्थ है आत्मां को चेतन करना। आत्मां को उसकी शक्ति बताना है। पूर्ण सतगुरू आत्मां को एक पल में चेतन कर देता है। इसे नाम देने का दान कहते हैं। इस नाम दान के बिना कोई भी जीव पूर्ण

मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता। संत मत सुरति को चेतन करने का मार्ग है। महां निर्वाण केवल पूर्ण सतगुरू ही दे सकता है।

अध्याय तेरहं

श्री भगवान कृष्ण यूं वर्णन कर रहे हैं :–

826 यह तन जान क्षेत्र, जो जाने क्षेत्रज्ञ कहलाये।
हर तन में, मन और आत्मां वासा, प्राण संग जीव कहलाये।। साहिब जी

827 सब क्षेत्रों में मेरा वासा, मुझे ही क्षेत्रज्ञ ले जान।
क्षेत्र क्षेत्रज्ञ के भेद को पा लो, यही है सच्चा ज्ञान।। साहिब जी

828 मन रूप में काल पुरूष, हर जीव में वासा जान।
सहस्त्र सुषिमन में, उसी को कर्ता मान।। साहिब जी

829 काया सों तीन पाप नर करे, चोरी, हिंसा, व्यभिचार।
इन तीन पाप कर्म में, आत्म देव का करो विचार।। साहिब जी

830 वचन सूं तीन पाप नर करे, गाली, निंदा, झूठ।
इस में भी तुम जान लो, पूर्णता आत्म संग साथ।। साहिब जी

831 मन सों भी चार पाप नर करे, क्रोध, ईर्ष्या, मान और छल।
इन में भी तुम जान लो, आत्म जाने बिना कोई नहीं हल।। साहिब जी

832 साफ साफ सब दिख रहा, आत्म पड़ी मन वस ।
बिन सार नाम की दात के, मन तोड़े ना आत्म साथ।। साहिब जी

833 मन गुप्त रूप में सब के संग, हर पल आत्म के संग साथ।

श्री कृष्ण वेद निराकार बखाने, मन काल रूप संग साथ।। साहिब जी

834 ज्योति स्वरूप निराकार है, जिन रचयो सकल संसार।
जो इस भेद को जान ले, तीन लोक सूं न्यार ।। साहिब जी

835 जग में चारों राम पसार, तीन राम बसें संसार।
सतलोक के चौथे राम, सुरति सूं जोड़ो तार।। साहिब जी

क जग में चारों राम हैं, तीन राम संसार।
चोथे लोक के चोथे राम, ता सूं जोड़ो तार ।। साहिब जी

836 भक्ति अवस्था जब प्राप्त भई, सब गुण संग ज्ञान।
सतगुरू बिन पार ना, बिन सतगुरू मिले ना ज्ञान।। साहिब जी

837 अहंकार मान इर्ष्या क्रोध से, जीव ना आवे बाहर।
धन सुंदरता शरीर बल ज्ञान का अहंकार।। साहिब जी

838 मन शक्ति सूं भरा शरीर, पद, प्रतिष्ठा, अहंकार।
मन बुद्धि चित अहंकार वश, काम क्रोध लोभ मोह अहंकार।। साहिब जी

839 निरंजन हर जीव संग, काल पुरूष कहलाये।
बिन सतगुरू संग ना छूटता, तुम केता करो उपाये।। साहिब जी

840 मन माया जब छूटती, आत्म हंसा कहलाये।
मन की कैद में केवल आत्मां, छूटे हंसा हो जाये।। साहिब जी

841 जीवत कोई नहीं मर रहा, फिर फिर आवे लिये शरीर ।
जीवत मरने से तन मन छूटता, आत्म छोड़े मन शरीर।। साहिब जी

842 नर देह मन बुद्धि है नहीं, हम सब हंसा सुरति रूप ।
देह सुख दुख रोग सब पा रही, आत्म है निरलेप।। साहिब जी

843 श्री कृष्ण अर्जुन को कह रहे, तूं देह नहीं, है आत्मां।
देह ही पुरानी होत है, एक ही अमर जानो आत्मां।। साहिब जी

844 तूं छिलका नहीं है प्यारे, तूं अविनाशी हंसा रूप ।
सुरति में यह भाव धरो, दास केवल हंसा रूप ।। साहिब जी

845 यह भाव सुरति में जब चले, अति आनंदित हंसा रूप।
कोई जग में है नांहि, जा सों मिटे, नष्ट हो मम रूप।। साहिब जी

846 बिन तन हंसा सत लोक में, तन पाया इस संसार।
सतगुरू सूं सार नाम को पा ले, वे नाम कह सो पार।। साहिब जी

847 देह मैला पाटा कपड़ा, जीवत करो त्याग।
मृत्यु का सब डर गया, आत्म करे तन त्याग ।। साहिब जी

848 सच्चा ज्ञान तूं जान ले, देह और आत्मां बिन जान।
इस मर्म जे जानना, वे नाम की कर पहचान।। साहिब जी

849 श्री कृष्ण अर्जुन को पूर्ण ज्ञान दिया, आत्म तन मन का भेद।
तन मन सूं आत्म हंसा नहीं, तन मन छूटे हंसा भेद।। साहिब जी

850 बिन जाने मन माया भेद को, छूटे ना काल का साथ।
जैसे नढ नढवर को दुखदेई, नाना नाच नचावे एक साथ।। साहिब जी

851 मिथ्या अहंकार मन अर्थ, तन को माने आत्मां।
निज की नर पहचान कर, हंसा कर निज आत्मां।। साहिब जी

852 प्यारे आत्म ज्ञान बिन, तूं निज को सोया जान।
पूर्ण सतगुरू पहचान बिन, निज की ना होत पहचान।। साहिब जी

853 माया का सुख चार दिन, छूटे ना काल का साथ।
सपनों पायो राज धन, जागे छूटा साथ ।। साहिब जी

854 माया मन का खेल है, माया तजि ना जाये।
जो भी मन की उपज है, झूठा साथ कहलाये।। साहिब जी

855 माया तजना सब कहत हैं, पहले मन को ले तूं जान।
बिन सतगुरू मान जाये नहीं, कैसे हो मन की पहचान।। साहिब जी

856 सार नाम मान छुड़ावन हार है, सतगुरू सूं मिलती दात।
यही सब्द विदेह है, जो मन पर करता घात।। साहिब जी

857 धीरे धीरे जग वासियो, मीठी चोट सूं मान मर जाये।
माली सींचे सो घड़ा, रूत आवे फल फूल आ जायें।। साहिब जी

858 मोह पाना ही दण्ड है, सुरति सूं सतगुरू ध्यान।
मोह तज ज्ञान को पा ले, एक बिन नहीं कोई और ध्यान।। साहिब जी

859 सतगुरू कृपा सूं सब होत है, सुरति की महिमां जान।
सुरति सूं मन माया मिटे, सार सब्द पर धरो ध्यान।। साहिब जी

860 सुरति सूं सिमरन यूं करो, देख सके ना कोये।
मुख मन से ना बोलिये, सुरति मन पकड़ ना पाये।। साहिब जी

861 वेश फकीरी निज भ्रम है, मन रहता संग साथ।

सुरति में प्रेम जो भरे, प्रेमी प्रेसी एक प्रेम संग साथ।। साहिब जी

862 पढ़ना लिखना दूर कर प्यारे, पुस्तक सूं कोसों दूर।
बावन अक्षर छोड़ के, सार नाम सुरति सूं मन हो दूर।। साहिब जी

क जिन ढूंढा तिन ही पाइयो, गहरे पानी पैठ।
मैं बपुरा बूंजन डरा, रहा किनारे बैठ।। साहिब जी

863 हंस आत्मांऐं सदा रहें, सेवा में केवल सतपुरूष।
नर ये भेद जाने नहीं, जपे केवल ब्रह्म काल पुरूष।। साहिब जी

864 श्री कृष्ण भगवान तीन लोक में, सर्व व्यापी रूप में स्थ्ति।
अनन्त सिर, हाथ पांव, सुंदर नेत्र निज साथ।। साहिब जी

865 सतगुरू दर्शन को जाये, टूटे गहरी नींद।
नींद ही रात्री जीव को, सार नाम सूं टूटे नींद।। साहिब जी

866 सुर नर मुनि सबन की रीति, स्वार्थ कारण करहिं सब प्रीति।
इस सूं कुछ भी हाथ ना आवे, काल संग लगे जो प्रीति।। साहिब जी

867 साहिब बुलावा भेजिया, दिया 'वे नाम' संदेश।
जो नर मन माया पड़ा, वह निज धाम कैसे ढीठ।। साहिब जी

868 परोपकार सों बड़ कर, कोई पूजा पुण्य जग नांहि।
इस की पकड़ अति कठिन है, पकड़ो तो छूटे नांहि।। साहिब जी

869 बिन सत्संग विवेक ना होई, पूर्ण सतगुरू पावे कोई कोई।
साहिबन कृपा बिन निःअक्षर सब्द नांहि, निःअक्षर सब्द पावे विरला कोई।। साहिब जी

क माया मुई ना मन मुआ, मरि मरि गया शरीर ।
आशा तृष्णा ना मुई, कह गये साहिब कबीर ।। साहिब जी

870 संत सुरति गति चन्द्रमां, साधक नैन चकौर।
आठों पहर संग रहे, जब सुरति सतगुरू चरणन की ओर।। साहिब जी

871 सुरति समागम प्रेम सुख, पूर्ण सुरति ज्ञान।
सतगुरू चरणन में पायो, महां निर्वाण का दान।। साहिब जी

872 चल हंस निज देश प्यारे, साहिबन देत पुकार।
सत्य तो केवल अमरलोक है, झूठा ये संसार।। साहिब जी

873 सगुण निर्गुण से परे, सत्त भक्ति का देश।
जो कोई पावे निःसब्द को, पहुंचे सतगुरू देश।। साहिब जी

संत वाणी :–

त ब्रह्म नाम ते नाम बड़, बर दायक बर दानी।
राम चरित्र सत कोटि मंह, लिये महेस जियो जानी।। साहिब जी

त कहौं कहां लागि नाम बड़ाई, राम ना सकहि नाम गुण गई।
उनको ये सब भेद मिला था, किस कारण महिमां ना गई।। साहिब जी

त मूल नाम निज सार है, सब सारन के सार।
जो कोई गावे सार नाम को, सो भव जल सूं पार।। साहिब जी

874 मूल नाम निज सार है, कहें 'वे नाम' पुकार पुकार।
जो पावे सो पार है, नहीं तो काल द्वार।। साहिब जी

875 मूल नाम प्रगट नहीं करिये, उस की महिमां अपार।
मूल नाम सूं लिव लगायो, पहुंचे साहिबन दरबार।। साहिब जी

876 सत संगत सू गुण उपझे, उसी सूं गुण आ जायें।
संत की संगत जब मिले, सुख ही सुख उपझायें।। साहिब जी

श्री रामचन्द्र जी शबरी से कहते हैं कि हे देवी ! मैं केवल भक्ति का ही रिश्ता मानता हूं :–

त कह रघुपति सुनु भामिनि बाता।
मानंउ एक भक्ति कर नाता।। साहिब जी

अध्याय चोदहं

श्री कृष्ण भगवान बोले अब मैं प्रकृति के गुण बताऊं ! मोक्ष पाने के भेद बताऊं :–

877 यह ज्ञान, ज्ञान योग से, कहीं अधिक तूं जान।
जो इस बात को जान ले, उसे सिद्धि प्राप्त होई तूं जान।। साहिब जी

878 यह ज्ञान पाने पर, मनुष्य मेरे सम स्वरूप को पाये।
जन्म मरन सूं छूटे, मोक्ष दात पा जाये।। साहिब जी

879 हे भरत पुत्र समग्र भौतिक वस्तु, मुझ सूं उत्पति हुई जान।
मैं ही गर्भस्त करूं, जीव प्रकट जग आन।। साहिब जी

880 समस्त जीव योनियां, जग में जन्म द्वारा संभव जान।
हे कुन्ती पुत्र मैं तुझे कहुं, मेरे द्वारा ही यह सम्भव जान।। साहिब जी

881 भौतिक प्रकृति तीन गुणों से युक्त, सत्तो रजो और तमो गुण जान।
हर कोई किसी एक गुण से, जग आये लिये वह गुण जान।। साहिब जी

882 सतोगुण पूर्ण शुद्ध प्रकाशित, पाप कर्म बिन जान।
सुख तथा ज्ञान संगति द्वारा, निष्पाप शुद्ध तूं जान।। साहिब जी

883 सत्तो गुण अन्य गुणों से अधिक शुद्ध, पाप युक्त गुण जान।
जो नर इस गुण में स्थित, सुख ज्ञान भाव से बंधा जान।। साहिब जी

884 बिन सत्तोगुण अंतीर अनेरा, ना मोक्ष न चूकै फेरा।
बिन सतगुरू यह गुण ना आवे, मिटे ना जन्म मरन का फेरा।। साहिब जी

885 तेरी बिगड़ी बात बन जाई, सतगुरू नाम जपा कर भाई।
भाई बन्धु कुटुम्भ कबीला, काम ना कोई जग आई।। साहिब जी

886 जो कोई कर्ता है जग में, हर एक सूं वैर विरूद्ध।
राज गुण में सुख से, नींद ना ही सहता वैर विरूद्ध।। साहिब जी

887 छल कपट से जीव भरा, धन की खातिर सहता दुख।
रोग भी घेरें पल पल उसको, धन गया पर नांहि दुख।। साहिब जी

888 मनुष्य तन पाने के लिये, तड़पत हैं सब देव।
रजो गुण नहीं जग में भाता, बेहाल देवी देव ।। साहिब जी

889 हर जीव कर्तव्य भूला, खोई निज की शान्ति।
बिन सतगुरू बात बने नांहि, आशा तृष्णा ने तोड़ी शान्ति।। साहिब जी

890 कहां तक पंडितों ग्रन्थों की, कथा कोई कहे।
बड़े प्रेम से सारे अवगुण, श्री कृष्ण दिये बतला।। साहिब जी

891 वेद शास्त्र पुराणों को, कंई जन्मों से पड़ा रहा।
बिन सतगुरू कैसे जानों, सुनो उनमें क्या धरा।। साहिब जी

892 योग जप तप ज्ञान दान, मान सम्मान में जब ध्याण।
सत्तो गुण गया राज आ गया, अभिमान सूं मन प्राण।। साहिब जी

893 नर तन पा उपकार, कार्य कियो कुछ नांहि।
जीवन उसका व्यर्थ हुआ, सतगुण कार्य कुछ नांहि।। साहिब जी

894 प्रेम प्याला जो पियो, सत्तो गुण तब प्रगटाये।
रजो गुणी शीष ना दे सके, खाली हाथ जग जाये।। साहिब जी

895 प्रेम (सत्तोगुण) बिन पहुंचे नहीं, अमरपुर निज देश।
आशा तृष्णा जब संग में, सतगुरू ना सुने संदेश।। साहिब जी

896 जग की दोलत माल खजा़ना, रखा खूब छुपाई।
हम जाना क्या संग चलेगा, जग का जग में रह जाई।। साहिब जी

897 रिश्ते नाते भाई बन्धु, काम ना कोई आई।
हम जानी काया संग चलेगी, हंस अकेला जाई।। साहिब जी

898 दुनियां की दोनों आंखों में, रजो गुणी धूल दे डालते।
आंखें लाख उनकी जगाओ, वे जाग के भी नहीं जागते।। साहिब जी

899 चारों ओर नर देखता, कोई बिरला प्रेमी संग साथ।
चारों ओर रजो और तमों गुणी, किस का करे अब साथ।। साहिब जी

900 भव सागर में भटक भटक कर, मानुष तन है पाया।

तन पाया कुछ हाथ ना आयो, अभी तक सतगुरू नहीं पाया।। साहिब जी

901 सतगुरू भक्ति ना संतन सेवा, नां शुभ कर्म की बात।
सतगुण रजगुण दोनों गये, तमस में मन की बात।। साहिब जी

902 सतगुरू लगें जिसे अति प्यारे, तीन लोक से आन छुड़ावे।
अवगुण उसके कुछ ना चितारें, संग अपने निजघर ले जावें।। साहिब जी

क बलिहारी गुरू अपने, घड़ी घड़ी सौ सौ बार।
मनुष्य से देवता किया, करत ना लागी बार।। साहिब जी

क कामी नर बहुते तरे, क्रोधी तरे अनंत।
लोभी नर कमि तरे, कहें कबीर सिधंत।। साहिब जी

क गुरू पारस गुरू परस हैं, गुरू अमृत की खान।
शीष दिये जे गुरू मिलें, तो भी सस्ता जान।। साहिब जी

क सात द्वीप नौं खण्ड में, गुरू से बड़ा ना कोय।
करता करे ना कर सके, गुरू करे सो होय।। साहिब जी

क गुरू समाना शिष्य में, शिष्य लिया कर नेह।
बिलगाए बिलगे नहीं, एक रूप दो दोह।। साहिब जी

903 रजो गुणी दुर्बल को, माया देता पल छिन आन।
धनी होने पर भी, दुर्बल को अहंकार सतावे आन।। साहिब जी

क दुर्बल को दुख देत है, जिस माया संग नांहि।
ज्ञान की दोलत संग में, माया को चाहा नहीं।। साहिब जी

क दुर्बल को ना सताईए, जाकी मोटी आह।

बिना स्वांस की फूंकनी, लोहा देत पिगलाए।। साहिब जी

क बेशक मंदिर मस्जिद तोड़ो, और भी गिरजाघर।
लेकिन किसी का दिल मत तोड़ो, खास साहिब का घर।। साहिब जी

क कबीर कलयुग आ गया, संत ना पूजे कोये। (रजो गुणी)
कामी क्रोधी मसखरा, इनकी पूजा होये।। साहिब जी

904 सतो गुणी ना काह से दोस्ती, नां काहू से बैर।
सोये को है जगा रहा, 'वे नाम' देत सब्द तीन लोक से न्यार।। साहिब जी

905 तीनों गुण स्वरूप के धामा, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर नाम प्यारो।
रजगु तैं ब्रह्म उत्पानी, सत विष्णुं तम महेश कर जानी प्यारो।। साहिब जी

906 तमगुण शिव संहार पसारा, नर जाने ना कैसा पसारा।
हंसा को तन मन में डाला, भूल में डाला हंसा प्यारा।। साहिब जी

907 रजगुणी तमगुणी दोय, अति दुखी विच संसार।
लोभी अभिमानी पापी तामसी, दोनों जागन को ना तैयार।। साहिब जी

908 तामसी पाप कर्म कमावे, लूटे मारे और सो जावे।
दया धर्म कुछ पास नां, मदिरा पीवे और सो जावे।। साहिब जी

909 अज्ञानी का जब संग है करता, हर जीव संग बैर कमावता।
मदिरा पी क्रोधी बन जाता, क्रोध की अग्नि में जलता मरता।। साहिब जी

910 अज्ञान सों उत्पन्न, तमों गुण होता।
प्रतिपल आलस, प्रमाद नींद में रहता।। साहिब जी

911 रजो गुणी तमो गुणी, रहते क्रोध के संग।
हिंसा अविचार लोलुपता, बुरे कर्म के अंग।। साहिब जी

912 काम वासी ज्ञानी रावण नाष, हरण–सीता किया जीवन नाष।
बड़े बड़े ज्ञानी जग भयऊ, काम क्रोध सूं पूर्ण नाश।। साहिब जी

913 रावण बड़ा ज्ञानी भयो, चारों वेदों का रखता ज्ञान।
पर काम ना वश कर सका, किस काम का ज्ञान।। साहिब जी

914 काम ते अधिक क्रोध प्रचण्डा, जाके डर त्रासे नौ खण्डा।
गुरू कुबुद्धि क्रोध के संग, ये सब जानो मन के अंग।। साहिब जी

915 प्रथमें क्रोध ब्रह्म को आयो, षट पुत्रन श्राप दे भस्म कर डालो।
जब जब शिव क्रोध में आयो, प्रलयः पल में कर डालो।। साहिब जी

916 दुरवासा ऋषि क्रोध में आकर, श्राप दे डाला।
जय–विजय बैकुण्ठ द्वार पाल, रोकन कारण श्राप दे डाला।। साहिब जी

917 छप्पन कोटि यादव संधारा, दुरवासा ऋषि क्रोध जो धारा।
कौरव पाण्ड क्रोध ही जारे, आप ही आप लड़े और मारे।। साहिब जी

918 क्रोध अग्नि घट घट उठे, जरत मरता संसार।
भक्ति सूं कुछ लेन देन ना, कैसे उतरे उस पार।। साहिब जी

919 दसों दिशा में उठी प्रबल, क्रोध की आग महान।
बिन पूर्ण सतगुरू संगति, कोई कैसे हो अति महान।। साहिब जी

920 इस क्रौध को त्यागना, बिन सार नाम कठिन तूं जान।
सार नाम की दात सतगुरू सूं, ले पहुंचे निजधाम।। साहिब जी

921 नर लोभ मोह के कारने, पाप कर्म हर पल।
दरिद्र ही दुख सहता, काम क्रोध के फल।। साहिब जी

922 अज्ञान देश का राजा लोभी, तृष्णा इच्छा संग साथ।
पाखंड कपट रोग और शोक, मोह माया संग साथ।। साहिब जी

923 जो नर जग में प्रेम सुख चाहे, सतगुरू शरणी आये।
सार नाम की दात को पाकर, निज को हंस बनाये।। साहिब जी

924 नाम जब पाया सत सब्द का, सतगुरू संग सहाये।
काम क्रोध लोभ मोह आदि का, पल में छूटा संग जाये।। साहिब जी

925 सुन्न गगन में जो उठत है, वह सब बोल में आवे।
प्राण को ही निरति जान तूं, सतलोक सूं ही आवे।। साहिब जी

926 सगुण निर्गुण से परे, सत भक्ति की बात।
बिन सतगुरू कोई पावे नांहि, अमर लोक की दात।। साहिब जी

927 अमरपुर से हंसा रूप में आये, वह देश प्रेम ज्वाला।
अति सुंदर अति प्यारा, साहिब जी रूप वर्णन सूं बाहिरा।। साहिब जी

अध्याय पंद्रहा

928 प्रकृति तीन गुण सूं जानो, सत्त रज तमो बताये।
आत्मां मन माया बिन अविनाशी, देह में दे बंधाये।। साहिब जी

929 सतगुरू परम हंसा हो कर, छोड़े अपनी देह।

उत्तम निर्मल लोक में जाकर, साहिबन संग रहे।। साहिब जी

930 सतगुण जब प्रकटे, छोड़े अपनी देह।
ब्रह्म लोक में जा पहुंचे, सुख ही सुख मिले।। साहिब जी

931 राजगुण बड़ते जो तन त्यागे, कर्म अनुसार मिले देह।
तमों गुणी नर जब मरे, पशु योनी मिले देह।। साहिब जी

क तीन गुण त्याग कर, सतगुरू की ले तूं ओट।
जन्म मरण दुख छूटे, काल की नां लागे चोट।। साहिब जी

932 दुख सुख जो एक सम हो, माटी कंचन एको सोये।
राग द्वैष छूट गये सब, हर पल वह (साधक) जागा होये।। साहिब जी

933 अच्छे बुरे एक सम जाने, स्तुति निंदा एक सों ठाने।
शत्रु मित्र सम दृष्टि् लावे, त्रिगुणा तीत लोक सदावे।। साहिब जी

934 उपर जड़ नीचे पात फूल, जगत वृक्ष का रूप।
काटे ज्ञान वैराग्य कटार से, पावे ज्ञान अनूप ।। साहिब जी

935 जो कृष्ण भावना भक्ति, और भक्ति में रत।
वह वेदों का ज्ञानी, कृष्ण ध्यान में रत।। साहिब जी

936 सकाम कर्मों में रत, इस वृक्ष का नांहि अंत।
जो इस वृक्ष में आसक्त, जन्म मरण का नांहि अंत।। साहिब जी

937 पात फूल संसार है, उपर ओर विस्तार है जड़।
वृक्ष जड़ें निजधाम हैं, तीन जगत जोड़ता निज प्राण।। साहिब जी

938 यह संसार एक माया जाल है, छाया नर की जकड़।
छाया तो केवल छाया है, मूल ले पकड़।। साहिब जी

939 प्रकृति तीन गुणों से, छाया को पोषत करे।
रस इन्द्रियां विष जान तूं, नर कैसे पार करे।। साहिब जी

940 इन आंखों से ना जान सके, मन इन्द्री कर पहचान।
मन सूं प्रकटा संसार है, सतगुरू सूं मिले पहचान।। साहिब जी

941 जन्म मृत्यु तथा मोक्ष, यह सब नर के हाथ।
जैसे चेतना आत्मां में अर्जित, वैसे ही गुण साथ।। साहिब जी

942 जैसे वायु सुगन्धि को, संग में ले जाये उस पार।
ऐसे ही चेतन आत्मां, प्राण संग साहिबन दरबार।। साहिब जी

943 मूर्ख जान पाता नहीं, किस विधि तजे शरीर।
वह आत्म को तन जानकर, कर्म करे बे पीर।। साहिब जी

944 जो निज को ही नहीं जानते, आत्म ज्ञान सूं दूर।
उनकी चेष्टा निष्फल गई, सतगुरू सूं रहते दूर।। साहिब जी

945 सूर्य तेज विश्व अंधकार को, हर पल करता दूर।
सतगुरू (श्री कृष्ण) सूं ज्ञान ले, तेरे अंदर प्रकटे नूर।। साहिब जी

946 सारे लोक लुकान्तर, अपनी अपनी कक्षा में स्थित।
औंकार शक्ति सूं चलते, चमकते देते जीवन रस प्रीत।। साहिब जी

947 समस्त जीवों के तन में, पाचन अग्नि प्रदान।

मैं ही (निरंकार) प्रवास में रह कर, पचाता हूं अन्न धान।। साहिब जी

948 हर हृदय में मन और सुरति का वास, यहि जानने योग।
काल निरंजन वेदान्त का संकलन करते देते, ज्ञान लक्ष्य योग।। साहिब जी

949 इस भौतिक जगत में, हर जीव क्षर ले जान।
आध्यात्मिक जगत में, हर जीव अक्षर ले तूं जान।। साहिब जी

950 निराकार साकार के पार सच्चा, परमपुरूष सत आत्म आधार।
जो अविनाशी परमपुरूष है, चौथे लोक अमरपुर सरकार।। साहिब जी

951 क्षर अक्षर से पार वह, निःअक्षर अविनाशी परमपुरूष हमार।
मैं खर अक्षर में सर्वश्रेष्ठ हूं, वेदों में औंकार।। साहिब जी

952 'वे नाम' लाये परमधाम सूं, तीन लोक से भिन्न निसब्द।
अमरलोक सतगुरू का प्यारा, सूर्य चंद्र का नहीं पसार।। साहिब जी

953 जन्म मरन तहां ना कोई, हंसों का जग सतलोक ले जान।
तीन लोक मृत्यु लोक है, चोथा अमरलोक ले जान।। साहिब जी

954 इस मृत्यु जगत में, सब जीव मन रूप में मेरा ही अंश जान।
तन मन के पार, हंसा नर रूप तूं जान।। साहिब जी

955 श्री कृष्ण हैं कह रहे, क्षर अक्षर से पार।
सर्वश्रेष्ठ सतपुरूष हैं, जन्म मरण सूं पार।। साहिब जी

956 संशय रहित हो जो जानता, सतपुरूष साहिब सरकार।
वह सब जानन हार है, प्रेम रत अमरपुर सरकार।। साहिब जी

957 वे सर्वाधिक गुप्त रूप हैं धारते, वेद शास्त्रों से बाहिर।
जो कोई इनको जान ले, काल जाल सूं पार।। साहिब जी

958 सतगुरू कृपा बिना, निष्पाप ना कोई नर।
अज्ञान अंधकार हर ओर है, सतगुरू सब्द सूं पार।। साहिब जी

अध्याय सोलहं

श्री कृष्ण उवाच

959 श्री कृष्ण कहत भरत पुत्र को, उत्पन्न करो ज्ञान।
निर्भयता, आत्मशुद्धि, तथा आध्यात्मि ज्ञान।। साहिब जी

960 दान आत्मसंयम, वेदाध्ययन, तपस्या सरलता।
अहिंसा सत्य क्रोध विहीनता, बिन सतगुरू बने ना बात।। साहिब जी

961 जग में प्राणी दो प्रकार के, देवी आसुरी जान।
देवी सत्य को जानते, आसुरी में सत्य का नहीं ज्ञान।। साहिब जी

962 क्या करें क्या ना करें, आसुरी भेद ना जानते।
पवित्रता, उचित आचरण, सत्य उनमें ना जान।। साहिब जी

963 आसुरी जगत को सत्य जानते, ईश्वर में आस्था नहीं।
कामेच्छ से जगत बना, काम अतिरिक्त कुछ नांहि।। साहिब जी

964 आत्म ज्ञान सूं दूर वह, बुद्धि हीन कर्म में व्यस्त।
मिथ्या प्रतिष्ठा का कार्य करे, अपवित्र कर्म में व्यस्त।। साहिब जी

965 देवी आसुरी भेद से, सम्पदा दो ही होये।
देवी से मुक्ति मिले, आसुरी बंधक कारण जोये।। साहिब जी

966 काम क्रोध खुधि दम्भ जो, हिंसा, मोह, अज्ञान।
यह सब सम्पदा आसुरी, दगा, धोखा, अभिमान।। साहिब जी

967 आसुर कहें संसार का, ईश ना करता होये।
स्त्री पुरूष जब ही मिलें, तब ही उत्पति होये।। साहिब जी

968 ऐसी सोच में लीनता, उत्तम गति ना पाऐं।
भोगों के वश में पड़े, घौर नर्क में जाऐं।। साहिब जी

969 क्षमा शान्ति धर्म दया, छोड़े लोभ मोह अज्ञान।
दया त्याग जप तप करे, देवी सम्पदा तूं जान।। साहिब जी

970 जो प्राणी इनसे बचे, आत्म ज्ञानी हो जाये।
कल्याण कारी कार्य करे, परम गति पा जाये।। साहिब जी

971 वेद शास्त्रों की अवहेलना करे, अपने ढंग से कार्य।
उसे सिद्धि ना सुख मिले, परमगति का छूटे कार्य।। साहिब जी

972 आसुरी तजो, राज पा जाये, राज तजे सतोगुणी बन जाये।
आगे बड़ें उपर चलें, तीनों गुण पार कर, निजघर पा जाये।। साहिब जी

अध्याय सत्रहं

श्री कृष्ण उवाच

973 कहे अर्जुन सुनियो प्रभु, शास्त्र नियम त्याग कैसे करें।
अपनी निष्ठा अनुसार भक्ति, अवस्था वर्णन करें।। साहिब जी

974 श्रद्धा तीन प्रकार की, सतोगुणी, रजसी, तामसी होये।
गुरू संगति में रहकर, सब कुछ जान वह पाये।। साहिब जी

975 सात्विक ईश्वर को भजें, तामस भूत प्रेत।
राजस बुद्धि वाले नर, यक्ष राक्षसों से प्रीत।। साहिब जी

976 सात्विक नर भोजन जो प्रीय, जीवन शुद्ध, बल प्रदान।
रजोगुणी नर भोजन जो प्रीय, सभी रोग प्रदान।। साहिब जी

977 जूठा, रोग प्रदान भोजन प्रीय, रोग प्रगटायें पल छिन आन।
भक्ति भाव से दूर वह, भौग कैसे लगे भगवान।। साहिब जी

978 फल की इच्छा रहित यज्ञ दान, सात्विक यज्ञ दान कहलाये।
फल की इच्छा सूं यज्ञ दान, राजसी यज्ञ दान कहलाये।
बिन गुरू के जो यज्ञ दान करे, तामसी यज्ञ दान कहलाये।। साहिब जी

979 ओं तत सत ये ब्रह्म के नाम, जो तीन प्रकार।
वेद ब्राह्मण यज्ञ पे, प्रकटे पहली बार।। साहिब जी

980 क्रिया यज्ञ तप दान से, पहले कहीं ओंकार।
वेद ज्ञानी ये कहें, उत्तम शब्द विचार।। साहिब जी

981 तत शब्द उच्चारण कर, करे यज्ञ तप दान।
फल अभिलाषा त्याग दे, पावे पद निर्वाण।। साहिब जी

982 शुद्ध भाव सत्त भाव से, सत का करें विचार।
भले कर्म मंगल कार्य में, गुरू संग सत गवें सार।। साहिब जी

983 कहे अर्जुन : सन्यास, त्याग तत्व, भेद कहो महाराज।
इन दोनों के भेद को, न्यारा करो महाराज।। साहिब जी

श्री कृष्ण अर्जुन को कह रहे हैं :–

984 कामना संग कर्म का, त्याग जान सन्यास।
कर्मों का फल त्यागना, त्याग है पूर्ण सार।। साहिब जी

985 देह धारी बिन सार सब्द, कभी त्यागी न होये।
कर्मों का फल त्याग दे, सच्चा साधक सोये।। साहिब जी

986 यज्ञ,तप,दान का कभी, करना नहीं परित्याग।
शुद्धि इन से तपस्वी की, सुरति सूं करे त्याग।। साहिब जी

987 कर्तव्यों को कभी नहीं त्यागना, त्याग तामसी कहलाये।
कष्ट क्लेश को सहन कर, रजोगुणी कहलाये।। साहिब जी

988 हर व्यक्ति को करनीय मान कर, फल की आशा त्याग।
शुभ अशुभ जाने एक सम, ऐसा त्यागी जान त्याग।। साहिब जी

989 सार सब्द सुरति में डाल कर, करो यज्ञ तप और दान।
फल आशा त्याग दें, पाओ पद निर्वान।। साहिब जी

990 शुद्ध भाव, सत्त भाव से, सत्त का करो विचार।
भले कर्म मंगल कार्य में, सत्त सुरति की तार।। साहिब जी

अर्जुन श्री कृष्ण जी को कह रहे हैं :—

991 सन्यास और त्याग के तत्व को, समझाओ कृष्ण भगवान।
इन दोनों के भेद को, खोल कर करो बखान।। साहिब जी

992 कामना वाले नर जो, कर्म का त्याग जानें सन्यास।
कर्मों का फल त्यागना, त्याग कहावे तास।। साहिब जी

993 तन धारी सूं कर्म का, कभी त्याग ना होये।
कर्मों का फल त्याग दे, सच्चा त्यागी सोये।। साहिब जी

994 समस्त कर्मों की पूर्ती के लिए, पांच कारण ले जान।
कर्म कर्ता ईन्द्रियां त्याग, परमात्म कारण जान।। साहिब जी

995 नर तन मन वाणी से, उचित अनुचित कार्य है कर रहा।
इन का फल स्वरूप, पांच कारण सूं मिल रहा।। साहिब जी

996 जो परमात्मां को न कर्ता जान कर, खुद को ही कर्ता मानता।
उसे बुद्धिहीन तुम जान लो, खुद की की ना पहचान।। साहिब जी

997 जो जन मान रहित है, उसे तूं जागा जान।
वह कर्म बंधनों से मुक्त, जीवित मरा उसे जान।। साहिब जी

998 वर्ण आश्रम के धर्म को, पूरा करे सुजान।
सुरति इसकी चेतन रहे, संत संग पावें पद निर्वान।। साहिब जी

999 एकान्त में वासा करें, थोड़ा भोजन सेवन।
सहज योग सूं मन बस, सुरति विरागी जान।। साहिब जी

क नाम बिन हृदय शुद्ध ना होई, कोटिन भांति करै जो कोई।
जब लग सार नाम नहिं पावे, तब लग जीव भव भटका खावै।। साहिब जी

साहिब कर रहे हैं केवल 'सार नाम'/विदेह नाम/मूल नाम/निःअक्षर नाम/सत्य नाम/अक्का नाम/ की शक्ति से आत्मां कालपुरूष के जाल (चंगुल) से मुक्त हो अपने निज (सही) घर पहुंच सकती है। यह नाम संसार में प्रचलित नामों से परे है। सतगुरू द्वारा नाम देना कोई शब्द बताना नहीं है। आत्मां को चेतन करने के लिए सब्द सुरति द्वारा साधक की सुरति को दिया जाता है। यह सब्द सतगुरू को भी सतपुरूष अपनी सुरति से देते हैं। जब पूर्ण हंसा रूप मिलता

है तो वह अपने निज घर जाकर सतपुरूष जी से मिलाप करने पश्चात परम हंसा रूप धारते हैं। तभी उस परमहंसा को सतपुरूष से यह दात मिलती है और वह इस संसार में उसी सार सब्द से (प्राणी) नर को यह दात देकर अपने साथ अमरलोक ले जाता है। यही नाम दान जाना जाता है। इस नाम (सब्द) के बिना कोई भी जीव (संसार सागर) भव सागर से पार नहीं हो सकता ।

1000 सत्तपुरूष को पाकर, सतगुरू कहलाये।
सतलोक हो के आये, परमहंस कहलाये।। साहिब जी

क जबहि नाम सुरति धरा, भयो पाप का नाश।
जैसे चिंगी आग की, परी पुरानी घास।। साहिब जी

क तंत्र मंत्र सब झूठ है, मत भरमो कोये।
सार सब्द जाने बिना, कागा हंस न होये।। साहिब जी

क सब्द पाया सुरति राखहिं, सो पहुंचा दरबार।
कहे कबीर तहां देखिये, बैठा पुरूष हमार।। साहिब जी

1001 साहिब सतपुरूष अपना, सतगुरू सुरति रूप हैं धारते।
सुरति सूं करते बात वह, सुरति बिन नहीं साथ।। साहिब जी

श्री कृष्ण जी कहते हैं :–

1002 साहिबन का रंग रूप प्यारो, कहा ना जाये।
हंसा बन जो सतलोक जाये, वोहि दर्श पाये।। साहिब जी

1003 काम क्रोध मोह छूटे, लोभ ईच्छा अहंकार।
ममता छोड़ निरमोह बने, सतगुरू 'वे नाम' सूं केवल प्यार।। साहिब जी

1004 जो कुछ मन का सब तजे, 'वे नाम' में धरे सब ध्यान।
शस्त्र धारी तूं भगता, तुझसे कहुं बख़ान।। साहिब जी

1005 सब धर्मों को त्याग दे, 'वे नाम' शरणी आये।
संकट सब उसके हरूं, मोक्ष पद पा जाये।। साहिब जी

वे नाम कहें :–

1006 मुझ को सुमिरें, सुरति से प्रेम की डौर बन जायें।
'वे नाम' ही को पाकर, 'वे नाम' रूप हो जायें।। साहिब जी

1007 सुरति सूं सतगुरू वचन, प्रेम सूं गीता गहे।
उसको काल का डर नांहि, जीवित मुक्ति पा जाये।। साहिब जी

1008 श्री कृष्ण गीता सार यह, अमृत वचन तूं जान।
प्रातः उठ नित ध्यान से, 'वे नाम' कृपा महान।। साहिब जी

1009 जहां योगेश्वर श्री कृष्ण हैं, कोटि कोटि करो प्रणाम।
चारों ओर भक्ति आनंद हो, 'वे नाम' कृपा सूं सब काम।। साहिब जी

क सतगुरू आज्ञा ते आवही, सतगुरू आज्ञा ले जाहि।
कहें साहिब तां दास को, तीन लोक डर नांहि।। साहिब जी

क आप ही कंडा तौल तराजू, आप ही तौलन हारा।
आप ही लेवें आप ही देवें, आप ही है बण्जारा।। साहिब जी

1010 आप ही गुरू पुनिः शिष्य आप ही, आप आप का खेल है सारा।
जो कोई जाने भेद 'वे नाम' का, आत्म सूं हंस 'वे नाम' प्यारा।। साहिब

1011 ’वे नाम’ की दात को पाकर, सुरति सब्द में प्राण।
’वे नाम’ चरणन सुरति रहे, जीवित मरे पावे निजधाम।। साहिब जी

1012 माया का सुख चार दिन, फिर वही काल संग साथ।
सपनों पाया राज धन जागे तो खाली हाथ।। साहिब जी

1013 माया छोड़ना सब कहत हैं, इसका संग अति घोड़।
’वे नाम’ नाम छूटे नांहि, बिन सत सब्द नहीं तोड़।। साहिब जी

1014 ’वे नाम’ मन छुड़ावन हार है, ’वे नाम’ सूं मिलती दात।
यही विदेह नाम है, जो मन माया पर करता घात।। साहिब जी

1015 धीरे धीरे जग वासियो, धीरज सूं मन मर जाये।
पल पल जीव है मर रहा, ’वे नाम’ सूं काम बन जाये।। साहिब जी

1016 देह का मिलना आत्म दंड है, सुरति सूं सोच विचार।
देह में ही आत्म ज्ञान मिले, पा ’वे नाम’ बिन विचार।। साहिब जी

1017 नर वह दिन याद कर, पग उपर तल शीष।
मृत्यु लोक में आते ही, भूला ’वे नाम’ प्रीत।। साहिब जी

1018 बिन ’वे नाम’ ज्ञान ना उपझे, बिन ’वे नाम’ मिले ना दात।
बिन ’वे नाम’ कृपा के, कैसे पाओ मोक्ष की दात।। साहिब जी

1019 अनुभवों की ओढ़ो चदरिया, ज्यों की त्यों संग साथ।
चढ़ोगे महल लिए संग सुरति, खुलें किवाड़ ईक साथ।। साहिब जी

1020 दिल की दुनियां बस रही, 'वे नाम' आज कल चहुं ओर।
अंदर अंधेरा फैला हुआ, दिखता नहीं पर है हर ओर।। साहिब जी

1021 जान लो अभी शुरूआत है, कल के दूजे पहर की।
अभी तुझे बहुत कुछ है देखना, 'वे नाम' पाने के पहर की।। साहिब जी

1022 'वे नाम' वाणी प्रेम रस, प्रेम रंग में खो जाये।
'वे नाम' की दृष्टि् में दृष्टि् डाल दे, हर अंग चेतन हो जाये।। साहिब जी

1023 'वे नाम' स्पर्ष जिस को मिले, हर अंग चेतन हो जाये।
'वे नाम' अंदर कचरा पल में जले, प्रेम जोत जग जाये।। साहिब जी

1024 धोखा सब संसार है, नहीं जाना 'वे नाम' ज्ञान।
'वे नाम' पल पल पुकारते, जग बहरा सुनै ना कान।। साहिब जी–

1025 बिन 'वे नाम' उपदेश के, सुर नर मुनि बेहाल।
ब्रह्मा विष्णु महेश भी, बिन 'वे नाम' वाणी बेहाल।। साहिब जी

1026 कोटिक पढ़ गुण पंडित भयो, जागा ना सुरति ज्ञान।
बिन 'वे नाम' बात बने ना, कोटिक अर्जे ज्ञान।। साहिब जी

1027 सब्द सरूप 'वे नाम' हैं, जा में सतपुरूष का वास।
काया माही जोत है, सकल निजधाम उन पास।। साहिब जी

1028 काया से आगे सुरति प्यारो, ता में 'वे नाम' ध्यान।
मूल सब्द सुरति अंक है, ता में धरो ध्यान।। साहिब जी

1029 आदि औंकार ही अग़म है, ता का सब विस्तार ।
'वे नाम' सुरति सूं पाईये, 'वे नाम' नाम निज सार।। साहिब जी

1030 सुनहु संदेश सुरत सनेही, 'वे नाम' दे सब्द विदेही।
कलयुग वे नाम आन पुकारा, कोई प्यारा पाये नाम विदेही।। साहिब जी

1031 जप तप जोग सबन ठहराया, कोई विरला खोज सब्द को पाया।
काल का जीव आशा तृष्णा में, बिन 'वे नाम' तरे ना कोई।। साहिब जी

1032 योनी संकट कबहुं ना छूटे, जम की मार सूं कैसे छूटे।
तीर्थ व्रत नेम जग लाया, जात पात धर्म ना छूटे।। साहिब जी

1033 मन के धोखे जग पड़ी मुआ, नांहि पाया सच्चा ज्ञान।
'वे नाम' पल पल जगा रहे, जागो तो पावे सच्चा ज्ञान।। साहिब जी

1034 षट कर्म तजु है जीव अजानी, सुनो सब्द 'वे नाम' वाणी ।
सब्द 'वे नाम' चीन्हो मेरे प्यारो, हर घट व्यापक सुरति वाणी।। साहिब जी

1035 पंडित पढ़ गुण पचि मुए, बिन सतगुरू मिले ना ज्ञान।
बिन 'वे नाम' नांहि मुक्ति है, सत सब्द प्रमाण।। साहिब जी

1036 साधक विवेकी कोई सुनहे संदेस, तीन लोक के बाहरे।
तहां मुक्ति प्रवेस–सब्द 'वे नाम', चौथे लोक दरबार।। साहिब जी

1037 'वे नाम' कहें पुकार के, 'वे नाम' ही उपदेश।
'वे नाम' डौर चढ़ जाऐ जीव, 'वे नाम' के ही देस।। साहिब जी

1038 अच्छर पायो सुरति में, वे नाम देत (दात) दान।
मन माया सब छूट गई, 'वे नाम' वचन प्रमाण।। साहिब जी

1039 संजय तुरिया अवस्था पाकर, अंदर की आंख सूं देख रहा युद्ध महान।
धृतराष्ट्र को कह रहा युद्ध सब, कृष्ण की महिमां महान।। साहिब जी

1040 युद्ध में कर्ता केवल कृष्ण हैं, अर्जुन को निमित ही जान।
कल और कल में मत जा प्यारे, इस पल में सबहे जान।। साहिब जी

क रिश्ते नाते सब झूठ हैं, मन की बात मत मान।
नर तूं आशा तृष्णा त्याग दे, सब कर्ता प्रभु को जान।। साहिब जी

1041 कर्म धर्म में जो पड़े तुम, वही काल जाल तूं जान।
पूर्ण 'वे नाम' सूं एक को जानो, उसी को कर्ता मान।। साहिब जी

1042 जो कर्ता निज को मानता, जन्म मरन का बंधन महान।
अच्छा बुरा जो कर्म है, 'वे नाम' को कर्ता मान ।। साहिब जी

1043 कृष्ण कहें मनुष्य जन्म दुर्लभ है, होवत ना बारम्बार।
जो जीवन के मुल्य को जानते, जन्म लेत ना बारम्बार।। साहिब जी

1044 हानि लाभ को छोड़ दो प्यारो, कर्म करो बिन आस।
पूर्ण 'वे नाम' शरणी आओ, 'वे नाम' कहें करो बिन आस।। साहिब जी

क मन वश ईन्द्रियां नांहि, नर मन–ईन्द्री वश जान।
मन–ईन्द्री जाल मत पड़ो, यह सब धोखा जान।। साहिब जी

1045 'वे नाम' शरणी मान का त्याग, जिसे तजना कठिन तूं जान।
'वे नाम' सूं 'वे नाम' को पाले, इस सब्द की महिमां महान।। साहिब जी

1046 जीवित मरना ही मरना, और मरना सब झूठ।
तन का मरना मरना नांहि, आन जान ही बस झूठ।। साहिब जी

1047 वस्त्र पुराने त्याग कर, नये धारण कर लेत।
यह तो मरना ना हुआ, जाल काल का देख।। साहिब जी

1048 जो दुख में दुख नहीं मानता, सुख में सुख नांहि।

वह ही जीवित मरना है, जा संग दुख सुख नांहि।। साहिब जी

1049 जो हर तन में व्याप्त, उस आत्म तत्व को जान।
वह ही अमर ज्योत है प्यारे, अपना रूप लो जान।। साहिब जी

1050 मीरां श्री कृष्ण को समर्पण किया, रविदास जी सतगुरू पाये।
जो 'वे नाम' चरणी लागे, प्रेम ज्योत बन जाये।। साहिब जी

1051 काल जाल छूटा मीरां का, हंसा बन निजधाम गई।
कृपा करि कृष्ण भगवान ने, सतगुरू रविदास जो पाई।। साहिब जी

1052 श्री कृष्ण जग में प्रेम बांटयो, हर जीव प्रेम का अंग।
प्रेम तो फूल की बास प्यारो, जिस का रूप ना रंग।। साहिब जी

1053 तुम भी कली सूं फूल बन जाओ, धारो बास का रूप।
प्रेम का महां प्रेम में मिलन, आत्म हो हंसा रूप।। साहिब जी

1054 मत भागो मन माया सूं, अनुभव कसौटि साथ।
अनुभव कसौटि संग तेरे, 'वे नाम' कृपा संग साथ।। साहिब जी

1055 कीचड़ को मत त्यागो भाई, कमल खिले संग साथ।
पतले प्रेम धागे सूं टूटे, मन माया का साथ।। साहिब जी

1056 अनुभव चलना सिखाता, निजघर पहुंचो आप।
श्री कृष्ण प्रेम का सागर हैं, लेता कोई कोई दात।। साहिब जी

1057 बह रही धारा प्रेम की, चारों ओर हैं आप।
'वे नाम' पाकर कण–कण को देख, हर ओर संग है आप।। साहिब जी

1058 जागे को खुशी में खुशी नहीं दिखती, ग़म में ग़म नहीं साथ।

भुला दिया है प्रेम ने सब कुछ, बिन 'वे नाम' नहीं कुछ साथ।। साहिब जी

1059 पहला प्रेम 'वे नाम' सूं सब का, पाकर जानो ये ।
आत्म केवल प्रेम का अंग है, मन माया बादल रे।। साहिब जी

1060 प्रेमी प्रेसी कहां है रहते, प्रेम बास बने ।
तन का प्रेम प्रेम नांहि, प्रेम महांसागर बने।। साहिब जी

1061 तन तो पंच तत्व सूं आया, निरंकार वास किया सुन्न।
कृष्ण सार रूप को धरा, दिया भेद काल निज गुण।। साहिब जी

1062 प्रत्येक हृदय में मन रूप में, श्री कृष्ण सुष्मन द्वार पर साथ।
सहत्रार चक्र में निरंकार रूप में, हर जीव के रचनाहार संग साथ।। साहिब जी

1063 समस्त भेदों का जाननहारा, रचियता संग साथ।
देवी देव बनाने वाला, तीन लोक विस्तार।। साहिब जी

अध्याय अट्ठारवां

निरंकार (श्री कृष्ण) महिमां

1064 यह तन विष की बेलड़ी, इस सूं मोह त्याग।
तूं अजर अमर अविनाषी, बिन इसके सब त्याग।। साहिब जी

1065 जीव तन को आत्म मानता, यही बड़ा है रोग।
आत्म अमर तत्व है, 'वे नाम' सूं मिटे यह रोग।। साहिब जी

1066 आत्मां स्थान–कालातीत, हर पल अमर इसे जान।
यह शाश्वत पुरातन साहिबन अंश, अमरलोक निज स्थान।। साहिब जी

1067 आत्म अजन्मा शाश्वत और अव्यय है, कभी ना मरना होये।
कोई इसे मार सके ना, फिर सुख दुख कैसे होये।। साहिब जी

1068 आत्म पुराना तन छोड़ कर, नया धारण कर लेत।
दुख सुख इसके अंग नांहि, फिर रिश्ते नाते क्या होत।। साहिब जी

1069 यह शस्त्र से खण्ड खण्ड होत नांहि, आग जलावे मुकावे नांहि।
जल भिगो सकत नांहि, पवन उड़ा सके नांहि।। साहिब जी–

1070 हंसा ज्ञान जब आ गया, मरने पर शोक कैसा।
आत्म शाश्वत सर्वव्यापी अविकारी, सदा स्थिर ईक सम होये।। साहिब जी

1071 आत्म अव्यक्त अकल्पनिय अपरिवर्तन–शील, गले सुखे नांहि।
सूक्ष्म यंत्र सूं भी ना दिखे, निजरूप जाने बिन कुछ नांहि।। साहिब जी

1072 वस्तुऐं प्रकट हो रही, ईक आये ईक जाये।
आकाश से वायु वायु से अग्नि अग्नि से जल, जल से पृथ्वी प्रकटाये।। साहिब जी

1073 आत्म जो नहीं मानता, दृष्य अदृष्य ले मान।
हर पल ये सब हो रहा, सब का सुख दुख महान।। साहिब जी

1074 तन आत्म पिझंरा जान लो, मन वश इसे तूं जान।
'वे नाम' बंधन काटनहार हैं, उनकी हर बात तूं ले मान।। साहिब जी

1075 कोई आत्म आश्चर्य से देखता, कोई आश्चर्य सूं है कह रहा।
कोई आश्चर्य सूं लेता सुन, कोई बिरला राखे जानन की चाह।। साहिब जी

1076 जाकि सच्ची निज जानन की चाह, 'वे नाम' दिखावें राह।
जो कोई इस बात को जान ले, उसे संग ले चले उस राह।। साहिब जी

1077 यश के लिए कुछ नांहि करना, डर से ना ही भाग।
कर्तव्य पालन करो, इस पल रह कर जाग।। साहिब जी

1078 तुम सुख–दुख हानि–लाभ, विजय–पराजय विचारो नाईं।
युद्ध करना तुम पे छोड़ता, पाप संताप निकट ना आईं।। साहिब जी

1079 निष्काम भाव से कर्म करो, श्री कृष्ण की बात लो मान।
कर्म बंधन सब कट गये, जब गुरू चरणन ध्यान।। साहिब जी

1080 'वे नाम' वाणी ऐसे लो, जैसे चातक स्वाति बूंद।
'वे नाम' चरणन मोक्ष है, सुरति में इसे दो डाल।। साहिब जी

1081 सतगुरू कर्म बंधन काटता, मुक्ति का देता दान।
जो निष्काम भाव से कर्म करे, उसी पल में धरे ध्यान।। साहिब जी

1082 'वे नाम' सब्द सूं पल पल, देते ज्ञान ध्यान का बाण।
'वे नाम' सब्द सुरति में डालो, काल जाल सूं छूटे ध्यान।। साहिब जी

क सतगुरू संगति में, सहे जो तिल भर दुख।
उन दुखों पे वार दूं, कोटि जन्मों के सुख।। साहिब जी

1083 हानी लाभ का नांहि विचार, 'वे नाम' सतगुरू आज्ञा ले मान।
जो आवे 'वे नाम' सुरति में, तीर कमान सूं चलता बाण।। साहिब जी

1084 तन थिर मन थिर, सुरति करे सब काम।
इस पल में रहना आ गया, अब सुरति प्राण मिल हंसा महान।। साहिब जी

1085 सीधे जब ही तुम चलो, जग सूं कोसों दूर।
तो ही 'वे नाम' पास में, टेढ़े सूं कोसों दूर।। साहिब जी

1086 वेदों में वर्णन तीन गुण, साधक रहें इनसे मुक्त।
इन से ना पूर्ण मुक्ति मिले, जन्म मरन सूं ना मुक्त।। साहिब जी

1087 जीव कर्म को अधिकारी, फल का अधिकारी नांहि।
तुम तो आत्म रूप हो प्यारे, ईच्छा जिसमें नांहि।। साहिब जी

1088 सहज ध्याण सूं, मन माया कचरा जल जाये।
जब आत्म बिन कुछ नहीं रहा, हंसा हो निजघर को जाये।। साहिब जी

1089 जो 'वे नाम' दासा बने, उसके सतपुरूष दास हो जायें।
जन्म मृत्यु का चक्कर छूटता, निजघर साहिबन संग जायें।। साहिब जी

1090 सुनना सुनाना गया, आत्म रूप भटकाये।
अब सुरति एक में लागी, तन मन भी मिट जाये।। साहिब जी

1091 जे नर कामनाओं का परित्याग करे, मन मान विलीन।
आत्म आनंदित हो गई, स्थ्ति प्रज्ञ मन वहीन।। साहिब जी

क जो सुख में सुख नहीं मानता, दुख में दुखी नांहि होत।
काम क्रौध मोह सूं मुक्त वो, बिन मन मुणि वो होत।। साहिब जी

1092 शुभ अशुभ में हर्षित घृणा नांहि, स्थ्ति प्रज्ञ महान।
सभी ईंद्रियां उसके वश में, स्थिर चेतना उसकी जान।। साहिब जी

1093 जब लग 'वे नाम' भक्ति में प्रवीनता नांहि, ईंद्री मोह की ईच्छा वोही।
उत्तम रस अनुभव से, सार नाम सूं ईच्छा वलीन।। साहिब जी

1094 'वे नाम' पूर्णता ईंद्रिय संयम करे, चेतना सतगुरू में आन।

’वे नाम’ सुरति प्राण में नाम, साहिबन चरणन ध्यान।। साहिब जी

1095 मोह से क्रौध पनप गयो, मोह से सुमिरन शक्ति का नाष।
सुमिरन शक्ति भ्रमित जब, बुद्धि का होता नाष।। साहिब जी

1096 ’वे नाम’ कृपा बिन छूटे ना, काम क्रोध मोह अहंकार।
मन स्थिर कैसे रहे, जब लग लोभ मोह अहंकार।। साहिब जी

1097 मन बुद्धि हर लेत है, जीव सोया पड़ा बंद आंख।
साधक उस पल जाग रहा, सतगुरू चरणन सुरति आंख।। साहिब जी

1098 समुंद में नदी प्रवेश पर, समान प्रवाह उस पल।
जो नर सदैव स्थिर और शान्त, सतगुरू में हो उसी पल।। साहिब जी

1099 आत्म पूर्ण सुरति जब, छे तन से हो पार।
’वे नाम’ संग करें, ’वे नाम’ सब्द सूं होता पार।। साहिब जी

1100 कर्म फल से विमुख हो, कर्म फल से ना छूटा कोये।
सन्यास को धार कर, ’वे नाम’ बिन मोक्ष ना पावे कोये।। साहिब जी

1101 प्रकृति के वश पड़ा, हर जीव कर्म करे।
एक क्षण भी ना जी सके, जे ना कर्म करे।। साहिब जी

1102 ईन्द्रियों को वश में कर सके, जे सार नाम की पास हो दात।
वह निज को धोखा दे रहा, जिस पाई नहीं ये दात।। साहिब जी

1103 जो मन द्वारा कर्म इन्द्रियों को, वश करने का करे प्रयास।
वह भी खुद को धोखा दे रहा, कोई प्रयत्न करे ना काम।। साहिब जी

1104 भोजन को यज्ञ सामिग्री जान कर, सुरति सतगुरू में दे डाल।
सतगुरू का धन्यवाद, पूर्ण सतगुरू सूं सार सुरति अन्दर डाल।। साहिब जी

1105 कोई रोग तुझे ना लगे, 'वे नाम' चरणन जब ध्यान।
सुरति में 'वे नाम' हो, हाथों से करो तुम काम।। साहिब जी

1106 वो नर आत्म आनंदित हो गया, जिस निज को लिया है जान।
अब कुछ करना शेष ना, 'वे नाम' चरणन में ध्यान।। साहिब जी

1107 राजा जनक केवल कर्म सूं, सिद्धि प्राप्त करी।
जीवन में कर्तव्य का पालन, पाया ना सब्द विदेह।। साहिब जी

1108 सतगुरू जो जो आचरण करे, साधक उनका अनुसरण।
जो कुछ आदेश प्रस्तुत करे, जगत पूर्णता अनुसरण।। साहिब जी

1109 जब तक मन और मान है, तभी तक कर्म प्रालब्ध जान।
जब साधक हंसा हो गया, संग छूटा दोनों सूं जान।। साहिब जी

1110 बिन 'वे नाम' सार सब्द नहीं, बिन 'वे नाम' मन मान ना जाये।
ऊंची घाटी जन्म मरन की, 'वे नाम' ही पार लगाये।। साहिब जी

1111 जीव बड़ा देवी देव सूं, जिस में अमरजोत विद्यमान।
आत्म जान निज की पहचान, निज घर जा पा साहिब महान।। साहिब जी

1112 श्री कृष्ण भी हैं कह रहे, मैं नित्य कर्म हूं कर रहा।
जब छोड़ो तुम काम को, वर्ण संकर उत्पन्न हो रहे।। साहिब जी

1113 अज्ञानी पुरूष के लिए, कर्म कर्म–फल आवश्यक जान।
उनका जन्म कर्म अनुसार है, बिन इच्छा बनो महान।। साहिब जी

1114 मोह मान की उपज जान, कर्मों का करता मान ही जान।
सत रज तम तीनों गुणों से, कर्मों का करता मान।। साहिब जी

1115 श्री कृष्ण सूं पहला ज्ञान, सूर्य देव विवस्वान।
विवस्वान सूं पहले मनु, मनु सूं पाया शब्द ईश्वाकु।। साहिब जी

1116 आप ही तुम जान लो, बिन गुरू मिले ना ज्ञान ।
पूर्ण सतगुरू महान हैं, जिन दिया 'वे नाम' को ज्ञान।। साहिब जी

1117 बिन सतगुरू कोई पावे नहीं, केता करो उपाये।
लाखों जन्म गीता पड़, निजघर कभी ना जाये।। साहिब जी

1118 सतगुरू अमृत सागर हैं, कोई कोई जाने भेद।
मन मान तभी तजे जब, सतगुरू सूं मिले सब्द का भेद।। साहिब जी

1119 साहिबन के दरबार में, कर्ता केवल ईक संत।
सतगुरू कर्ता जान ले, साहिबन सेवक ईक संत।। साहिब जी

1120 सतगुरू सत नाम सत, आप सत जे होये।
तीन सत जब एक हों, विष सूं अमृत होये।। साहिब जी

1121 सतगुरू अखंड ब्रह्मण्ड कर मानो, उनको नहीं मानुष तुम जानो।
इनकी महिमां अपरम्पारा, इन्हीं सूं मिले निज धाम प्यारा।। साहिब जी

1122 तीन लोक से परे, चौथे लोक को लो जान।
वेही हमरा देश है, उसी की कर पहचान।। साहिब जी

श्री कृष्ण जी कहते हैं :-

1123 अनेक जन्म मेरे हो चुके, सभी मुझे हैं याद।
तुमरे भी लाखों हुऐ, तुम्हें नहीं कुछ याद।। साहिब जी

1124 मैं (श्री कृष्ण) अजन्मा अविनाशी, समस्त जीवों का स्वामी।
हर युग में आया और है आनौ, दिव्य रूप में जग स्वामी।। साहिब जी

1125 कृष्ण से जब आज्ञा पाई, पल में पांडव सब साज मंगाई।
यज्ञ की सामिग्री आई सारी, हर ओर सभी साधु आई।। साहिब जी

1126 पांडव प्रीती सूं बोले श्री कृष्ण यदुनाथ, पूर्ण यज्ञ तभी पावें।
घंट आकाश बाजत सुनी आवे, यज्ञ फल पूर्ण पावें।। साहिब जी

1127 सन्यासी आये वैरागी आये, आये ब्राह्मण तथा ब्रह्मचारी।
भौजन विविधी प्रकार बनाई, प्रेम प्रीती से कंई बाल ब्रह्मचारी।। साहिब जी

1128 अच्छर सांच झूठ मन मान, 'वे नाम' अच्छर मूल मेरे भाई।
'वे नाम' कृपा ते अच्छर पाई, अच्छर पाई हंस घर जाई।। साहिब जी

1129 'वे नाम' सबन को भाई, बिन अच्छर जन्म मरन में जाई।
आदि अंत एक अच्छर चीनह, जा बल हंसा निज घर जाई।। साहिब जी

1130 कर विचार विवेक, 'वे नाम' सूं निस्तारा जान।
'वे नाम' की टेक ले, मन माया झूठी जान।। साहिब जी

अमरलोक (हंसा देस) की महिमां

'वे नाम' कहत हैं :–

1131 यह काल पुरूष का खेल है, जो निराकार साकार रूप बनाये।
कभी हंसाये कभी रूलाये, कोई बिरला साधक भेद ये पाये।। साहिब जी

1132 'वे नाम' बिना मन सूं कोई पार ना पावे, सतगुरू शरणी बिन नांहि पार।
आठों पहर सुरति सब्द में, नाम जहाज सूं पार।। साहिब जी

1133 'वे नाम' सा प्रेमी जग है नहीं, जिस सूं सुरति जगाऐं।
वह ही पूर्ण साहिब हैं, तीन लोक सूं पार हो जाऐं।। साहिब जी

1134 'वे नाम' सब्द दान है दीना, हर्षित नाम सुमरें सुरति सूं।
'वे नाम' भक्ति करें ध्यान सूं, छोड़ें छल कपट सुरति सूं।। साहिब जी

1135 अमरपुर से हम सब आये, वह ही प्रेम द्वारा।
अति सुंदर अति प्यारा जलवा, सुरति–अमृत पसारा।। साहिब जी

1136 तीन लोक में मन है राजा, तन मन संग आत्म धारा।
अब तुम इतना जान लो प्यारो, आत्म ही प्रेम की धारा।। साहिब जी

1137 नानक कबीर रे दास प्यारे, प्रेम की जोत महांसागर प्यारा।
सच्च प्रेम आनंद की ज्योती, वे तो प्रेम सागर की धारा।। साहिब जी

1138 अचल पुरूष का अचल है देशा, 'वे नाम' सूं होये प्रवेशा।
'वे नाम' भक्ति का मूला, तन छूटे निज धाम प्रवेशा।। साहिब जी

1139 बिन सूरज वहां उजियारा, बिन बादल बरसे धारा ।
बिन भाषा बोली बोलें, सुरति सूं बहे सुरति धारा।। साहिब जी

1140 पिण्ड–ब्रह्माण्ड के पार वे, सतपुरूष निजधाम।
'वे नाम' को जो कोई गाहे, पावे तहां विश्राम।। साहिब जी

1141 नांहि उत्पति नांहि प्रलयः, नांहि आवे नांहि जावे।
वर्णन सूं है वह बाहिरा, सुरति सूं सब्द ध्यावे।। साहिब जी

1142 सब जीव हंसा प्रेम प्यारे, लाखों सूर्य शरमायें।
साहिबन प्रीती हर हंसा सूं, जोत में जोत समाये।। साहिब जी

1143 धरती नांहि अंबर नांहि, वह देश उस पार।
हर हंसा अंग साहिबन जानो, सुरति सूं देत पुकार।। साहिब जी

1144 सुनो भाई साधो महिमां अपरम्पारा, निजधाम महिमां अपरम्पारा।
प्यारो मानो कहा हमारा, सुरति जहाज अपरम्पारा।। साहिब जी

1145 'वे नाम' सूं अमृत वर्षा, सुरति ही पार लगाये।
बूंद बिछड़ी आद की है, महां सागर में जा समाये।। साहिब जी

1146 सात द्वीप नों खण्ड तहां ना, हर हंसा तहां है रहता।
धुंधकार वहां सुन्न है नांहि, नीर वहां ना बहता।। साहिब जी

क दस अवतार वहां कुछ नांहि, नांहि रचयो पिण्ड प्रकाशा।
रोग सोग तहां ना कोई, एक सी ऋतु उस पारा।। साहिब जी

1147 ना कोई चलता हिलता वहां पर, मीन पपील नहीं चाल।
बिन लिखे पढ़े ज्ञानी सब हंसा, सुरति विहंगम चाल।। साहिब जी

1148 यही विधी मीरां हंसा, आज्ञा चक्र में दर्श किया सरकार।
सतगुरू संग ले चले अपने, सुरत कमल दरबार।। साहिब जी

1149 यही विधि मीरां हंसा सुरत कमल में, चरणन शीष दिया।
सतगुरू कुपा ऐसी होई, सतपुरूष को पा लिया।। साहिब जी

1150 सतगुरू चरणन खो गये पल में, देखा महां ज्योति प्रकाश।

सोलहं सूर्य की ज्योति को धारा, साहिब संग साहिबन दरबार।। साहिब जी

1151 चारों ओर देख के हंसा, अति आनंदित भई ।
हर कोई पूछे क्युं देर करि, मैं ना जानु क्युं देर हुई।। साहिब जी

1152 'वे नाम' चरणन चित लाएं, 'वे नाम' सुरति में।
सोही पहुंचे सतलोक, युगों युगों वासा तहां में।। साहिब जी

क वह घर अगम अपार, तहां सतपुरूष आप समाई।
अति सोभा अति प्रकाश, महिमां कही ना जाई।। साहिब जी

1153 अमरपुर प्यारा हंसों का देसा, जहां नहीं यम त्रास।
काल जाल तहां नांहि, ना वहां वेद व्यास।। साहिब जी

1154 काम क्रौध और लोभ का, तहां नांहि विस्तार।
गुण तीन प्रपंच तहां ना, वहां तो क्षमाशील आनंद व्योवहार।। साहिब जी

1155 कागज़ स्याहि कलम तहां ना, नांहि वेद विचारा।
ईंद्री–रस सुख–स्वाद तहां ना, ना ब्रह्मा विष्णु पसारा।। साहिब जी

1156 राम कृष्ण अवतार तहां ना, नांहि निरंकार विचारा।
रोम रोम ब्रह्मण्ड कोटि, लांखों रवि उजियारा।। साहिब जी

1157 दसों अवतार तहां ना कोई, नांहि झूठ पसारा।
उल्टि हो जाये जब चाल, हंसा निजघर साहिबन प्यारा।। साहिब जी

1158 भरमें चारों धाम काल में, काम ईक ना आवे।
तृष्णा नांहि रूप भेस नांहि, काल पहुंच ना पावे।। साहिब जी

1159 बिन ज्ञान नहीं भक्ति है, 'वे नाम' जब ध्यान।

बिन 'वे नाम' भेद ना जाने, किस का करें ध्यान।। साहिब जी

1160 'वे नाम' सहारा जब मिले, जा पहुंचे सतलोक ।
बिन सतगुरू कोई पार ना, फिर फिर काल के लोक।। साहिब जी

1161 साहिबन रूप अति प्यारा, वर्णन सूं है बाहिरा।
वे प्रकट हों या अप्रकट, यह उनकी सुरति धारा।। साहिब जी

1162 वे आप अमरलोक के स्वामी, सुरति उनकी वाणी।
सुरति का लोक प्यारा, सुरति ही अमरलोक तूं जान।। साहिब जी

1163 बिन धरती वहां सब चलते, बिन पंखों के सब उड़ते।
बिन बीज के सब कुछ होता, सतपुरूष ही सबको देते।। साहिब जी

1164 'वे नाम' सब्द जहाज सतपुरूष का, 'वे नाम' खेवनहार।
जो कोई आवे जहाज पर, 'वे नाम' ले चलें उस पार।। साहिब जी

1165 'वे नाम' सब शब्दों से पार है, सबका करन करावनहार।
अनुभव सहज सुरति में, 'वे नाम' चरण आधार।। साहिब जी

1166 मन वाणी से पार जानों, ये तो साहिबन रूप।
सुरति निरति जब प्राण में, सुरति सतगुरू रूप।। साहिब जी

वे नाम कहें :—

1167 सुरति सा जग में कुछ है नांहि, मन तो केवल मान।
डाल दो सुरति सतगुरू में प्यारो, साहिबन दर्श महान।। साहिब जी

1168 सतगुरू महिमां शब्दों बाहिरा, जाने सुमिरणहारा।
हर पल में संग साहिब, जाने साधक प्यारां।। साहिब जी

1169 सतगुरू महिमां अनंत प्यारो, मौ से कहि ना जाये।
तन मन सतगुरू को देकर, चरणों में चित्त लगायें।। साहिब जी

1170 ज्ञान योग अति कठिन है, भक्ति योग प्रेम आधार।
निराकार भक्ति अति कष्टकारी, परा भक्ति सहज आधार।। साहिब जी

1171 जो हर कार्य सतगुरू अर्पण करें, प्रेम भाव से ध्यान।
चित को उन में डाल दें, निरंतर सतगुरू ध्यान।। साहिब जी

1172 'वे नाम' का बस यही कहना है, सुरति में ''वे नाम'' सब्द धारो।
हर पल तुम इतना ध्यान करो, सार नाम में सुरति आन सिमरो।। साहिब जी

1173 सेवा सिमरन पर ध्यान धरो, बिन फल की ईच्छा काम करो।
सुरति में भक्ति ना भूलो, मन तृष्णा पर मत ध्यान धरो।। साहिब जी

1174 तीन लोक में मन राज है, चौथे लोक साहिबन वास।
ये मृत्यु लोक इक धोखा है, दुख दर्द काम कष्ट क्लेस।। साहिब जी

1175 बिन परख मत विश्वास करो, ''वे नाम'' सब्द पर सुरति आन धरो।
अब आस परख विश्वास भरे, तांहि सतगुरू की परख़ मिले।। साहिब जी

1176 सतगुरू भक्ति तुम सुबह शाम करो, ''वे नाम'' सब्द में सुरति प्राण धरो।
सतगुरू दर्शन से चेतन हो आत्म, सुख दुख में मत तुम भेद करो।। साहिब जी

1177 अमरपुर है हंसों का प्यारा, काल जाल सूं लेना है छुटकारा।
तहां साहिबन सुरति राज चले, यहां मन का नहीं जाल पसारो।। साहिब जी

1178 रोग तो भौग का कारण है, कारण सूं ही प्रमाण मिले।
आशा तृष्णा में ही जीने से, दुख दर्द संशय सामान मिले।। साहिब जी

1179 कांटों पर भी जब हाथ पड़े, उसी सूं हाथ को दर्द मिले।
अब कांटों की पहचान हुई, निज भूल की भी पहचान मिले।। साहिब जी

1180 कोई भेद परख़ बिन मिलता ना, निज की केवल पहचान करो।
जो दिखता है वो होता ना, जो होता है निज ज्ञान तेरो।। साहिब जी

1181 नव जात शिशु सम हो जाओ, निज को पूर्ण तुम पा जाओ।
इस सार सब्द पर सुरति हो, सतगुरू को ही कर्ता जानो।। साहिब जी

1182 तीन लोक माया है, सतलोक जाओ निज रूप मिले।
सतगुरू साहिबन वासा है, सार सब्द सूं प्रमाण मिले।। साहिब जी

1183 सतलोक ज्ञान सभी जग को, बतला दिया 'वे नाम' प्यारे ने।
जो प्यारा शरणी आयेगा, सतगुरू ही पार लगायेगो।। साहिब जी

1184 आत्म ज्ञान बिन काल जाल ना छूटे, सच्चे सतगुरू की करो पहचान।
सुरति निरति के मिलन से, आत्म हंसा रूप का भेद मिले।। साहिब जी

1185 हित अनहित पशु पक्षी भी जानत, आत्म उनके सब काम करे।
किसी जीव को कमतर मत जानो, उसमें ही साहिबन वास करें।। साहिब जी

1186 ईंगला तेरा बायां स्वर प्यारे, और पिंगला दायां स्वर तेरा है।
जब दोनों बंद हो जाते, सुश्मिन पल में खुल जाती है।। साहिब जी

1187 ईंगला पिंगला सम होने से, सुश्मिन सब्द सुरत कमल द्वार चले।
ये भेद दिया गधे भाई प्यारे ने, सतलोक जानन हारे ने।। साहिब जी

1188 बाहिर के बंद होते ही, अंदर का पट खुल जाता।
मन का संग अब छुट गया, आत्म हंसा बन जातो।। साहिब जी

1189 आत्म अनुभव अनमोल रत्न, अब मन भी दास बन जाता।
आत्म की आंख जग गई, मूल सुरति आत्म अंग बन जातो।। साहिब जी

1190 अब चित्त भी दासा पन धारे, आत्म को हंसा रूप मिले।
अब कोई बाधा आत्म संग नांहि, सुरति को अब चेतन स्वरूप मिलो।। साहिब जी

1191 इस पल में जीना आ गया, समय काल का सारा भेद गया।
उल्टा जाप सुरति संग चल पड़ा, निज पहचान का भेद भयो।। साहिब जी

1192 उल्टि सुरति जब हो गई, इस तन का संग अब छुट गया।
अब जीवित मरना हो गया, आत्म को सतगुरू संग भया।। साहिब जी

1193 सुरत कमल में वासा हो गया, तन मन छूटा हंसा रूप मिला।
सतगुरू साहिबन संग मिला, मोक्ष भेद तत्काल मिला।। साहिब जी

1194 सोलहं सूर्य की जोत मिल जाती, महां सुन्न सूं पार हो जाता।
अब हंसा निज को सतलोक में पाता, सब हंसों से मेल हो जाता।। साहिब जी

1195 आशा तृष्णा को तज डालो, पल में पालो सुरति जी।
इस पल में जीना सीखो, पल में पालो साहिब जी।। साहिब जी

1196 जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि, सत की जोत जगा लो जी।
निज को जानो आत्म रूप, सच्ची बात यही है जी।। साहिब जी

1197 हर जीव में साहिबन वासा, फिर कौन अपना पराया है जी।
जितना जानो उतना मानो, सतगुरू सुरति भण्डार हैं जी।। साहिब जी

1198 अनुभव कसौटी जानो, बस इतना सा तुम जान लो जी।
इक जान सब जाना, इतना जाना तो सब जान लिया जी।। साहिब जी

1199 इक जाना सब जाना, सब कुछ भूला जानो जी।
मौत हर दम याद रक्खो, इसी द्वार से जानो जी।। साहिब जी

1200 आत्म तन मन बिन ही जानो, तांहि मोक्ष पथ पाओ जी।
ये संसार इक नाटक बिन, कुछ और ना तुम जानो जी।। साहिब जी

1201 संत का संग कभी ना छोड़ो, तन जावे तो जावे जी।
रिश्ते नाते झूठे जग में, इस बात को तुम जानो जी।। साहिब जी

1202 ये जग प्रेम डौर से बंधा, बस इतनी बात तुम जान लो जी।
प्रेम जानो प्रेम ही पाओ, प्रेम को जग में बांटो जी।। साहिब जी

1203 सतपुरूष हैं प्रेम की जोति, बस इतना तुम जानो जी।
ना कोई अपना ना बैग़ाना, सुरति सब में एक सी डालो जी।। साहिब जी

1204 आत्म प्रेम की जोति प्यारो, सतगुरू सुरति पुंझ जानो जी।
सतगुरू प्रेम की जोति हैं, सतपुरूष प्रेम ज्वाला जी।। साहिब जी

1205 साहिब जी जिन को कहते, प्रेम रस सुरति धारा जी।
सुरति में रहना सीख लो, बस 'वे नाम' सब्द निस्तारा जी।। साहिब जी

1206 बाहिर देखना तुम बंद करो, अपने अंदर ही देखो जी।
जीवित मरिये भवजल तरिये, यही बस तुम धार लो जी।। साहिब जी

1207 साहिब भक्ति बिन नांहि निस्तारा, सब जीव तुम जान लो जी।
आठों पहर सुरति में रहना, इतना बस तुम जान लो जी।। साहिब जी

1208 तीन लोक से आगे रहते, निर्लम्भ राम प्यारे जी।
चौथे लोक के प्यारे राम, सतपुरूष साहिबन न्यारे जी।। साहिब जी

1209 सतलोक में वासा उनका, संग में सब हंसा जी।
तीन लोक से आगे रहते, सतपुरूष साहिबन प्यारे जी।। साहिब जी

1210 अमरलोक हंसों का प्यारा, हंसों का न्यारा लोक जी।
सतलोक के वासी हंसा, पड़े जग में काल वश जी।। साहिब जी

1211 हर दम गाओ प्यारो नाम, ''वे नाम'' सब्द निस्तारा जी।
तेरे अंदर हरदम रहते, सतगुरू सुरति रूप न्यारे जी।। साहिब जी

1212 स्वांस स्वांस में वासा उनका, यही तुम जान लो जी।
सतगुरू बिन पाओ ना, हंसों के साहिबन प्यारे जी।। साहिब जी

1213 तुम भी ध्यायो मैं भी ध्यायुं, सभी उनको ध्या लो जी।
सतगुरू भक्ति कर लो प्यारे, पल में साहिबन पा लो जी।। साहिब जी

1214 पाओ सब्द गाओ सब्द, ''वे नाम'' सब्द प्यारा जी।
अंग संग तेरे सतगुरू हैं रहते, जानो सब्द तारनहारा जी।। साहिब जी

1215 सतगुरू रूप साहिबन तुम जानो, पल में साहिबन पा लो जी।
जो कोई ध्यान में सतगुरू ध्यावे, पल में पा ले साहिबन जी।। साहिब जी

1216 अंग संग तेरे सतगुरू हैं रहते, जानो उनको साहिबन जी।
सतगुरू साहिबन रूप तुम जानो, पल में पा लो साहिबन जी।। साहिब जी

1217 जो कोई ध्यान से सतगुरू ध्याये, अंग संग पाये साहिबन जी।
सब संतों के भीतर रहते, सतगुरू रूप साहिब जी।। साहिब जी

1218 सुख दुख में तुम नाम को ध्याओ, इक सम बस हो जाओ जी।
सब भक्तों के सतगुरू हैं, सच्ची बात को जानो जी।। साहिब जी

1218 रोम रोम में साहिबन जोत स्वरूपी, सब हंसों के साहिबन जी।
बिन मोल बिन तोल के मिलते, सतगुरू सूं सब्द पा लो जी।। साहिब जी

1219 निज लाभ को भूल कर प्यारे, परमार्थ के करता काज।
मोह माया सब छूटे प्यारो, सतगुरू के करता काज।। साहिब जी

1220 ''वे नाम'' सब्द की बड़ाई प्यारो, जैसे चुम्भक लोहा भये।
बिन ''वे नाम'' सब्द के पार ना प्यारो, केता करो उपाये।। साहिब जी

1221 वस्तु कहीं ढूंढे कहीं, प्यारो हाथ में आना मत ले जान।
जब कोई प्यारा संत मिले, ''वे नाम'' सब्द का पाना ले जान।। साहिब जी

1222 मन बुद्धि चित के मोह में प्यारो, उभरें काम क्रौध अहंकार।
जब तक ना पाओ पूर्ण सतगुरू प्यारो, काल के हाथ पतवार।। साहिब जी

1223 धन स्त्री तजना सहज ना प्यारो, ये सब मन के काम ले जान।
मान बड़ाये रिश्ते नाते प्यारो, मोह मन के हाथ कमान।। साहिब जी

1224 जग में जो कुछ भी दिख रहा प्यारो, वह सब काल का जाल।
हर जीव में मन का वासा प्यारो, संग अंधा मोह का जाल।। साहिब जी

1225 निर्मोहि होई ज्ञान विचारिये, जब ''वे नाम'' सब्द की मिलती दात।
मूल सब्द दात जब पास में प्यारो, फिर सुरति मन की माने ना बात।। साहिब जी

1226 जैसे बीज तूं बो रहा प्यारे, वैसे ही फूल उगता।
जब बीज ही फैंका मौत का, फिर फूल उसी का पाता।। साहिब जी

1227 मूल सब्द कहीं ढूंढे कहीं ओर, कैसे आवे हाथ।
जो पावे सतगुरू 'वे नाम' को, ''वे नाम'' सब्द चेतन सुरति साथ।। साहिब जी

1228 ''वे नाम'' सब्द को पाकर प्यारो, पाओ मोक्ष पद निजधाम।
अमृत दात यही कहावे प्यारो, सच्चा निजघर निजधाम।। साहिब जी

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–1)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

1 मन की तरंग जान लो, तो हो गया भजन – २
2 मन माया संग छोड़ दो, तो हो गया भजन – २
3 आये कहां से और जाना कहां जान लो, तो हो गया भजन – २
4 निज का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २
5 निज घर का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २
6 कल और कल में जाना छुट गया, तो हो गया भजन – २
7 कल और आज मिट गया, तो हो गया भजन – २
8 इस पल में रहना आ गया, तो हो गया भजन – २
9 सार सब्द साहिबन वास जान लो, तो हो गया भजन – २
10 सतगुरू सूं सब्द को पा लिया, तो हो गया भजन – २
11 सुरति निरति का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २
12 मेरे तेरे का भेद मिट गया, तो हो गया भजन – २
13 विचारों का जाल छोड़ दो, तो हो गया भजन – २
14 विचारों के प्रति जाग गये, तो हो गया भजन – २
15 विचारों के तल पे आ गये, तो हो गया भजन – २
16 रिश्ते नातों का भेद मिट गया, तो हो गया भजन – २
17 नहर बनने का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २
18 नहर छोड़ दरिया बनने का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २

19 दुनियां बनना और मिटना जान लो, तो हो गया भजन – २
20 साहिब प्यारा एक हमारा जान लो, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–2)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

21 जीने मरने का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २
22 जग में आने का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २
23 सत्त की ओर चल पड़े, तो हो गया भजन – २
24 सच्चे पिता को जान लिया, तो हो गया भजन – २
25 आत्म बंधन का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २
26 तृष्णाओं के प्रति जाग गया, तो हो गया भजन – २
27 कर्मों के प्रति जाग गया, तो हो गया भजन – २
28 उत्तेजना के प्रति जाग गया, तो हो गया भजन – २
29 भावों को शुद्ध कर लिया, तो हो गया भजन – २
30 कष्ट सुख का प्रतीक मान लो, तो हो गया भजन – २
31 सुख दुख में सम जब हो गये, तो हो गया भजन – २
32 सब को साहिबन अंश जान लो, तो हो गया भजन – २
33 अंतर–जगत के प्रति जाग गया, तो हो गया भजन – २
34 विचारों से खाली हो गया, तो हो गया भजन – २
35 समग्र जाग्रता आ गई, तो हो गया भजन – २
36 सतगुरू के प्रति श्रद्धा जग गई, तो हो गया भजन – २
37 कर्म करते सहज रहो, तो हो गया भजन – २
38 कर्मण खेल जान लो, तो हो गया भजन – २
39 सुरति सिमरन बना रहे, तो हो गया भजन – २

40 अभी इस क्षण में जीना आ गया, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–3)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

41 सब ओर से तुझे देख रहा जान लो, तो हो गया भजन – २
42 कल और कल में जाना छोड़ दो, तो हो गया भजन – २
43 चारों ओर साहिब विस्तार जान लो, तो हो गया भजन – २
44 चारों ओर आत्म विस्तार जान लो, तो हो गया भजन – २
45 अशांति के प्रति जग गया, तो हो गया भजन – २
46 शांत सहज सम हो गया, तो हो गया भजन – २
47 विषयों में रहना छोड़ दो, तो हो गया भजन – २
48 साहिब के प्रति जाग्रता आ गई, तो हो गया भजन – २
49 निज के प्रति जाग्रता आ गई, तो हो गया भजन – २
50 काम मन का उद्ग़म है जान लो, तो हो गया भजन – २
51 'मै और मेरी' मिट गई, तो हो गया भजन – २
52 रिश्ते नातों को भेद मिट गया, तो हो गया भजन – २
53 सहज अवस्था को पा लिया, तो हो गया भजन – २
54 सुरति से ध्यान में जाना आ गया, तो हो गया भजन – २
55 निज स्वभाव में जीना आ गया, तो हो गया भजन – २
56 'मै' और 'मेरी' का भ्रम मिट गया, तो हो गया भजन – २
57 मोह माया को जान लो, तो हो गया भजन – २
58 लोभ लार को छोड़ दो, तो हो गया भजन – २

59 भेद भाव मिट गया, तो हो गया भजन – २
60 दुख सुख का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–4)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

61 झुकना जब आ गया, तो हो गया भजन – २
62 अंदर से मान मिट गया, तो हो गया भजन – २
63 सभी को ईक जान लो, तो हो गया भजन – २
64 दुख सुख ईक सम जान लो, तो हो गया भजन – २
65 सपने लेना तज दिया, तो हो गया भजन – २
66 जग को सपना जान लो, तो हो गया भजन – २
67 काम क्रोध मद् लोभ का ज्ञान हो गया, तो हो गया भजन – २
68 ईष्या द्वैष जब मिट गया, तो हो गया भजन – २
69 सत्त झूठ में भेद मिट गया, तो हो गया भजन – २
70 आत्म की जोत जग गई, तो हो गया भजन – २
71 तज कुसंग सत्संग पा लिया, तो हो गया भजन – २
72 सार नाम है राम रत्न जान लो, तो हो गया भजन – २
73 आषा तृष्णा से मुक्त हो गये, तो हो गया भजन – २
74 जीने का राज़ जान लो, तो हो गया भजन – २
75 सृष्टि् का राज़ जान लो, तो हो गया भजन – 2
76 तेरा साहिब स्वांस में जान लो, तो हो गया भजन – २
77 तेरा साहिब हर घट अंदर जान लो, तो हो गया भजन – २
78 स्वांसा का उपर चलना पा लिया, तो हो गया भजन – २

79 बाहर से भीतर चल पड़ो, तो हो गया भजन – २
80 मौत का डर खो गया, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–5)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

81 अंदर से खाली हो गये, तो हो गया भजन – २
82 अंदर जाने का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २
83 अंदर बाहर ईक हो गये, तो हो गया भजन – २
84 सुन्न को भीतर धार लो, तो हो गया भजन – २
85 कंचन माटि ईक समान दिखे, तो हो गया भजन – २
86 सुरति में सब्द रम गया, तो हो गया भजन – २
87 हर पल सुरति में रहो, तो हो गया भजन – २
88 बिन सतगुरू कोई पार नांहि जान लो, तो हो गया भजन – २
89 सतपुरूष का पता मिल गया, तो हो गया भजन – २
90 सतगुरू को सब सौंप दो, तो हो गया भजन – २
91 सतगुरू पे भरोसा आ गया, तो हो गया भजन – २
92 अंदर में साहिब बसा लिये, तो हो गया भजन – २
93 सतपुरूष का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २
94 सुरति में सत्त को धार लो, तो हो गया भजन – २
95 गुरू सूं पारस सुरति मिल गई, तो हो गया भजन – २
96 सुरति ने मन मिटा दिया, तो हो गया भजन – २
97 अश्विन धारा बहना ना रूके, तो हो गया भजन – २
98 तुरियातीत अवस्था पा गया, तो हो गया भजन – २

99 तुरियातीत में रमना आ गया, तो हो गया भजन – २
100 जीते जी मरना आ गया, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–6)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

101 उल्टा जाप करना आ गया, तो हो गया भजन – २
102 सर्गुण निर्गुण साहिब भेद जान लिया, तो हो गया भजन – २
103 अष्टम चक्र में गुरू पा लिया, तो हो गया भजन – २
104 सतगुरू को जग में पा लिया, तो हो गया भजन – २
105 सतगुरू छवि जो नैनन बसे, तो हो गया भजन – २
106 सतगुरू पे सब लुटा दिया, तो हो गया भजन – २
107 प्रेम वैराग अंदर जग गया, तो हो गया भजन – २
108 कामना रोग है जान लो, तो हो गया भजन – २
109 मीरा ने सब लुटा दिया, तो हो गया भजन – २
110 जग का भाव तज दिया, तो हो गया भजन – २
111 अंदर से तार जुड़ गई, तो हो गया भजन – २
112 जोत से जोत जग गई, तो हो गया भजन – २
113 मुझ में 'मै' खो गई, तो हो गया भजन – २
114 वैराग़ की धारा जग गई, तो हो गया भजन – २
115 प्रेम प्रीत में जब खो गई, तो हो गया भजन – २
116 बच्चे समान पुकार करना आ गया, तो हो गया भजन – २
117 पुकार में विरह आ गई, तो हो गया भजन – २

118 कुछ भी बुरा ना दिखे, तो हो गया भजन – २
119 सतगुरू सब्द बाण खा लिया, तो हो गया भजन – २
120 जा सहजै में साहिबन मिले, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–7)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

121 जब साधक सहज कहावे, तो हो गया भजन – २
122 भीतर से सहजता प्रकटे, तो हो गया भजन – २
123 मस्ती का पता मिल गया, तो हो गया भजन – २
124 मरने का डर मिट गया, तो हो गया भजन – २
125 भक्ति मे निडर हो गया, तो हो गया भजन – 2
126 आज का अभी कर लो, तो हो गया भजन – २
127 विरह पुकार करनी जान लो, तो हो गया भजन – २
128 तूं बस तूं अंदर बस गई, तो हो गया भजन – २
129 बच्चों के आगे झुकना आ गया, तो हो गया भजन – २
130 सतगुरू महिमां गाना आ गया, तो हो गया भजन – २
131 निज तन को भूल जाओ, तो हो गया भजन – २
132 जग में ईक सम रहना आ गया, तो हो गया भजन – २
133 मीन पपील विहंगम का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २
134 सब्द और शब्द का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २
135 जग कर्मों का खेल जान लो, तो हो गया भजन – २
136 कांटों में रहना आ गया, तो हो गया भजन – २

137 बिन स्वांसा जीना आ गया, तो हो गया भजन – २
138 रातों में हसना आ गया, तो हो गया भजन – २
139 प्रेम विरह में रोना आ गया, तो हो गया भजन – २
140 स्वांसा में साहिब नाम रम गया, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–8)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

141 रैन दिन स्वांसा आरती को जान लो, तो हो गया भजन – २
142 सब्द सुरति स्वांस समाऐ, तो हो गया भजन – २
143 बस्ती और मरघट का भेद पा लो, तो हो गया भजन – २
144 सतगुरू में श्रद्धा जग गई, तो हो गया भजन – २
145 पूर्ण समर्पण जब हो गया, तो हो गया भजन – २
146 ज्ञान ध्यान प्रेम जब ईक हों, तो हो गया भजन – २
147 सहजता का बीज सतपुरूष जान लो, तो हो गया भजन – २
148 सहज सरतला मूलतः साहिब जान लो, तो हो गया भजन – २
149 सुमिरन योग लय योग जान लो, तो हो गया भजन – २
150 दौ भाग सहज योग जान लो, तो हो गया भजन – 2
151 हर पल को आखिरी जान लो, तो हो गया भजन – २
152 अनहद की मीठी धुण पार कर लो, तो हो गया भजन – २
153 अनहद ढोल जान लो, तो हो गया भजन – २
154 आत्म पर मन का ताला खुले, तो हो गया भजन – २
155 औंकार ताला आत्म जान ले, तो हो गया भजन – २
156 औंकार ताले की चाभी सतगुरू सूं पा लो, तो हो गया भजन – २
157 सार सब्द से औंकार ताला खुले, तो हो गया भजन – २
158 औंकार नहीं सतपुरूष उद्‌गम तुम्हारा जान लो, तो हो गया भजन – २

159 विचारों में विचरणा छोड़ दो, तो हो गया भजन – २
160 सोच विचार संशय मूल जान लो, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–9)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

161 निज बिन कुछ ना दिखाई दे, तो भी ना हो सके भजन – २
162 कामना अधूरी रहे, तो भी ना हो सके भजन – २
163 कामना पूरी हो गई, तो भी ना हो सके भजन – २
164 लोभ लालसा ना मिटी, तो भी ना हो सके भजन – २
165 संवेदना जब तक ना जगे, तो भी ना हो सके भजन – २
166 अर्जुन की युद्ध में जीत हुई, तो भी ना हो सके भजन – २
167 अर्जुन की आस पूरी ना हुई, तो भी ना हो सके भजन – २
168 सिकंदर की आस पूरी हो गई, तो भी ना हो सके भजन – २
169 पोरस की आस मर गई, तो भी ना हो सके भजन – २
170 सिकंदर की हो गई जीत, तो भी ना हो सके भजन – २
171 पोरस की हो गई हार, तो भी ना हो सके भजन – २
172 ईच्छाऐं जो पूरी ना हुई, तो भी ना हो सके भजन – २
173 ईच्छाओं की बाधा पर क्रौध आया, तो भी ना हो सके भजन – 2
174 हार से मन बुझ गया, तो भी ना हो सके भजन – २
175 हार से द्वैष बढ़ गया, तो भी ना हो सके भजन – २
176 जीत से मान जग गया, तो भी ना हो सके भजन – २
177 मान से मति मर गई, तो भी ना हो सके भजन – २
178 हार जीत जो ना मिटी, तो भी ना हो सके भजन – २

179 कशमकश ना जो मिटी, तो भी ना हो सके भजन – २
180 मन माया जो ना मिटी, तो भी ना हो सके भजन – २
181 स्वार्थ सिद्धि ना मिटी, तो भी ना हो सके भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–10)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

182 कामनाओं का रस जान लो, तो हो गया भजन – २
183 जीत हार का विचार ना रहा, तो हो गया भजन – २
184 तन तज निज को जान लो, तो हो गया भजन – २
185 जब सब प्रेमी दिखें, तो हो गया भजन – २
186 स्वभाव में जीना आ गया, तो हो गया भजन – २
187 काम क्रौध से मुक्त हो गये, तो हो गया भजन – २
188 तेरी मेरी खो गई, तो हो गया भजन – २
189 मुख और मन तन अंग जान लो, तो हो गया भजन – २
190 देव भक्ति सूं स्वर्ग मिले ये जान लो, तो हो गया भजन – २
191 निरंकार भक्ति सूं सुन्न लोक मिले ये जान लो, तो हो गया भजन – २
192 जग भक्ति सूं मन तरंग ना मिटे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
193 स्वर्ग सुन्न अल्प मुक्ति जान लो, तो हो गया भजन – २
194 मुक्ति सूं आवागमन ना मिटे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
195 मुख मन भक्ति सूं मोक्ष ना मिले ये जान लो, तो हो गया भजन – २
196 पूर्ण सतगुरू शरणी ही मोक्ष मिले ये जान लो, तो हो गया भजन – २
197 तन दुखों का मूल जान लो, तो हो गया भजन – २

198 तूं तन मन नांहि ये जान लो, तो हो गया भजन – २
199 हर पल में उसको देख लो, तो हो गया भजन – २
200 प्रेम पुकार करना सीख लो, तो हो गया भजन – २
201 अपनी शक्ति का प्रयोग आ गया, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–11)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

202 बुद्धि का प्रयोग आ गया, तो हो गया भजन – २
203 हर हाल में जीना आ गया, तो हो गया भजन – २
204 प्राणों का संग छूट गया, तो हो गया भजन – २
205 कुछ भी बुरा जग ना दिखे, तो हो गया भजन – २
206 ईक बिन कुछ ना दिखे, तो हो गया भजन – २
207 साहिब ईक प्यारा जान लो, तो हो गया भजन – २
208 कुछ करना शेष ना रहा, तो हो गया भजन – २
209 प्रेम लगन लग गई, तो हो गया भजन – २
210 मूल नाम का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २
211 तज कुसंग सतनाम भजा, तो हो गया भजन – २
212 ईन्द्रियों का बंधन जान लो, तो हो गया भजन – २
213 कामनाओं का रस जान लो, तो हो गया भजन – २
214 मृत्यु का भय मिट गया, तो हो गया भजन – २
215 निष्काम समाधि लग गई, तो हो गया भजन – २
216 तन माटि समान जान लो, तो हो गया भजन – २

217 ईस तन का ख़ाक होना जान लो, तो हो गया भजन – २
218 दोनों का संग खो गया, तो हो गया भजन – २
219 सतगुरू चरणों में खोना आ गया, तो हो गया भजन – २
220 साहिबन सब मूल जान लो, तो हो गया भजन – २
221 कीचड़ में खिलना आ गयो, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–12)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

222 सब ओर प्रेम छा गयो, तो हो गया भजन – २
223 अंदर प्रेम जोत जग गई, तो हो गया भजन – २
224 श्रद्धा भक्ति से प्रेम प्रकटे, तो हो गया भजन – २
225 हरि से आगे साहिबन नाम पा लो, तो हो गया भजन – २
226 आत्म कर्मण रहित जान लो, तो हो गया भजन – २
227 आत्म को मन से छुड़ा लिया, तो हो गया भजन – २
228 आत्म रूप जब हो गये, तो हो गया भजन – २
229 पूर्ण आत्मिक होना आ गया, तो हो गया भजन – २
230 सतगुरू शरणी मूल सब्द मिले जान लो, तो हो गया भजन – २
231 सुरत सब्द में जब समा गये, तो हो गया भजन – २
232 'मै' का मान तज दिया, तो हो गया भजन – २
233 सुरत सब्द में सतगुरू वास जान लो, तो हो गया भजन – २
234 सतगुरू में साहिबन वास जान लो, तो हो गया भजन – २
235 सुरत कमल में जाना आ गया, तो हो गया भजन – २

236 सब्द सुरति खुमारी जान लो, तो हो गया भजन – २
237 ईंगला पिंगला का राज़ पा लिया, तो हो गया भजन – २
238 सुश्मिन खोलने का राज़ जान लो, तो हो गया भजन – २
239 सुश्मिन सम करना आ गया, तो हो गया भजन – २
240 स्वांसा को सम कर दिया, तो हो गया भजन – २
241 स्वांसा में सब्द बस गया, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–13)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

242 सुरति निरति स्वांसा में लीन जान लो, तो हो गया भजन – २
243 सुरति निरति मिल आत्म किया, तो हो गया भजन – २
244 सुरत कमल में गुरू पा लिया, तो हो गया भजन – २
245 सुरत कमल में सतगुरू संग पा लिया, तो हो गया भजन – २
246 सुरति से गुरू के हो गये, तो हो गया भजन – २
247 पारस सुरति का भेद पा लिया, तो हो गया भजन – २
248 स्वांसा में सिमरन करना आ गया, तो हो गया भजन – २
249 निरति को स्वांसा में डालना आ गया, तो हो गया भजन – २
250 निरति ही चेतन प्राण है ये जान लो, तो हो गया भजन – 2
251 निरति ही जीवन मूल है ये जान लो, तो हो गया भजन – २
252 योगी यति भी विदेह दात पा ले, तो हो गया भजन – २
253 स्वांसा संग सब्द सिमरन करना आ गया, तो हो गया भजन – २
254 सब्द ही निरति सुरति मेल करे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
255 निरति सुरति के मेल से आत्म बने ये जान लो, तो हो गया भजन – २

256 मूल सब्द ही आत्मिक करे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
257 बिन आत्मिक हुऐ कोई ना तरे ये जाल लो, तो हो गया भजन – २
258 निरति ही सत्त सुरति चेतन ये जान लो, तो हो गया भजन – २
259 सातों सुरति मिल मूल सुरति बने ये जान लो, तो हो गया भजन – २
260 मूल सुरति ही भव पार करे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
261 मूल सुरति ही सुरत कमल ले चले ये जान लो, तो हो गया भजन–२

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–14)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

262 मूल सुरति ही सतगुरू दरस करे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
263 मूल सुरति ही आत्म हंसा करे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
264 मूल सुरति सतगुरू संग सतलोक जाये ये जान लो, तो हो गया भजन – २
265 सतगुरू कृपा सूं मूल सुरति बने ये जान लो, तो हो गया भजन – २
266 बिन सतगुरू मेहर कोई ना तरे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
267 सतगुरू कृपा से ही साधक तरे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
268 सतगुरू ही तारणहार हैं ये जान लो, तो हो गया भजन – २
269 सतगुरू ही मन माया से मुक्त करें ये जान लो, तो हो गया भजन – २
270 बिन सतगुरू माया तजि ना जाये ये जान लो, तो हो गया भजन – २

271 सतगुरू दरस ही सहज करे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
272 बिन सतगुरू जीव कबहु ना तरे ये जान लो, तो हो गया भजन – २
273 सतगुरू भक्ति सहज मार्ग है ये जान लो, तो हो गया भजन – २
274 जग तज सतगुरू सुरति चित्त लाई, तो हो गया भजन – २
275 सतगुरू सुरति मोक्ष पथ ले जाई, तो हो गया भजन – २
276 सतगुरू भक्ति सूं आत्म हंसा बने ये जान लो, तो हो गया भजन – २
277 सतगुरू संग साधक निजघर अमरपुर जाईं, तो हो गया भजन – २
278 सुरति ही स्मृति जान लो, तो हो गया भजन – २
279 निज को भूल जाओ, तो हो गया भजन – २
280 मृत्यु से मुक्त होने का भेद जान लो, तो हो गया भजन – २
281 उड़ती हुई माटि को जान लो, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

सहज भक्ति त्रिस्वा (भाग–15)

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

282 तन का ख़ाक में मिलना जान लो, तो हो गया भजन – २
283 अंदर में पौचा लगाना आ गया, तो हो गया भजन – २
284 अंदर निर्मल हो गया, तो हो गया भजन – २
285 सतगुरू सतपुरूष जान लो, तो हो गया भजन – २
286 जो साहिब हैं वोहि 'मैं' हूं जान लो, तो हो गया भजन – २
287 बूंद में सिंधु समा गया, तो हो गया भजन – २
288 सतगुरू में ईक मिक हो गये, तो हो गया भजन – २
289 साहिबन नाम चौथा राम जान लो, तो हो गया भजन – २
290 सतगुरू दयाल तो साहिब दयाल जान लो, तो हो गया भजन – २

291 तीनों मिल त्रिधारा बने, तो हो गया भजन – २
292 झील समान शांत हो गये, तो हो गया भजन – २
293 रूप खो जाये अरूप प्रकटाऐ, तो हो गया भजन – २
294 सतगुरू जाये साहिबन प्रकटाऐ, तो हो गया भजन – २
295 सतगुरू का जाना और साहिबन आना हो, तो हो गया भजन – २
296 साहिबन रूप सभी को जान लो, तो हो गया भजन – २
297 निर्लम्भ राम को जान लो, तो हो गया भजन – २
298 छेः तन से पार होना आ गया, तो हो गया भजन – २
299 जब हंस रूप पा लिया, तो हो गया भजन – २
300 हर हंसा संग ७१ पीढ़ी तरे जान लो, तो हो गया भजन – २
301 सत में सत समा गया, तो हो गया भजन – २

आदत बुरी सुधार लो, तो हो गया भजन – २

–0–

सभी जगत वासियों से कर बद्ध प्रार्थना

हे प्यारे हंसाथियो, आओ हम सब मिल कर सहज सत्यमार्ग के पूर्ण संत सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी की शरणी चलें और इस अंतहीन आवागमण/जन्म मरन के चक्कर से मुक्त होकर अपने इस मानव जीवन के अवसर को व्यर्थ ना गंवायें तथा इस दुर्लभ व अनमोल मानव जीवन को सार्थक करें। क्योंकि ये काल जाल के क्रूर बंधन से मुक्त होने का मानव देह सु–अवसर अत्यधिक कष्टों और वेदनाओं के पश्चात हम्हें प्राप्त होता है तथा मोक्ष अर्थात आवागमण से मुक्ति केवल इस मानव देह में ही संभव है।

है ईच्छा देवताओं की, हम भी नर जन्म पायें।
ईक हम हैं, जो अनमोल जीवन व्यर्थ गवायें ।।

मोह माया के बंधन तोड़ो, 'मै' 'मेरी' के अहम को छोड़ो।
लाखों जन्म व्यर्थ गंवायें, अब तो 'वे नाम' संग नाता जोड़ो।।

सार सब्द विदेह सर्वोपरि, जब कोई पावे दात।
'वे नाम' कहे काल सूं छूटे, शेष अब ना रहे बात।।

'वे नाम' ओढ़ी प्रेम चदरिया, हर थां प्रेम ही छाया।
हर किसी को प्रेम वो बांटें, अब कोई ना रहा पराया।।

बलिहारी जाऊँ सतगुरू अपने, जिन दीनी सार सुरति सतरंग।
जित देखूं प्रेम रंग छाया, सतपुरूष ही हैं प्रीत प्रेम का रंग।।

सतगुरू सत्तनाम

सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी

ईति श्री